Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पशुओं का रोग दूर करने के लिये

उत्तरार्ध असली हीरांभा

१२ भाग

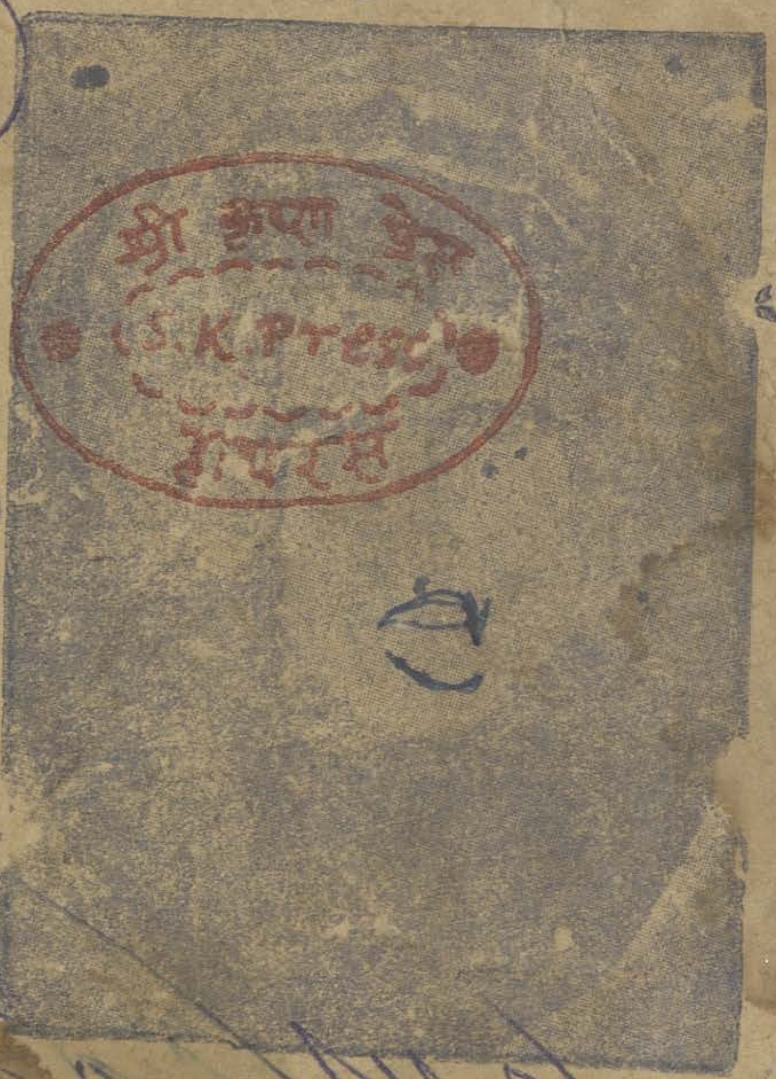

फोटो लेखक—ठा० गजाधरसिंह वर्मा कवेरपुर।

मु० प्र०—बा० पूरेलाल गुप्त, श्रीकृष्ण प्रेस हापुड़।

सर्वाधिकार प्रकाशक को है।

मू० १)२०

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पशुओं का रोग दूर करने के लिए

असली हीर राँझा

اصلی ہیر رانجھا ۔ گرچند سنگھ ورما

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अल्लादीन की सगाई उर्फ रांझे के पिता की सगाई

❀ रंगमगढ़ की लड़ाई ❀

दोहा—जय अम्बे जगदम्बिका, नल की करो सहाय।
बद्री कवि अज्ञान को, देवहु ज्ञान बताय॥

प्रथम मनाऊं गुरु अपने को रे रवि मेरो अल्ला ही जाने
जिन चौदहु विद्या रे दई बताई।
दूजे मनावैं माता पिता को रे रवि मेरो।
पालन कीयो रे खुशी मनाई।
तीजे मनाऊं तीन देव को रे रवि मेरो
ब्रह्मा विष्णु रे शंकर कहलाई।
चौथे सुमिरे चार कुमर को रे रवि
सनक सनन्दन रे चारो भाई।
कंठ पे बैंठो कंठेश्वरी रे रवि मेरो अल्ला मेरो ही जाने
जिन्हा पे बैंठौ रे शारद माई
बायें भुजापे भैंरो बैठ जावरे रवि मेरो अल्ला मेरोही जाने
दाहिने भुजा पे रे हनुमत बलदाई।
जो २ भूलो मैं गैवे मेंरे रवि मेरो अल्ला मेरो ही जाने
हमको देवो रे तुरत बताई।
सात जन्म भये रांझे हीर के रे
सांची २ तुमको रे देउ सुनाई।
पहले जन्ममें हिरनाहिरनी भयेरे रविमेरोअल्ला मेरोहीजाने
जिनकी प्रीति रे कही न जाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दूसरे जन्म में चकवा चकई भये रे रवि मेरो अल्ला०
रेन बसेरो रे करते नाई।
तीसरे जन्म में सुवा सुवनियां भये रे रवि मेरो*
प्रेम में दीन्हो रे जन्म गमाई।
चौथे जन्म में हरि सारंगा भई रे
सदावृक्ष भयो रे रांझो बलदाई।
पचमे जन्म फरियाद रांझो भयोरे
शीरी भई है रे होर बाई।
छटमे मंजनू रांझो भयो है रे
हरि भई है रे लैला कहलाई।
सतमे जन्म में राँझे हरि भये रे
कंडा भस्म से रे जन्म कहाई।
भोग विषय से बचे सदा रहे रे रवि मेरो अल्ला मेरो ही
इनकी कहानी रे सुनो चितलाई।
रंगमगढ़ में पठान इक भयो रे रवि मेरो अल्ला मेरो०
अल्लादीन है रे नाम कहाई।
निर्धन बहुत दुखी रहे घर मेरे
भई न ताको रे कहूं सगाई।
शूर वीर बलवान बहुत है रे
तनिक न मनमें रे खौफ न खाई
शूरवीर बलवान बहुत है रे रवि मेरो अल्ला मेरो

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

तनिक न मन में रे खौफ न खाई।
कद्रमगढ़ में उसी वक्त में रे रवि मेरो अल्ला मेरो ही
राजा भयो है रे अति बलदाई।
ताके घर में कन्या जन्मी रे रवि मेरो अल्ला मेरो ही
प्रिया नाम है रे घणो हरषाई।
चीते कमर नैन मृगनैनी रे रवि मेरो अल्ला मेरो ही
शोभा ताकी रे कही न जाई।
हंस चाल और कोयल बैनी रे रवि मेरो अल्ला मेरो
सुन २ भैया रे मन हरषाई।
गाल गुलाबी ओठ लाल है रे रवि मेरो अल्ला मेरो ही
पदम पांव में रे अधिक सुहाई।
शादी लायक कन्या हुई गई रे रवि मेरो अल्ला मेरो
देख २ रानी रे मन सकुचाई।
मन में सोच समझ के रे रवि मेरो अल्ला मेरो ही
बाँदी लीन्ही रे जल्द बुलाई।
हाथ भी जोरू करू तेरी बीनती रे रवि मेरो अल्ला मेरो
अरज गरीबी रे सुने क्यों नाई।
चौ जोरे हाथ करै चौ बीनती रे रवि मेरो अल्ला मेरो
अरज गरीबी रे कहै क्यों नाई।
कौन सौ काम अटक गयो रे सुन रानी मेरी
हमको देवो रे हुकम सुनाई

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इतनी सुनके रानी कह रही रे रवि
बांदी सुनले रे कान लगाई ।
बंगला में जल्दी चलो जाव तुम रे रवि
राजा को लाओ रे जल्द बुलाई ।
इतनी सुनके बांदी चल भई रे रवि
जाय झलूमी रे बंगला के माहीं ।
हाथ भी जोरू करूं तेरी बीनती रे सुन राजा मेरे
अरज गरीबी रे सुने के नाई ।
चौ जोरे हाथ करैं चौ बीनती र रवि
अरज गरीबी रे कहै चौ नहीं ।
इतनी सुनके बांदी कह रही रे रवि
तुमको रानी रे रही बुलाई ।
जाय पहुँचेरे महलन माही ।
इतन सुनके राजा चल भयो रे रवि मेरो ही जाने
महलन पहूंचो रे तुरतहि जाई ।
देखके राजा खुश भई रानी रे रवि मेरो ही जाने
पलका दीन्हों रे तुरत नवाई ।
हाथ भी जोरू करूं तेरी बीनती रे सुन साजन मोरे
अरज गरीबी रे सुने चौ नाही ।
चौ जोरे हाथ करैं चौ बीनती रे सुन रानी मोरी
अरज गरीबी रे कहै चौ नांही ।
ब्याह के लायक बेटी हो गई रे मन साजन मेरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जाकी नन्दी रे करौ सगाई।
कोई शूर बहादुर होवे रे सुन साजन मेरे।
बाको टीका रे देउ पठाई।
रानी ने जब ऐसी कहि दई रे रवि मेरो ही जाने
तुरतहि राजा रे कहि समझाई।
ऐसो वर नहिं कोई दुनियाँ में रे सुन रानी मेरी
चहुँदिश लीन्हों रे पता लगाई।
मेरो प्रन जो पूरो कर देय रे सुन रानी मेरी
बेटी व्याह के रे घर लै जाई।
चंगुल चिड़िया को बध कर के रे सुन रानी मेरी
द्वार पै हाथी रे देय नशाई।
भट्ठी के ऊपर धरी करेहिया रे सुन रानी मेरी
गरम तेल है रे खूब खौलाई।
तापैं पाव धरैं दौड़ अपने रे सुन रानी मेरी
मछली मारे रे स्वर्ग उड़ाई।
तब फिर कपड़ा खोल के अपने रे सुन रानी मेरी
गरम तेल में रे लेय नहाई।
नगर के ढिग में नदी बहत है रे सुन रानी मेरी
दल दल पर है रे उतर न पाई।
बबुरी बन को काट गिराय देय रे सुन रानी मेरी
बन के दाने रे देय न खाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मेरी समझ में रंगम गढ़ में रे सुन रानी मेरी
महेशसिंह है रे राजा कहलाई।
बड़ो बहादुर शूरवीर है रे सुन रानी मेरी
वंश है जाको रे चौहान कहाई।
बेटी लायक वही कुमर है रे सुन रानी मेरी
कहौ तौ टीका रे देउ पठाई।
निर्धन के घर करौ न शादी रे सुन राजा मेरे
दुख बेटी पावे रे वहाँ पै जाई।
मेरी कही मान लेउ साजन रे सुन साजन मेरे
ऐसे घर में रे नहिं ना तो चलाई।
इतनी सुनिके राजा कह रे रवि मेरो ही जाने
सुन मेरी प्यारी रे मन चितलाई।
तेरे मन में जैसी भवै रे सुन रानी मेरी
तहाँ को टीका रे देउ पठाई।
कौन सो राजा दुनियां में रे सुन रानी मेरी
जो बबुरी बन को रे देय कटाई।
इतनी सुनके रानी कहि रे रवि मेरी ही जाने
करौ मैं बिनती रे सुन चितलाई।
भट्ट गढ़ मैं राजा सुनो है रे सुन साजन मेरे
सूरजवंशी रे कुल कहलाई।
गढ़ को राजा सबलसिंह है रे सुन साजन मेरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वाको बेटा रे देऊ बताई।
बालम बात हमारी मानो रे सुन साजन मेरे
टीका वाको रे देऊ पठाई।
बेटी लायक वही कुमर है रे सुन साजन मेरे
जाकी कीरत रे जग में छाई।
बबुरीबन को जद कटाय देय रे सुन साजन मेरे
दाने बिखरे रे देय नसाई।
रानी की सुन बातें ऐसी रे रवि मेरो ही जाने
राजा के मन में रे गई भाई।
पावो जल्दी हम भिज वैहे रे सुन रानी मेरी
नाई ब्राह्मण रे दिहै पठाई।
आयके दाने मार गिराय देय रे।
बबुरी बन को रे देय नसाई।
सजके बरायत संग में आवो रे रवि मेरो ही जाने
शर्तें पूरी रे कर देय आई।
मेरी बिटिया के संग तुरतहि रे रवि मेरो ही जाने
सातो भांवर रे लेय डराई।
चहु दिश चिट्ठी भिजबा मैं रे सुन रानी मेरी
जाने को वरि है रे कन्या आई।
जाके तन में ताकत होवे रे सुन रानी मेरी
कन्या ब्याह के रे घर लै जाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

राजा की सुन बातें ऐसी रे रवि मेंरी ही जाने
रानी मन में रे रही हरषाई।
चहूं ओर को टीका भेज देउ रे सुन साजन मेरे
हमरे मन में रे गई समाई।
भोर होत ही पाती भेज देउ रे सुन साजन मेरे
संग में टीका रे देउ पठाई।
मेरी कन्या को बोही वीरहै रे सुन साजन मेरे
जाके तन में रे बल अधिकाई।
सिगरो हाल लिखो चिठिया में रे सुन साजन मेरे
दाने के संग में रे होय लड़ाई।
जाके संग में जूरी लग रही रे सुन साजन मेरे
बोही व्याह के रे घर ली जाई।
विधि की लिखी न मेटन हारो रे सुन राजन मेरे
होने हार है रे हुइ जाई।
इतनी सुनके राजा चल में रे रवि मेंरी ही जाने
तुरत कचेहरी रे गये आई।
सोने सिंहासन ऊपर बैंठ गये रे रवि मेरो ही जाने
तुरतहि खोजा रे लियो बुलाई।
बंगला में खोजा आय गयो रे रवि मेरो ही जाने
राजा को दीन्हो रे शीश झुकाई।
जोरू भी हाथ करू तेरी बीनती सुन साजन मेरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अरज गरीबी रे सुने के नाहीं।
चौ जोरे हाथ करें चौ बीनती सुन खोजा मेरे
अरज गरीबी रे कहे चौ नाहीं।
कौन सौ काम तुम्हारो अटको रे सुन राजन मेरे
हमको देवो रे हुकम सुनाई।
इतनी सुनके राजा कह रहे रे रवि मेरो ही जाने
खोजा सुनके रे कान लगाई।
मांगे ब्राह्मण को लै आवौ रे सुन खोजा मेरे
संग में लावौ रे मुरली नाई।
देर करन को काम नहीं है रे सुन खोजा मेरे
मेरे संमुख रे लरड बुलाई।
इतकी सुनके खोजा चल भयोरे रवि मेरो ही जाने
पंडित नाऊ रे लिमे बुलाई।
सिगरे मिलके सलाह कर रहे रे रवि मेरो ही जाने
छुट भैंयन को रे लियो हुलाई।
फिर व्याह की चरचा राजा ने रे रवि मेरो ही जाने
सब भैंयन से रे कही सुनाई।
व्याह के लायक कन्या हुइ गई रे सुन रवि मेरो ही जाने
सोच समझ के रे देउ बताई।
वर इक मैंने ढूंढ लियो रे सुन रवि मेरो ही जाने
कहौ वो टीका रे देउ पठाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दाने नगर को नाश करत है रे सुन रवि मेरो ही जाने
सबकी खटका रे मिट जाई।
राजा की सुन भैंयन रें रवि मेरो ही जाने
अपने मुख से रे कहै सुनाई।
चाल—नृपके बचन सुने जबु भैयन मुखसे बैन उचारें हैं।
मेरे नगर में दाने राआ मारी जुन्म गुजारे हैं॥
बूढ़े बाल जवान सब खाये छोड़े नहिं कोई बिचारे हैं।
देखौ राजा नगर घूमके घर २ लगे किवारे हैं।
दाने अत्याचार मचाय रहे चहुंदिश गांव उजारे हैं।
ऐसे वर को व्याह करो जो काटे संकट सारे हैं॥
पाती में लिखौ सोच २ बन बवुरी काज दुखारे हैं।
बद्री कवि कहै झूठ नहीं हम छनबज वारे हैं॥
भैंयन की सुन ऐसी सलाह है रे रवि मेरो ही जाने
कोरो कागज रे लियो मंगाई।
अपने हाथ में कलम लई है रे रवि मेरो ही जाने
लिख रहे पाती रें गुरु मनाई।
पाती में लिख दई सिद्ध श्री है रे रवि मेरो ही जाने
सारौ हाल है रे लिखत बनाई।
राजा तो लिखदियो कहमगद कोरें रवि मेरो ही जाने
कहमसिंह है रे नाम कहलाई।
दुखी दीन घर कन्या जन्मी रे रवि मेरो ही जाने।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पाती में वाकीं रे लिखी सचाई।
बोले गरीब पैं दया दिखैं हो रें रवि मेरो ही जाने
सुन आस लई है रे कीरत छाई।
मेरे धूरे के दाने मार देउ र रवि मेरो ही जाने
बबुरी बन को रे देउ कटाई।
जुंगल चिड़िया को बध करके रे रवि मेरो ही जाने
द्वारे पे हाथी रे देय नसाई।
भट्ठी के ऊपर धर करैहिया रे रवि मेरो ही जाने
धाम तेल है रे खूब खौलाई।
दाएँ पाँव धरे दोऊ अपने रे रवि मेरो ही जाने
उड़तो सोना रे मार गिराई।
फिर बख्तर खोल के अपने रे रवि मेरो ही जाने
गरम तेल में रे लेय नहाई।
गाँव के पास में नदी बहत है रें रवि मेरो ही जाने
दल दल परि है रे उतर न पाई।
नदी में नाके बहुत रहत हैं र रवि मेरो ही जाने
पकड़ मनुष को रे लेय खाई।
इतनी ताकत होय जो दिल में रे रवि मेरो ही जाने
तब तुम टीका रे लेउ चढ़ाई।
जो सब का मन कर न पावौ रे रवि मेरो ही जाने
माटी में इज्जत रे मिल जाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

लिख बन्द लिफाफा कर दियो रे रवि मेरो ही जाने
अपनी दीन्हीं रे मुहर लगाई ।
एक खत रंगमगद को दे दियो रे रवि मेरो ही जाने
दूजो मद्यमगद को रे दियो गहाई ।
पंडित नाऊ को खत दे दियो रे रवि मेरो ही जाने
सात २ होरा रे दिये गहाई ।
पंडित नाऊ दोनों चल भये रे रवि मेरो ही जाने
सोटा छतुरी रे लई उठाई ।
पंडित घोड़ा पै चढ़ गये रे रवि मेरो ही जाने
पाँय न चल सक्यो रे मुरली नाई ।
लाल २ चन्दन माथे में लगि रहो रे रवि मेरो ही जाने
गले में माला रे रही लटकाई ।
मलमल कुरता झिलमिल कर रहो रे रवि मेरो ही जाने
सिर पे पगड़ी रे रही फहराई ।
नाऊ गांजा पीवत जावै रे रवि मेरो ही जाने
फाँक तमाखू रे पंडित खाई ।
सूरज डूबे संझा हुई जाय रे रवि मेरो ही जाने
घोड़ी बांध के रे सब जाई ।
रोटी बनायके खावैं रात मेरे रे रवि मेरो ही जाने
बैठ नशा मे रे झांझ बजाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रात दिना की मंजिल कर रहे रे रवि मेरो ही जाने
कहूं बैठ के रे नहिं सस्ताई।
सात दिना और चार पहर में रे रवि मेरो ही जाने
भद्रमगढ़ की रे सीम दवाई।
भद्रमगढ़ की शोभा देख २ रे रवि मेरो ही जाने
खुश होय मन मेरे अति अधिकाई।
ऊंचो पहाड़ सो जिला देख रहो रे रवि मेरो ही जाने
चहुँदिश जाके रे नहर खुदाई।
बुर्ज २ पै तोपे लग रही रे रवि मेरो हो जाने
देखके दुश्मन डर र जाई।
नाऊ पुरोहित किला देख के रे रवि मेरो ही गाने
अपने दीन्हों र वाज बढ़ाई।
धीर २ चलिके पंडित नाऊ र रवि मरो ही जाने
किला द्वार पेर गये आई।
चांदी को फाटक लग रहो रे रवि मेरो ही जाने
देख के मन में रे अति हरषाई।
हीरा पन्ना मोती जड़ रहे र रवि मेरो हो जाने
बिच २ मणिया २ अति चमकाई।
कहुँ नलिम पुखराज जड़े हैं र रवि मेरो ही जाने
ढोल मृदंग मजीरा बज रहे रे रवि मेरो ही जाने
बीच में रंडी नांच रे दिखाई।
बगला ये पंडित नाऊ जायके रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

राजा को दोम्हों रे शीश झुकाई।
पंडित चिट्ठी तुरत निकारके रे रवि मेरो ही जाने
राजा के हाथ में रे दीन्ही जाई।
सवलसिंह ने पाती लैं लई रे रवि मेरो ही जाने
पढ़ने लागो रे मन हरषाई।
श्री गनेश औ लक्ष्मी लिख रही रे रवि मेरो ही जाने
आगे लिख रही रे दुर्गे माई।
मेरी बेटी संग ब्याह करे जो कोई रे रवि मेरो ही जाने
बबुरीबन को रे देय कटाई।
दाने के संग में लड़े लड़ाई रे रवि मेरो ही जाने
है बहुत भयंकर रे अति बलदाई।
घुंगल चिड़िया को बध करके रे रवि मेरो ही जाने
जो बड़े २ मानुष र लेय खाई।
मस्ता हाथी द्वार पे झूमे रे रवि मेरो ही जाने
सूंड से सोंकर रे देय घुमाई।
कोई ताको मार गिराय देय रे रवि मेरो ही जाने
सातो भावर रे लेय फिराई।
मट्ठी के ऊपर धरी करेहिया रे रवि मेरो ही जाने
गरम तेल है रे खूब खौलाई।
तीपे पाँव धरे दोऊ अपने रे रवि मेरो ही जाने
उड़ती मैना रे देय गिराई।
नगर के ढिग में नदी बहत है रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दल दल परि है रे उतर न पाई ।
नदी में नाके बहुत रहत हैं रे रवि मेरो ही जाने
पकर २ मानुष को रे लेय खाई ।
जो तुम काम करो न इतने रे रवि मेरो ही जाने
कंभी न होवे रे यहां सगाई ।
लड़े लडाई जीत न पैं हो रे रवि मेरो ही जाने
पहले तुमको रे रहे बताई ।
जो प्रन पूरो होय न हमरो रे रवि मेरो ही जाने
कन्या कुमारी रे रह जाई ।
पढ़के पाती राजी ने जन्दी रे रवि मेरो ही जाने
अपने भैंया रे लिये बुलाई ।
कद्दमगढ़ से पाती पाई गई रे सुन भैया मेरे
जामें कन्या की रे लिखो सगाई ।
कैसे शर्तें पूरी हुई ये रे सुन भैंया मेरे
सो तुम हमको रे देउ बताई ।
कोई फिकर न मन में करि हो रे सुन भैया मेरे
सब बिधि तुम्हरी रे करौ सहाई ।
राजा ने सुन भोजन को र रवि मेरो ही जाने
मन में भयो है रे बहु हरषाई ।
टीका लियो चढ़ाय लाज को र रवि मेरो ही जाने
सब नर नारी रें खुशी मनाई ।
भोजन दियो कराय भू। ने रे रवि मेरो ही जाने
नेगी दीन्हे रे विदा कराई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

❀ दूसरा भाग राझे का जन्म ❀

उर्फ

* तख्त हजारे जाना *

दोहा–चंडे मुंड सहारनी, खप्पर रहो विराज।
बद्री कवि निज दासकी, रख दंगल में लाज॥

पहले सुमिरो वंशी वारे को रे रवि मेरो ही जाने
द्रुपद सुता कीं रे लाज बचाई।
दूसरे सुमिरौं रामचन्द्र को रे रवि मेरो ही जाने
जिन सिला से नारी रे दई बनाई।
तिसरे सुमिरे श्री दुर्गा को रे रवि मेरो ही जाने
राजा नल को रे करी सहाई।
नाहर पै चढ़ मैया रे रवि मेरो ही जाने
लखिया बन में रे खाने न साई।
चौथे सुमिरे महावीर को रे रवि मेरो ही जाने
बूटी लाय के रे लखन जियाई।
सिगरे देव मेरी रक्षा करि हो रे रवि मैंरो ही जाने
भूले अक्षर रें दिहौ बताई।
राँझे को जन्म गाय रहे रे रवि मेरो हीं जाने
सज्जन सुनलेउ रे कान लगाई।
भद्रमगढ से नेगी चल भये रे रवि मेरो ही जाने
रंगम गढ़ में गये आई।
नाऊ पंडित बीच कचेहरी में रे रवि मेरो ही जाने
रहे राजा को रे शीश नवाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पाती काढ़ के पंडित जी ने रे रवि मेरो ही जाने
तुरत महेश को रे दई पकराई।
महेशसिंह ने पाती खोल के रे रवि मेरो ही जाने
बांचन लागो रे मन हरषाई।
पाती को पढ़ हाल भूप ने रे रवि मेरो ही जाने
रहे आंखिन से रे नीर बहाई।
कही चिन्लाय महेश ने रे रवि मेरो ही जाने
ऐसी शादी रे चूल्हे में जाई।
जामें मौत फंसेगी छिन में रे रवि मेरो ही जाने
मरके ब्याह तो रे नहीं कराई।
मन में सोच महेशसिंह ने रे सुन रवि मेरो ही जाने
करी प्रतिज्ञा रे हाथ उठाई।
घर में आई मांग न छुड़ि है रे रवि मेरो ही जाने
चाहे ख्वारी रे होय अधिकाई।
खोजा एक बुलाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
घर में दोन्हीं रे खबर पठाई।
गजनी खाँ मन खुश हुइ के रे रवि मेरो ही जाने
अपनो डीका रे लियो चढ़ाई।
रंगमगढ़ से नेगी चल भये रे रवि मेरो ही जाने
कद्दमगढ़ में रे पहुंचे जाई।
कद्दमसिंह के पास जायके रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सारी खबरे रे दई सुनाई ।
यहां की बात यहीं छोड़ देउ रे रनि मेरो ही जाने
अब आगे की रे देउ सुनाई ।
व्याह की त्यारी भट्टमगढ़में हुइरही रे रवि मेरो ही जाने
सबलसिंह ने रें फौजे सजवाई ।
दल के भीतर डंका बज रहो रे रवि मेरो ही जाने
सुन २ ज्वान भी रे उठे भैंगई ।
बख्तर पहिरन ज्वान लगे हैं रे रवि मेरो ही जाने
टोप झलकिया रे माथे सुहाई ।
भाला बरछी लई तलवारे रें रवि मेरो ही जाने
कोई तमन्चा रें लियो उठाई ।
सज २ सूर सवार भये हैं रें रवि मेरो ही जाने
चरखिन पै तोप रे दई चढ़ाई ।
हाथी घोड़ा पे भये सवार हैं रे रवि मेरो ही जाने
कोई २ ऊंट पे रे चढ़ जाई ।
रथ खगापै कोई सवार भयो रे रवि मेरो ही जाने
कोई २ पैंदल रे रहो जाई ।
लहर—भट्टमगढ़े से चले बराती कट्टमगढ़की सुध लगाई रे
बहुत दूरतक सेना जाय रही गिनती गिनी न जाई रे
ईंट फूटके रोड़ा हुइ गयो रोड़ा रगड़धूरि हुइ जाई रे
धूर उड़ाती आसमान में सूरज रहे धुन्ध में छाई रे
आगे वाले पानी पी रहे गंवला पीछनको रह जाई रे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रात दिना की मंजिल करके नदिया तब नहिचाई रे
फौज रोक के नदी किनारे तम्बू तब लगवाई रे
बबुरीबन में शेर बरज रहे सुनके दिल दहलाई रे
रंगमगढ़ को ख्याल आय गयो रे रवि मेरो ही जाने
साँची २ तुमको रे देउ सुनाई।
पाँच लाख पन्द्रह सौ संग में रे रवि मेरो ही जाने
सज २ फौजें रे चली हरषाई।
खूनी मछना और इकदन्ता रे रवि मेरो ही जाने
बन कजरी के हाथी रे लिये सजाई।
घोड़ी हिरौजी औ दरयाई रे रवि मेरो ही जाने
कच्छी मच्छी पे रे जीन धराई।
तुर्की अरबक लक्खा सज गये रे रवि मेरो ही जाने
जो तीन पाँव से रे रहे हन्नाई।
बीकानेरी ऊंट सजत हैं रें रवि मेरो ही जाने
धरी कठलानी रे खूब जमाई।
पैदल पल्टन सेना सज गई र रवि मेरो ही जाने
हाथ में लीन्ही रे कृपान उठाई।
कोई २ घोड़ा पै चढ़ गयो रे रवि मेरो ही जाने
कोई २ हाथी पे रे चढ़ जाई।
रथ और रब्बा सजी पालकी रे रवि मेरो ही जाने
चरखिन पै रे तोप धराई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

ल०—महेशचंद के माथे ऊपर मालिन मौररख दियौजाईरे
बटुक जामा लइ मलमल को दर्जी रहो पहराई रे
करमें कंगन बांध लियो है जामें छला दिखाई रे
मंड़ये में वरना पैं तेल चढ़ रहो गावैं गीत लुग ई रे
नागिन बैंठ बसौ द्वार पे कुवां दियो पुजवाई रे
हरदसुरैया को नेगकर दियो पालकी कहारनलई उठाई रे
पालकी कंधा पे धरी कहारन सोलह परे दिखाई रे
फौज चलन को हुक्म भयो है डंका तब बजवाई रे
सात दिना की मंजल करके नदिया तट पै आई रे
देखे बगती भद्रमगढ़ के नभ में धूर उड़ाई रे
आपस में सब जिकर करत है प्रलय कहां से आई रे
सर २ सर २ करे सराटो कहुँ ओर रहो कई रे
महेशचंद ने नदी के तट पे तम्बू तब तनवाई रे
सबलसिंह जो भद्रमगढ़ को दीन्हो हुक्म सुनाई रे
सिबरे शूर सजो सब छिन में रे रवि मेरो ही जाने
हाथी नदी में रे देउ बढ़ाई।
नदी पार सब जल्दी उतरो रे सुनिये सरदारो सरदारो
मनमें दहशत रे देउ बिसराई।
बबुरीवन को काट गिराय देउ रे सुनिये सरदारो सरदारो
जत नो देगी रे काहे लगाई।
दल के भीतर डंका बज रहो रे रवि मेरो ही जाने
सुन सुन जोधा रे सज जाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

तेग तमन्चा हाथ में लै लियो रे रवि मेरो ही जाने
भाला बरछी रे लई उठई।
नदी में गड़बड़ मच गयो रे रवि मेरो ही जाने
अनगिनतिन नाके रे गये आई।
बारामासी—नाके लम्बे और चकले एक २ नाका पकड़
बीर को बीच २ निगले ॥ नाके ने करी सफाई है।
सबलसिंह की सेना अब रह गई तिहाई है।
चले न कोई हिकमत है। फौज को हुइ गयो नास
भूप ठोक रहो किस्मत है। सबलसिंहकी फौजपुकारे।
लड़का खाय लियो है तेरो अब नहीं लौट रे।
नाके न करौं करो झपेटा है। शादी करैं कौन की
राजा जिन्दा रहो न बेटा है ॥
रंगत-सबलसिंह तब इतनी सुनके रे रवि मेरो ही जाने
रोय रहो रे आँसू बहई।
सबलसिंह कहलो बेटा हतो हमारो रे रवि मेरो ही जाने
कहुम गढ में रे खप जाई।
रंगमगढ़ के ज्वान चले हैं रे रवि मेरो ही जाने
आगे दल दल रे परो दिखाई।
हाथी घोड़ा ऊंट फसे हैं रे रवि मेरे मेरो ही जाने
पानी में नाके रे रहे उतराई।
आगे फौज न तनिको बढ़ रही रे रवि मेरो ही जाने
देख देख तमासा रे महेश घबराई।
आंखी दोनों बन्द करी हैं रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वीर को सुमिरै रे नदी के मांही।
इतनी आवाज तो रोजा सर में सुन लई रे रवि मेरो ही
धुरमक्कै से रे अजमत छाई।
नदी को दल दल बन्द भयो है रे रवि मेरो ही जाने
सिगर गये हैं रे बन आई।
रंथमगढ़ के वीर बहादुर है रे रवि मेरो ही जाने
बन काटन लागे रे वीर हरषाई।
बन को चौरस खेत बनाय दियो रे रवि मेरो ही जाने
हल चल दाने में रे मच जाई।
अनगिनतिन दाने आय गये रे रवि मेरो ही जाने
सिगरो लश्कर रे गयो घबराई।
दाने के दल में वीर पहुँच गये रे रवि मेरो ही जाने
कर २ हिम्मत रे बढ़ जाई।
लहर-वीरन ने जब हमला कीन्हों दाने खायगये शंका रे
दामेन से कर जंग रहे हैं क्षत्रिन के सब पट्ठा रे
दानेन के शिर पकर २ के फेंके जैसे गट्ठा रे
हिन्दू रन में लड़े सामने संग में मुस्लिम छट्ठा रे
कोई नहीं पहचानें किसी को तेग चले इकट्ठा रे
काट २ दानेन को वीरन जमी में लगायो चट्टा रे
मुंह फैलाये देख दानेन को हंसा करै सब ठट्ठा रे
बद्री कवि कहे कनवज वारे दूध पियो चाहे मट्ठा रे
बबुरी बन के दाने मार दिये रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मीर रहे हैं रे मन हरषाई।
बबुरीबन सब काट के वीरन रे रवि मेरो ही जाने
खबर भूप पैं रे दई पठवाई।
कड्डमपढ़ में खोजा जाय केरे रवि मेरो ही जाने
हाल सुनायो रे सब जाई।
कहा बराती ठहरे राजा रे सुन राजा मेरे
जल्दी जनवासो रे देउ बताई।
चुंगल चिड़िया तुरत पठाय दई रे रवि मेरो ही जाने
द्वारे पे हाथी रें दियो छुड़ाई।
चुंगल चिड़िया गई फौजन में र रवि मेरो ही जाने
ज्वान पकर के रे रही खाई।
सेना खात महेश ने देख लियो रें रवि मेरो ही जाने
अब सेना जाकी रे रही तिहाई।
ठाड़ो र सुमिरे पीर को अपने रवि मेरो ही जाने
अजमत भेजो रे मेरे ताईं।
जोरूं हाथ करूं तेरी वीनती रे रवि मेरो ही जाने
अरज गरीबी रे सुने के नाहीं।
यों जोरे हाथ करें यो बीनत सुन राजा मेरे
अरज गरीबी रे कहै यों नाहीं।
चुंगल चिड़िया सेना खाय रही रे रवि मेरो ही जाने
मेरी सेना रे बची तिहाई।
किस विधि लडैं लड़ाई सुन बीरा मेरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

चिड़िया से हमरे जीत न पाई।
इतनी आवाज तो रोजा सर में सुन लई रे रवि मेरो ही
धुरमक्के से रे अजमत छाई।
धनुष बान लै खड़ो भयो रे रवि मेरो ही जाने
चुंगल चिड़िया रे सम्मुख आई।
खेच कमान कान तक रे रवि मेरो ही जाने
तीर छोड़ दियो रे चुंगल मर जाई।
चुंगल मरते सेना बद गई र रवि मेरो ही जाने
द्वारे गयो है रे महेश हरषाई।
खूनी हाथी द्वारे घूम रहो रे रवि मेरो ही जाने
गजनी देख के रे गयो घबराई।
अपने पीर को सुमिरन लाग्यो रे रवि मेरो ही जाने
अजमत भेजो रे हमरे ताई।
हाथ भी जोरूं करूं तेरो बीदती सुन बाबा मेरे
अरज गरीबी रे सुने चौ नाहीं।
चौ जोरे हाथ करै ची बीनती सुन राजा मेरे
अरज गरीबी रे कहै चौ नाहीं।
द्वारे पे हाथी घूम रहो रे सुन बाबा मेर
प्राण वचन के रे है नाहीं।
किस विध हाथी पछारे द्वार पे रे सुन बाबा मेरे
हाथी से हमरे जीत न पाई।
इतनी आवाज तो रोजा सर में सुनलइ रे रवि मेरो ही

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

धुरमक्के से रे अजमत छाई।
पहिर जांबिया गजनी खड़ो भयो रे रवि मेरो ही जाने
हाथ में माला रे लियो उठाई।
हिम्मत करके हाथी ढिंग गयो रे रवि मेरो ही जाने
मनमें दहशत रे नहि खाई।
माला मारो हाथी के पेट में रे रवि मेरो ही जाने
माला हाथी रे गयो बचाई।
माला बीच से टूट गयो रे रवि मेरो ही जाने
गजनी मनमें रे सोचै अधिकाई।
मनमें सुमिर अली को रे रवि मेरो ही जाने
हाथी के संमुख रे गयो आई।
हाथी के दोनों दांत पकड कें रे रवि मेरो ही जाने
जमीं में दीन्हों रे जन्द गिराई।
हाथी मार जमी में डार दियो रे रवि मेरो ही जाने
ठाड़े देखे रे ग्रद लुगाई।
गजनीखां तब आगे चलके रे रवि मेरो ही जाने
भटिया के ढिंग रे पहुंचो जाई।
भटिया के नीचे लकड़ी जल रही रे रवि मेरो ही जाने
धरो कगाह में रे तेल खौलाई।
खौलत तेल गजनी ने देख लियो रे रवि मेरो ही जाने
दिल में दहसत रे गयो खाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अकिल काम नहिं कोई दैं रहो रे रवि मेरो ही जाने
सोचे मन में रे बहु अधिकाई।
कैसे कराह में पांव हम धरके रे रवि मेरो ही जाने
कैसे मछली रे मारे जई।
ठाड़े २ सोचत अपने मन में रे रवि मेरी ही जाने
अकिल ठिकाने रे रहि जाई।
अपने पीर को सुमिरन लागो रे रवि मेरो ही जाने
अजमत मेजो रे हमरे ताही।
हाथ भी जोरू करूं तेरी बीनती रे सुन बाबा मेरे
अरज गरीबो रे सुनो चौ नाहीं।
पीर के चौ जोरे हाथ करे चौ बीनती सुन राजा मेरे
अरज गरीबी रे कहै चौ नाहीं।
भटिया के भीतर लकड़ी जल रही रे रवि मेरो ही जाने
धरो कराह है रे तेल खौलाई।
कैसे कराह में पाँव दोउ धर के रे सुन बाबा मेरे
नाचत मीना रे मारे जाई।
इतनी अवाजतो रोजा सरमें सुन लई रे रवि मेरो ही जाने
धुरमक्के से रे अजमम छाई।
खुदा रसूल को सुमिरन करके रे रवि मेरो ही जाने
भटिया के ढिग में रे गयो आई।
कड़ाह पै पांव दोउ धरके रे रवि मेरो ही जाने
ठाड़ो हुइगौ रे मन हरषाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

गर्म कराह सब शीतल पर गयो रे रवि मेरो ही जाने
आंच बदन में रें नहिं आई।
खेंच कमान कान तक रे रवि मेंरो ही जाने
बान मार दियो रे मीन के माहीं।
मछली के पेट में तीर लाग गयो रे रवि मेंरो ही जाने
छिनमें मरके रे जमी पै आई।
अपने तनके कपड़ा उतार के रे रवि मेरो ही जाने
कूदो कराह मेरें इकदम जाई।
परम तेल सब शीतल पर गयो रे रवि मेरो ही जाने
करो स्नान है रें डुबकी लगाई।
राजा रानी संमुख देख रहे रे रवि मेरो ही जाने
मन में ताजूब र भये अधिकाई।
मछली के मन करत किलोल है रे रवि मेरो ही जाने
सात डो डुबकी रे तुरत लगाई।
निकर कराह से ठाढो हुइ गयो रे रवि मेरो ही जाने
कपड़ा पहिरें रें झट हरषाई।

तर्ज-वार बार तोहि क्यो०

हरदोई जिला गांव उमरौली झब्बू मेरा भइया।
बन्देव की हम लड़की सुनलेउ सरस्वती है मैंया।
बन्देवा की हम लडकी सुनलेउ सरस्वती है मैया
ब्याही हम हैं माधौं नगर में दुर्गा मेरा भरतार
जोरके तुमसे कह यही जोजा सुनो हमार॥
एक बार तुम सेज आयके देउ मलबैंया डार।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मनमें पाप तनिक न सोचे कर रही जुल्म आपर।
तेरी सेज पै हम नहिं आवे काहे पड़ी पिछार॥
हमरी ओर ख्याल का जीजा मंशा कर देउ पूरी।
तुम बेगार न मनमें समझो पहले लेउ मजूरी॥
हसके सेजपे जल्दी आवो अबन करो अबार।
बड़ी निर्लज्ज लाजनहिं तोकूं काहे बनी दिवाली।
आब पे फूस मती तू डारे फिर न जाय बुझानी।
परनारी है पैनी छुरिया वेद रहे उच्चार। तेरी०
हुश्न चमन का खिला हुआ है लहर २ लहरावै।
वेदशास्त्र को झोझो भर में तुमको हम समझावे।
तोता बनके चख लेउ रस अखियन पके अनाइ।
आंसू बहायके मत तू रोवे छोड हमारी बैयां।
बार २ समझाय रहे हैं चहूं न तेरी सइयां।
हमरे पास मती तू आवे मारूं हन्टर चार॥तेरी०
अपने मनमें प्रन हम कीन्हो तुम्हें बनाऊं सैंया।
बालम मेरो बुढडो भयो है तासे खिबत न नैया।
केवट बनके बल्ली डारी नाव लगावो उस पार।
दुनियाँ भर में होय बदनामी दाग लगे मेरे माथे में
कोई शायर सुनके बात कविता लिख देय गाथे में
बद्री कवि मेरे पास रहतहै कनवज बीच मझार।
महेशसिंह ने खोजा बुलाय लियो रे रानि मेरो ही जाने
तासे कही हीरे फिर समझाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

महलन जल्दी चले जाव तुम रे सुन खोजा मेरे
राजा से कहियो रे तुम समझाई।
तुम्हरी शर्तें पूरी हुइ गईं रे सुन खोजा मेरे
जल्दी भांवर रे देउ डराई।
इतनी सुनके खोजा चल भयो र रबि मेरो ही जाने
जल्दी महलन रे पहुँचो जाई।
हाथ जोर के खोजा कह रहो रे रबि मेरो ही जाने
आज गरीबी रे सुने कें नाहीं।
शरते तुम्हरी पूरी हुइ गईं रे सुन राजा मेरे
जल्दी भांवइ रे देउ डराई।
इतनी सुनके राजा कह दई रे सुन खोजा मेरे
हमरी सुन ले रे कान लगाई-
सिगरे बराती महलन आय जाय रे सुन खोजा मेरे
भाँवर दीही रे सात डराई।
राजा की सुन खोजा चल भयो रे रबि मेरो ही जाने
जाय बरात में रे कही जाई।
कडुमसिंह सब भैंयन की रे रबि मेरो ही जाने
महलन लीन्हीं रे जल्द बुलाई।
सिगरी बरात की खातिर कर कें रे रबि मेरो ही जाने
दियो जनवासो रे राजा हरषाई।
हीरा सात हाथ में धर कें रे रबि मेरो ही जाने
नजर करी है रे वर की जाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बारौठी की अब करो त्यारी रे सुन राजा मेरे
कहन आय गौ रे तब नाई।
महेशसिंह जौं बंगमगढ़ को रे रवि मेरो ही जानो
बैंड को बाजा रे दियो बजबाई।
दोहा–करी बरोठी द्वार पै, भाँवर डारी सात।
दावत दीन्ही महल में, परस खवायो भात॥
खुश हुइ के ज्योनार खाय रहे रे रवि मेरो हीं जानो
गारी गाय रही रे बैठ लुगाई।
नेग चार सब ब्याह के कर दियो रे रवि मेरो ही जानो
संग कन्या को रे दियो पठाई।
सात दिना की मंजिल कर के रे रवि मेरो ही जानो
रंगमगढ़ में रे गये आई।
रनवासन में बहू पठाय दई रे रवि मेरो ही जानो
देखन आवैं रे सुनके लुगाई।
ब्याह की बरसै चार बीत गई रे रवि मेरो ही जानो
जन्म पुत्र को रे भयो आई।
सात तो लड़का भये महेश के रे रवि मेरो ही जानो
छोटो लड़का रे रांझो कहलाई।

—*—

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सचित्र बूटी प्रचार बड़ा

यह वैद्यक ग्रन्थ स्वर्गबासी महात्मा महन्त सुखराम दासजी ने लिखा है। इसमें सैकड़ों रोगों के बहुत ही सुगम इलाज दिए हैं। इस किताब के होने से साधारण रोगों में वैद्य और हकीमों के पास दौड़ने की आवश्यकता नहीं रहती है, इन सब बातों के अतिरिक्त जङ्गल की जड़ी बूटियों की पहचान बहुत सरल लिखी है, व औषध प्रस्तुत करने की प्रणाली भी विधिपूर्वक लिखी है, जड़ी बूटियों से हर तरह का इलाज इस किताब में दिया है, तथा प्रत्येक जड़ी बूटी के ऐसे सुन्दर चित्र दिए हैं. मानो अक्स को खींच दिया हो, इस किताब से साधारण पुरुष भी अच्छा वैद्य बन सकता है। पुस्तक के अन्त में कोष्ठी यन्त्र आदि अनेक मन्त्रों के चित्र भी दिए हैं। ऐसे अपूर्व ग्रन्थ की की. केवल ४)५० डा० ख० १)५० बाल रोग चिकित्सा की. २), नाड़ी ज्ञान तरङ्गिणी की. ४)५० स्त्रीरोग चिकित्सा की. २)५०, कम्पाउन्डरी शिक्षा की. ५) घरेलू इलाज की. २)५०; दुग्ध कल्प चिकित्सा २) डा. ख. अ. लगेगा।

कौआ तंत्र अर्थात (काला जादू)

[भविष्य का हाल बताने वाला संसार भरका माना हुआ पक्षी]

यह असली किताब भारत, पाकिस्तान तो क्या संसार भर के किसी भी पुस्तकालय से नहीं मिल सकती। परिन्दे कौवे से बड़ी बड़ी अनोंखी भविष्य की बातें मालूम होती हैं, कौआ तत्र के कुछ वशीकरण प्रयोग जैसे कि मन चाही स्त्री से शादी कराने का तत्र लोगों की दृष्टि से गुप्त रह कर सबको देखना परन्तु स्वयं किसी को नजर न आना जमीन में गड़ा धन मालूम करना, चोर को पकड़ने का अमल आदि ऐसे यन्त्र जिनसे मनुष्य आने वाली मुसीबतों से बच सकता है, इसी के द्वारा मनुष्य को मांगी हो जाती है। गुमशुदा या परदेश गया हुआ आदमी शीघ्र वापिस आ जाता है, आदि सैकड़ों तरह के उत्पन्न प्रयोग हमारी पुस्तक में मिलगे अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है। मू० व्यय डा० ख० ५)५० ।

पता—दीपचन्द बुकसेलर्स नयागंज हाथरस यू० पी०

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

❀ तीसरा भाग हीर का जन्म ❀

* चोछक की सगाई *

दोहा—चंड मुंड संहारनी नल की करी सहाय ।
बद्री कवि अज्ञान को देवहु ज्ञान बताय ॥

जंग सियालो है पञ्जाब मुल्क में रवि मेरो ही जानो
जाकी शोभा रे कही न जाई ।
चोछक राजा राज करत है रे रवि मेरो हीं जानो
वाकी प्रजा रे सुखी रहाई ।
जैसी जाति को बडो बहादुर है रे रवि मेरो अल्ला
भई न ताकी रे कहीं सगाई ।
पद्ममगढ़ में उसी समय में रे रवि मेरो ही जानो
पद्मप राजा रे नाम कहाई ।

पद्ममगढ़ को पद्मम राजा बहुत वीर बलदाई रे ।
ताके घर में कन्या जन्मी शोभा कही न जाई रे ॥
चीते कमर बनी है जाकी चलत वीन बलखाई रे ।
तोता सी नाक आंख मृगनैनी कोयल बैन सुहाई रे ॥
गाल गुलाबी ओठ लाल है चंदा देख शर्माई रे ॥
आठ बरसकी उमर भई है नृप को चिन्ता छाई रे ।
कोई राजाको लड़का ढूंढे ता संग करे सगाई रे ॥
जल्दी ब्याह करे बेटी को रानी से कहै सुनाई रे ।
राजाके मुंह बात सुनी जब रानी के मन भाई रे ॥
हाथ जोर के रानी कह रही बालम सुन चितलाई रे ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

चहू ओर को पंडित भेजो संग में जावे नाई रे।
अच्छो लड़का ढूढ के राजा देवो रे लगुन पठाई रे।
साफ २ तुम शर्ते लिख देउ जादू की होय लड़ाई रे।
जंग जीत जो जाय यहां से भांवर लेउ डरवाई रे।
हंसी खुशी से अपने संग में विदा लेय करवाई रे।
बद्री शर्मा कहै कनवजके नहिं ख्वारी होय अधिकाई रे।
रानी ने जब इतनी कह दई रे रवि मेरो ही जाने
सोचके राजा रे कहैं सुनाई।
आज ही पाती लिख भेज दिहै रे रवि मेरो ही जाने
पण्डित नाऊ रे दिये पठाई।
इतनी सुनके रानी कह रही रे सुन राजा मेरे
अरज गरीबी रे सुनो चितलाई।
जंग सियाले में राजा रहत है रे सुन राजा मेरे
छोछक नाय है रे जाको कहाई।
रानी की सुन राजा कह रहो रे सुन रानी मेरी
रानी सुन लेउ रे कान लगाई।
जो कोई हमरे संग समर में रे सुन रानी मेरी
देवे हमको रे रनमें हराई।
हंसी खुशी से बेटी संग में रे सुन रानी मेरी
भांवर लेय रे सात डराई।
रे सुन रानी मेरी

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वाके बराबर रे कोई नाहीं ।
बैरीदल को पत्थर कर देय रे सुन रानी मेरो ।
कुत्ता बिली रे देय बनाई ।
कठिन जुध्य होय पद्ममगढ़ में रे सुन रानी मेरी
खून की नदिया रे बहिजाई ।
इतनी कहके राजा चल दियो रे रवि मेरो ही जान
जाह पहुँचो रे बंगला के माहीं ।
कोरो कागज हाथ में ली लियो रे रवि मेरो ही जाने
कलम दवात रे लई उठाई ।
सोच २ पाती लिखन लगो है रे रवि मेरो ही जाने
अपने मन में रे खुदा मनाई ।
सिद्ध श्री तो बहिले लिख दई रे रवि मेरो ही जाने
फिर समाचार तो रे लिखत बनाई ।
राजा लिख दियो पद्ममगढ़ को रे रवि मेरो ही जाने
पद्म है २ नाम कहाई ।
दुखी दीन घर कन्या जन्मी रे रवि मेरो ही जाने
पाती में बेटी की रे लिखी सगाई ।
रन में लड़के हमहि हराय देय रे रवि मेरो ही जाने
फिर कन्याकी रे लेय मवर डराई ।
श्यामा मालिन जादू पढ गई रे रवि मेरो ही जाने
रन में दीहे रे जादू चलाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कुचा बिल्ली मोर बनाय देय रे रवि मेरो ही जाने
पत्थर दीहे रे फौज बनाई ।
जंग करन की होय जो हिम्मत रे रवि मेरो ही जाने
तो तुम टीका रे लेउ चढ़ाई ।
लिखके बन्द लिफाफा कर दियो रे रवि मेरो ही जाने
ऊपर से दई रे मुहर लगाई ।
खोजा एक बुलाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
वाको दीन्हों रे हुक्म सुनाई ।
बेनी ब्राह्मण को नौ आवो रे सुन खोजा मेरे
संग में लावो रे माधौ नाई ।
समय नहीं है देर करन को रे सुन खोजा मेरे
जल्दी लावो रे दोऊ बुलाई ।
इतनी सुनके खोजा चल दियो र रवि मेरो ही जाने
पण्डित लीन्हों रे तुरत बुलाई ।
माधौ के घर गयो है छिन में रे रवि मेरो ही जाने
संग में लीन्हों रे माधौ नाई ।
पाँच बेर परक्रम्मा करके रे रवि मेरो ही जाने
राजा को दीन्हों रे शीश झुकाई ।
बेनी माधौ दोऊ आय गये रे रवि मेरो ही जाने
राजा ने लीन्हो रे लाख बुलाई ।
बाती नौके अपने हाथ में रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दई पण्डित को रे तुरत गहाई।
कंचन थार रेशमी कपड़ा रे रवि मेरो ही जाने
हीरा पांच तोर दिये गहाई।
पण्डित नाऊ पास बुलाय के रे रवि मेरो ही जाने
कान में राजा रे कही समझाई।
सुन्दर रूप उजागर लड़का मिल जाय रे सुन पंडित मेरे
ताको टीका रे दिहौ चढ़ाई।
इतनी सुनके पंडित जी ने रे रवि मेरो ही जाने
घोड़ा अपनी रे जल्द सजाई
घोड़ा पै धरे सामान लियो है रे रवि मेरो ही जाने
परदेशनको रे दियो कूंच कराई।
घोड़ा पै चढ़ि पण्डित चल में रे रवि मेरो ही जाने
पैदल चल भयो रे माधौ नाई।
गाँजा पीवत माधौ जाय रहौ रे रवि मेरो ही जाने
भाँग तमाखू रे पण्डित खाई।
चलत २ जहं संझा हुइ जाय रे रवि मेरो ही जाने
नहिं आगे को रे पैर बढ़ाई।
घोड़ी बांधै खूंटा गाड़ के रे रवि मेरो ही जाने
पण्डित बैठे रे जीन बिछाई।
नगर से लावै घास खरीद के रे रवि मेरो ही जाने
घोड़ी को देवे रे घास खिलाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

आलू भोभा और टिमाटर रे रवि मेरी ही जाने
चूल्हो बनाय के रे लैय पकाई।
नाऊ आटा गूंध के धर देय रे रवि मेरो ही जाने
पण्डित लेवे रे रोटी बनाई।
ठाकुर जी को भोग लगाय के रे रवि मेरो ही जाने
खावै दोनों रे पण्डित नाई।
जीन बिछाय के पैठ रात भर रे रवि मेरो ही जाने
भजन करत हैं रे झाँझ बजाई।
रात दिना की मंजिल करके रे रवि मेरो ही जाने
जालिम गढ़ की रे सीम दबाई।
देख २ शोभा जालिमगढ़ की रे रवि मेरो ही जाने
अपने मनमें रे अति हरषाई।
किला के द्वारे पहुँच गये हैं रे रवि मेरो ही जाने
फाटक दोऊ रे खुले दिखाई।
नाई पुरोहित भीतर घुस गये रे रवि मेरो ही जाने
तुरतहि बंगला में रे पहुँचे जाई।
लगी कचहरी बादशाह को रे रवि मेरो ही जाने
बैठे शूर हैं रे मन हरषाई।
तबला ढोल मृदंग बाज रहो रे रवि मेरो ही जाने
रन्डी रही है नाच दिखाई।
ठाड़े नाचे झुकि २ नाचे रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

फ़िल्मी गाना रे रही गाई।
नाऊ परोहित बंगला जाय के रे रवि मेरो ही जाने
राजा को दीन्हों रे शीश झुकाई।
चिठिया लौके पन्डित जी ने रवि मेरो ही जाने
राजा को दीन्हों रे तुरत गहाई।
चिठिया खोल के तबहि भूप ने रे रवि मेरो ही जाने
बांचन लागो रे मन हरषाई।
चिट्ठी बांचत प्रलय हुइ गई रे रवि मेरो ही जाने
सूरत जाकी रे गई कुम्हलाई।
होश बिजड़ गये तबहि भूप के रे रवि मेरो ही जाने
जब जादू की रे पढ़ी लड़ाई।
तुरतहि चिठिया वापिस कर दई रे रवि मेरो ही जाने
नेगी चल में रे मन खिसियाई।
देश २ में दोनों घूम रहे रे रवि मेरो ही जाने
कोई टीका रे नहीं चढ़ाई।
दोनों मनमें सोच समझ के रे रवि मेरो ही जाने
जंग सियाले की सूब लगाई।
रात दिना की मंजिल कर के रे रवि मेरो ही जाने
जंग सियाले में रे पहुंच गये आई।
ल०—जालिमसिंह ने चिट्ठी लौके मन में पढ़ी हरषाई रे
होश बिगड़ गये जालिमसिंह के जादू की पढ़ी लड़ाई रे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

भार में जावे ऐसी शादी हमना करे सगाई रे।
इतनी कहके आलिमसिंह ने चिट्ठी दई लौटाई रे।
चिट्ठी लैके नेगी चलये मन में भये खिस पाई रे।
मतो विचार के तब दोनों ने सियाले की सूब लगाई रे
खान पान सब छोड़ दियो है मन में कछू न भाई रे।
रात दिना की मंजिल करके स्याले गये नचियाई रे।
जब सियाले की सुन्दरता देख २ हरषाई रे।
पत्थर की दीवार बनी है चहुंदिश खुद रही खाई रे।
धरी तोप बुरजन के ऊपर दुश्मन देख घबराई रे।
नाऊ परोहित तब आगे को घोड़ा दियो बढ़ाई रे।
दरवाजे में पहुंच किले के भये खुशी अधिकाई रे।
मणि माणिक जर रहे बंगला में नजर नहीं ठहराई रे।
पातुर नाच रही बंगलामें रही चुटिकनमें तान उड़ाई रे।
नाऊ पुरोहित गये बंगला में देख के खुश हुइ जाई रे।
सात बेर परकम्मा करके दीन्हों शीश झुकाई रे।
लैके खत तब पंडित जी ने राजा को पकराई रे।
खत को लैकें खोलकर जल्दी पढ़न लगो चितलाई रे।
सिद्ध श्री नारायन लिखरही आगे लिखो है दुर्गे भाई रे।
मेरी बिटिया संग भाबर डारे पहले लड़े लड़ाई रे।
तोप तमंचा की कठिन मार है प्रान कढ़ि जाई रे।
... बरछी भाला और कटारी जादूकी होय लड़ाई रे।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जंग जीत जो यहाँ से पावै भाँवर लेय डरवाई रे।
इतनों काम होय न तुमपे खवारी होय अधिकाई रे।
बगुआ बन्दर सुवा बना लेय पत्थर फौज हुइ जाई रे।
लड़के जीत न हमसे पैं हो सुन लेऊ कान लगाई रे।
बद्री शर्मा कहे कनवज के ज्यों राम रघुराई रे।
चिट्ठी पढ़ कर भूप ने रे रवि मेरो ही जाने
लीन्हो खोजा रे तुरत बुलाई।
जोड़ूं हाथ करूं तेरी बीनती रे रवि मेरो ही जाने
अरज गरीबी रे सुने के नाहीं।
यौ औरे हाथ करे चौं बीनती रे रवि मेरो ही जाने
अरज गरीबी रे कहै यौ नाहीं।
कौन काम को मोय बुलाय लियो रे सुन राजा मेरे
जल्दी देवो रे हुकम सुनाई।
इतनी सुनकें जोड़क कह रहे रे सुन खोजा मेरे
फक्कड़ लावो रे जल्द बुलाई।
इतनी सुनके खोजा चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
बन की लीन्हीं रे सूध लगाई।
झारखंड में कुटिया बन रही रे रवि मेरो ही जाने
चहुंदिश जाके रे बगुरी दिखाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

खोज लगत नहिं पट्टम को रे रवि मेरो ही जाने
कुटी तो ढूंढो रे चहुंदिश जाई ।
धूनी रमाये बैठे मिल गयो रे रवि मेरो ही जाने
लक्कड़ लग रहो रे धुंवा दिखाई ।
आंख मूंद के बैठो फक्कड़ रे रवि मेरो ही जाने
हरि से रहो है रे ध्यान लगाई ।
बैठे २ बहुत देर भई रे रवि मेरो ही जाने
नहिं देखे फक्कड़ रे पलक उठाई ।
खोजा ने तब शंख बजय दियो र रवि मेरो ही जाने
बाबा इकदम रें मन घबराई ।
आंख खोल दई है बाबा ने रे रवि मेरो ही जाने
खोजा दीन्हो रे शीश झुकाई ।
आंख खोल दई बाबा ने र रवि मेरो ही जाने
हाथ जोर के खोजा कह रहो रे सुन बाबा मेर
अरजी सुन लेउ कान लगाई ।
मोरू हाथ करूं तेरी बीनता रे सुन बाबा मेरे
अरज गरीबी र सुनो क नाई ।
चौ जोरे हाथ कर चौ बीनती रें सुन बच्चा मेरे
अरज गरीबी रे कहै चौ नाहा ।
बंगला में छोड़क तुमहि बुलाय रहे रे सुन बाबा मेरें
हमको दीन्हो रे हुक्म सुनाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इतनी सुनके फक्कड़ चल दियो रे रवि मेरों ही जाने
तुरत कचेहरी में र गयो आई।
राजा के फक्कड़ देख लियो है रे रवि मेरो ही जाने
जल्दी गद्दी में लियो बिठाई।
पाती निकार के नृप छोछक ने रे रबि मेरो ही जाने
दई फक्कड़ को रे तुरत सुनाई।
पाती सुनके फक्कड़ कह रहो रे सुन राजा मेरे
जल्दी टीका रे लेउ चढ़ाई।

ल०-इतनी सुनके छोछक कह रहे सुनलेउ कान लगाई रे
पट्टमपट्ट से पाती आई जामें लिखी सगाई रे।
भाँवर डारन जो कोइ आवे बहले लड़े लड़ाई रे।
श्यामा मालिन मेरे घर में जादू देय फैलाई रे।
बगुला बन्दर सुआ बनावे पत्थर देवै फौज बनाई रे।
लड़े न कोई जीते वहाँ पैं ख्वारी होय अधिकाई रे।
मेरे मन में ऐसी आवै टीका देय लौटाई रे।
इतनी सुनके फक्कड़ कह रहो तुम्हें शरम न आई र।
घर में आयके टीका फेरो घर घर होय हंसाई र।
जहाँ मुशीबत तुम पैं परि जाय तहं पे करे सहाई रे।
हिम्मत करके तब छोछक ने महलन खबर पठाई रे।
हंसी खुशी से अपने घर में टीका लियो चढ़ाई र।
भोजन त्यार भये महलन में जरा ने देर लगाई रे।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

नेगी लिये बुलाय भूप ने भोजन दियो कराई रे ॥
पलका दियो डराय महल में तापै दगी बिछवाई रे।
तापै मखमल बढ़ा डार के तकिया दियो लगवाई रे ॥
आधी रात में सोवन लागे पण्डित संग में नाई रे।
भोर भयो है बहुत इनाम दे बिदा दिये करवाई रे ॥

—०—

❀ चौथो भाग हीर रांझा ❀

फक्कड़ की जेल

उर्फ

* छोकक का बैल बनाना *

दोहा-चंड मुंड संहारणी नल की करी सहाय।
बद्री कवि अज्ञान को देवहु ज्ञान बताय ॥

ब्याह की त्यारी छोकक कर रहे रे रवि मेरो ही जाने
चहुँदिश दीन्ही रे पाती पठाई।
सज २ राजा सिगरे आय गये रे रवि मेरो ही जाने
धूरे पे दीन्हो रे जन्द टिकाई।
चार लाख चौबीस हजार रें रवि मेरो ही जाने
सजके लशकर रे कूच कराई।
हाथी इकदन्ता कजरी बन के रे रवि मेरो ही जाने
मकनी खूनी रे लिये सजाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

घोड़ों हिंरौजी औ दरयाई रे रवि मेरो ही जाने
कच्छी मच्छी पे रे जीन धराई।
लक्खा गरी तुर्की सजाय लिये रे रवि मेरो ही जाने
जो तीन पांव से रे रहे ठन्धाई।
बीका नेरी ऊंट सजे हैं रे रवि मेरो ही जाने
कठलानी पीठ पे २ दई धराई।
पैदल पन्टन छत्री सज गये रे रवि मेरो ही जाने
कर में लीन्हो रे गुर्ज उठाई।
बख्तर पहिरन ज्वान लगे हैं रे रवि मेरो ही जाने
टोप झलरिया रे माथे सुहाई।
तवा लगाय लिय हैं छाती पे रे रवि मेरो ही जाने
गोली लागे रे चीप हुइ जाई।
लिये हथौडा लुहार आय गयो रे रवि मेरो ही जाने
तवा की कडिया रे दई लौटाई।
रथ और रथ्वा पालकी सज गई रे रवि मेरो ही जाने
बखिन पे २ तोपे चढ़वाई।
जिनको मार दूर तक जावे रे रवि मेरो ही जावे
जो मन पक्के को रे गोला।
दल के भीतर डंका बज रहो रे रवि मेरो ही जाने
सिगरे ज्वान भी रे सज जाई।
भाला बरछी तेगा ली लियो रे रवि मेरो ही जाने
काई तमन्चा रे लियो उठाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

ल०-जंग सियालेसे चले बराती पट्टमगढ़को सूत्र लगाईरे
बहुत दूर की सेना जाय रही गिनती गिनी न जाई रे
ईंट फूट के रोढ़ा हुइगयो रगड़के रोढ़ारे धूरहुइ जाई रे
धूर उड़ानी आसमान बईं सविता रहे धुंध में छाई रे
आगे वाले पानी पी रहे गंदला पीछन को रह जाई रे
बढ़ी रात दिना की मंजिल करके पट्टमगढ़को धूरोदबाई रे
जंगसियाले से कूंच कराय दियो रे रवि मेरो ही जाने
लियो पट्टमगढ़ को रे सूब लगाई।
रात दिना की मन्जिल कर के रे रवि मेरो ही जाने
लियो पट्टमगढ़ को रे धूरो दबाई।
फौज रुकाय दई छोछक राजा ने रे रवि मेरो ही जाने
तम्बुआ धूरे पे रे दियो तनवाई।
चिट्ठी लिखने छोछक लग गयो रे रवि मेरो ही जाने
कोरो कागज रे लियो उठाई।
फाउटन पेन हाथ में लैके रे रवि मेरो ही जाने
लिखने लागो रे गणेश मनाई।
सिद्ध श्री तो उप्मा लिख दई रे रवि मेरो ही जाने
पीछे लिख रहो रे हाल घनाई।
हम हैं राजा जंग सियाले के रे रवि मेरो ही जाने
छोछक राजा रे हम कहलाई।
मेरे संग में फक्कड़ आय रहो रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जो लागत है रे मेरो सग भाई।
रन में जौहर अपनो दिखाय देय रे रवि मेरो ही जाने
चौदहु विद्या रे पढ़ी हरषाई।
तिह से तुम को समझाय रहे है रे रवि मेरो ही जाने
र जी से देवो रे भंवर सगाई।
लड़न की इच्छा जो तुम करि हो रे रवि मेरो ही जाने
छिन में तुमको रे दिहो हराई।
श्यामा की शिर से चोटी काट लेउ रे रवि मेरोही जाने
जाद वाको रे झूठो हुइ जाई।
तुम्हरो जोर कछू न चलि है रे रवि मेरो ही जाने
तुम्हरी लीहे रे मुश्क चढ़ाई।
सांगन के हम मड़ओ गाड़ के रे रवि मेरो ही जाने
साती भांवर रे लियो सगाई।
पद्दमगढ़ की लूट कराय लेउ रे रवि मेरो ही जाने
तुमको दीहे रे ऊमे सगाई।
तिहसे तुमको समझाय रहे रे रवि मेरो ही जाने
खुशी से देवो रे ब्याह रचाई।
पातीं पढ़के काजी बुलाय लेउ रे रवि मेरो ही जाने
घर में बराती रे लेउ बुलाई।
सज के बरात पद्दमगढ़ में आय गई रे रवि मेरो ही जाने
चढ़ के घूरे ये रे दई रुकवाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अपने घरौआ रिश्तेदार बुलाय लेउ रे रवि मेरो ही जाने
जल्दी जनवासो रे देउ बताई।
घोड़न को हरी घास पठाय देउ रे रवि मेरो ही जाने
चना को दाना रे देउ भिजवाई।
बैलन को भुस कार्बी भेज देउ रे रवि मेरो ही जाने
खली ओर आटा रे संग मिठाई।
भूखे बंधे हैं ऊंट और हाथी रे रवि मेरो ही जाने
बरगद नीम के रे देउ पत्ता पठाई।
बिस्कुट मक्खन चाय भेज देउ रे रवि मेरो ही जाने
संग में भेज देउ रें पकवान मिठाई।
जो तुम देरी भिजवे में करि हो रे रवि मेरो ही जाने
तोप से दीहौ रे तुम्हें उड़ाई।
चिट्ठी लिखके बन्द करी है रे रवि मेरो ही जाने
दीन्ही ऊपर से रे मुहर लगाई।
खोजा तुरत बुलाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
वाको दीन्ही रे पाती थमाई।
पाती लइके खोजा चल भयो रे रवि मेरो ही जाने
लियो किला को रे सूत लखाई।
पद्मगढ़ में पहुंच गयो है रे रवि मेरो ही जाने
द्वार के फाटक रे जल्द खुलाई।
बीच कचेहरी में खोजा जाय के रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दियो राजा को रे शीश नवाई।
चिट्ठी तुरत निकारी जेब से रे रवि मेरो ही जाने
राजा को दीन्ही रे समुहे जाई।
पोती लड़के पढ़न लगो है रे रवि मेरो ही जाने
अक्षर अक्षर रे पढ़ जाई।
चिट्ठा पढ़के बहुत खफा भयो रे रवि मेरो ही जाने
मानो शराब में रे आग लग जाई।
बंगला में ठाड़ो इक दम हुइ गयो रे रवि मेरो ही जाने
जोर जोर से रे रहो चिल्लाई।
डंका बाजे मरी फौज में रे रवि मेरो ही जाने
सुन सुन क्षत्री रे सज जाई।
माला बरछी तमन्चा लेके रे रवि मेरो ही जाने
कोई २ लीन्हीं रे तलवार उठाई।
बख्तर पहर के राजा सब गयो रे रवि मेरो ही जाने
हाथी पे चढ़के रे बैठो जाई।
श्यामा मालिन को बुलवाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
जल्दी समर को रे कूंच कराई।
समर में पट्टमसिंह ने आयके २ रवि मेरो ही जाने
गर्ज २ के रे कहे सुनाई।
कौन बहादुर चढ़के आय गयो रे रवि मेरो ही जाने
मेरे समुहे २ जवाब है जाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इतनी सुनके छेाछक राजा ने रे रवि मेरो ही जाने
पद्ममसिंह के रे सम्हुहे जाई।
मीठे स्वर से छेाछक कह रहो रे रवि मेरो ही जाने
मेरी सुन लेउ रे तुम चितलाई।
राजी खुशी से शादी कर देउ रे रवि मेरो ही जाने
पांव हमारे रे पूजो हरषाई।
मेरे सहुहे इन्कार जो करि हौ रे रवि मेरो ही जाने
तुम्हरो ली है रे मुश्क चढ़ाई।
जबरन भांवर हम डरवैये रे रवि मेरो हो जाने
घर २ ली है रे मुश्क चढ़ाई।
अपने देश में तुम्हें लै जेइ हैं रे रवि मेरो ही जाने
काठ के कोल्हू में रे दिहो पिराई।
तासे कही हमारी मान लेउ रे रवि मेरो ही जाने
कन्या की भांवर रे देउ डराई।
इतनी सुनके राजा जर गयेा रे रवि मेरो ही जाने
छेाछक राजा से रे रहो बतलाई।
जीभ सम्हार के हम से बोलो रे रवि मेरो ही जाने
तुम्हरे शिर पे रे काल मड़राई।
पीके भांग औ दास आय गये रे रवि मेरो ही जाने
कोई चर्स की दीन्ही रे दम लगवाई
सिरीं पागल बनके आय गये रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मती ठिकाने पे रे नहिं आई।
मौत महरानी संग २ डोले रे रवि मेरो ही जाने
दो कंधा पे रे जम बैठाई।
जम के फन्दन अब तुम फंस गयो रे रवि मेरो ही जाने
प्रान तुम्हारे २ बचि नहिं पाई।
भली भला जो अपनी चाहो रे रवि मेरो ही जाने
चुप्पे घर को रे कूच कराई।
केटू के फन्दा में नहिं फंसे हो रे रवि मेरो ही जाने
ताही से रहे हो २ अकड़ दिखाई।
अबकी जो तुम जीभ चलाय दई रे रवि मेरो ही जाने
तुम्हरी होहै २ दुर्दशा कराई।
बातन २ बतबड़ हुइ गयो २ रवि मेरो ही जाने
जल्दी कीन्हो रे रार बढ़ाई।
रोस आय गयो पटटमसिंह को रे रवि मेरा ही जाने
अपनो कीन्हो रे हुकम सुनाई।
बत्ती दे देउ मेरी तोपन में रे रवि मेरो ही जाने
इन पाजिन को रे देउ उड़ाई।
पट्टमसिंह को हुक्म पायके रे रवि मेरो ही जाने
तुरत खलासी २ पहुँचे आई।
रंजक घर के प्याली भर दई रे रवि मेरो ही जाने
ऊपर कीन्हो र आग लगाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

तोपे रन में छुटन लगी है र रवि मेरो ही जाने
सुन जोधा रे मन दहलाई।
गोला जंजरिया जिसके लग जाय रे रवि मेरो ही जाने
हाड मांस सबरे छुट जाई।
गोला लगजाय जिस हाथी के रें रवि मेरो ही जाने
रन में चिंघर के रे मर जाई।
गोला लग जाय जिस घोड़ा के रे रवि मेरो ही जाने
सुम्भे चारो रे गर्द हुइ जाई।
जिस सड़िया के गोला लग जाय रे रवि मेरो ही जाने
बल २ कर के रे मर जाई।
रथ के पहिया में गोला लग जाय रे रवि मेरो हीं जाने
धुरी सहित सबरे नस जाई।
जिस क्षत्री के गोला लग जाय रे रवि मेरो ही जाने
मौत तो वाको रे स्वर्ग मड़राई।
दल में गोला छूट रहो है रे रवि मेरो ही जाने
नहिं आगे को रे कदम बढ़ाई।
छुट २ तोपे लाल भई है रे रवि मेरो ही जाने
हाथ ज्वान के बरे नहि जाई।
तोप की मार बन्द भई हैं रे रवि मेरो हीं जाने
ज्वान लीन्ही रे बन्दूक उठाई।
छुटे बन्दूके दल के भीतर रे रवि मेरो हीं जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रहे निशाना रे अपनो लगाई।
छाती पे गोली जिसके लग जाय रे रवि मेरो ही जाने
तुरतहि देवे रे प्रान गमाई।
कुहराम भयो है दल के भीतर रे रवि मेरो ही जाने
साँची सुन लेउ रे तुम चितलाई।
कोई रोवे अपने पिता को रे रवि मेरो ही जाने
कोई माता को रे रहो चिल्लाई।
कोई रोवे अपनी बहिन को रे रवि मेरो ही जाने
कोई भैया को रे रहो बुलाई।
कोई लुगैया को रोय रहो है रे रवि मेरो ही जाने
जो जल्दी लायो रे विदा कराई।
कोई पुरखन को रोय रहो है रे रवि मेरो ही जाने
रहे आँखिन से रे आंसू बहाई।
वीर लड़ाके जोधा क्षत्री रे रवि मेरो ही जाने
आगे को दीन्हे रे पाँव बढ़ाई।
जिनहि पियारो घर की त्रिया रे रवि मेरो ही जाने
रन से भागे रे पीठ दिखाई।
भाँग उतर गइ भगड़ियन की रे रवि मेरो ही जाने
गाँजा वाले रे चले पराई।
नशा अफीम के उतर गये हैं रे रवि मेरो ही जाने
पलकें उघरे रे रहजाई।
कायर जोधा सज सज आये रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

उनको देवो रे हाल सुनाई ।
मौत पियारी उनको लगी है रे रवि मेरो ही जाने
पीछे को लीन्हे रे कदम हटाई ।
लोथ उठाय के ऊपर धर लई रे रवि मेरो ही जाने
मुर्दों के भीतर रे रहे लुकाई ।
जहं मूंडन के मुडचौरा बन रहे रे रवि मेरोही जाने
लोथन के रे पहाड़ बन जाई ।
मुर्दों के भीतर जिन्दा घुस गये रे रवि मेरो ही जाने
कोई २ लेवे रे तिलक लगाई ।
झोला बनाय के कंधन पे धर लेय रे रवि मेरो ही जाने
लेय बाबा को रे भेष बनाई ।
कोई बहादुर सामने दीखे रे रवि मेरोही जाने
देही उनकी रे सूख जाई ।
गुस्सा आय जाय जौन बीर को रे रवि मेरो ही जाने
बापै देवे रे तलवार चलाई ।
मूड़ काट के रन में डार देय रे रवि मेरो ही जाने
तब आगे को रे पैर बढ़ाई ।
हाथ जोर के कह रहो रे रवि मेरो ही जाने
हमरी विनती रे सुनो चितलाई
हम तो आवे हरिद्वार से रे रवि मेरो ही जाने
जगन्नाथ के रे दर्शन को जाई ।
पैसा निपट मेरो मुर्गी से रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

भिक्षा मांगन को रे यहां पे जाई।
भिक्षा मांग न हमने पाई रे रवि मेरो ही जाने
होने लागी रे यहां लड़ाई।
हम पर दाया अब तुम कर देउ रे रवि मेरो ही जाने
हमरे देवो रे प्रान बचाई।
वरस न लागैं कोई खत्री रे रवि मेरो ही जाने
तुरतहिं देवे रे बन्दूक चलाई।
हाथी बिचले दल के भीतर रे रवि मेरो ही जाने
देय जवाब को रें जमी गिराई।
लोथ के ऊपर पांव धर देवे रे रवि मेरो ही जाने
लोथ के भीतर रे जिन्दा मरजाई
दशा देखके पद्ममसिंह ने रे रवि मेरो ही जाने
आगे हाथी रे दियो बढ़ाई।
तेगा लेके पद्ममसिंह ने रे रवि मेरो ही जाने
छोलक राजा पे रे दियो चलाई
तेगा आवत छोलक देख लियो रे रवि मेरो ही जाने
तुरतहि दीन्ही रे ढाल अड़ाई।
सात सिरोही हन २ मारी रे रवि मेरो ही जाने
सिरोही बीच से रे टूट जाई।
पद्ममसिंह तब मनमें सोच रहो रे रवि मेरो ही जाने
काल हमारो रे शिर मड़राई।
तुरतहि श्यामा मालिन आय गई रे रवि मेरो ही जानें

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

देखके पद्दुम रे कहे सुनाई ।
प्रान हमारे श्याम बचाय लेउ रे रवि मेरो ही जाने
प्रान हमारे रे बचन के नाहीं ।
इतनी सुनके श्याम मालिन रे रवि मेरो ही जाने
अपनो जादू रे लियो उठाई ।
समर भूमि में जादू मार दई रे रवि मेरो ही जाने
मुर्गी मुर्गा रे दिये बनाई ।
खंजन मैना तोता बनाय दिये रे रवि मेरो ही जाने
बगुला तीतर रे दिये बनाई ।
कुत्ता गदहा कोई बनाय दिये रे रवि मेरो ही जाने
पत्थर कीन्ही रे फौज बनाई ।
छोड़के री जादू चलाय दियो रे रवि मेरो ही जाने
तुरतहि कीन्हो रे बैल बनाई ।
जादू की पुड़िया श्याम लेके रे रवि मेरो ही जाने
जादू दीन्ही रे फक्कड़ पे चलाई ।
जादू खोवत फक्कड़ चलाय दियो रे रवि मेरो ही जाने
श्यामा के जादू पे रे पेश न आई
वीर भाग गये फक्कड़ फकीर के रे रवि मेरो ही जाने
जादू तिनरो रे झूंठ हुइ जाई ।
फक्कड़ वीर को तोता बनाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
पिंजरा में लीन्हो रे बन्द कराई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

❀ पाँचवां भाग हीर रांझा ❀

छोल्हक का ब्याह

उर्फ

❀ हीर का जन्म ❀

दोहा—चंड मुंड महारनी नाश की करी सहाय।
बद्री कवि अज्ञान को देवहु ज्ञान बताय॥

छोल्हक ब्याहन गये पद्ममगढ़ में रे रवि मेरो ही जानें
फक्कड़ भयो रे संग में जाई।
अनगिनतिन फौज गई है रे रवि मेरो ही जानें
पद्ममगढ़ में रे भई लड़ाई।
पद्ममसिंह जब हारो समर में रे रवि मेरो ही जानें
श्यामा मालिन रे लई बुलाई।
जादू चलाय दई श्यामा मालिन रे रवि मेरो ही जानें
जादू फक्कड़ को रे दियो नशाई
चेता बनाओ फक्कड़ फकीर को रे रवि मेरो ही जानें
दियो छोल्हक को रे बैल बनाई।
फौजें जितनी जंग सिपाहे की रे रवि मेरो ही जानें
पत्थर कीन्हो रे सबको बनाई।
पद्ममगढ़ में जाय पद्ममसिंह ने रे रवि मेरो ही जानें
तेली कीन्हों रे जेन्द बुलाई।
बैल भेष में छोल्हक ठाढ़े रे रवि मेरो ही जानें

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

तेली को दीन्हो रे जल्द गहाई।
अपने घर लै जाओ बैल को रे रवि मेरो ही जाने
कोल्हू चलवैयो रे भाय न जाई।
अन्न के भोजन दिहो न इसको रे सुन तेली मेरी
खरी औ पीता रे दिहो खवाई।
जिस दिन कोल्हू नहीं चलाभैं रे सुन तेली मेरी
मार पने ठिन रे खाल उड़ाई।
कबहुं चैन से रहन न दीजौ रे सुन तेली मेरी
नहि भूख के दीजो रे पानी पिलाई।
रात दिवस रखवारी करि रहो रे सुन तेली मेरी
नहिं धोखा देकें रे भगि जाई।
इतनी सुनके तेली कह रहो रे सुन राजन मेरे
राजन सुन लेउ रे मेरी चितलाई
दिन औ रात को करे रखवारो रे सुन राजन मेरे
चौकस रहियो रे धोखा नहि खाई।
बैल को लैके तेली चल भयो र रवि मेरो ही जाने
अपने महल में रें गयो आई।
बैल के आंख में पट्टी बाँध दई रे रवि मेरो ही जाने
नहीं आंख से रे परै दिखाई।
कोल्हू में मचवाय दियो है रे रवि मेरो ही जाने
सरसों की घनी र हरी अ .

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पाट के ऊपर तेली बैठ गयो रे रवि मेरो ही जाने
जोर से मारे रे चाबुक घुमाई ।
छोड़क राजा कोल्हू चलाय रहे रे रवि मेरो ही जाने
रहे नैनन से रे आँसू बहाई ।
तोता को पिंजरा पक्षम उठाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
ऊंचे बरगद पे रे दियो टंगवाई ।
देय न खाना फक्कड़ फकीर को रे रवि मेरो ही जाने
रहो प्यास न से चलो सुखाई ।
फक्कड़ पिंजरा में रोय रहे हैं रे रवि मेरो ही जाने
रहे नैनन से आंसू बहाई ।
भूख प्यास से प्रान तड़प रहे रे रवि मेरो ही जाने
तास लवैया रे नहिं परे दिखाई ।
धीरज धरके फक्कड़ मन में रे रवि मेरो ही जाने
अपने खुदा को रे रहो मनाई ।
जोरूं हाथ करूं तेरी बीनती रे रवि मेरी अल्ला मेरो
अपने में कर देउ रे मेरी सहाई ।
तुमही दुनियाँ की टेर सुनत है रे रवि मेरो ही जाने
नहिं दुनियां में रे परे दिखाई ।
फक्कड़ मोह बिसारके रे रवि मेरो अल्ला मेरो ही जाने
आंखों मींचके रे ध्यान लगाई ।
खुदा ने बिनती सुनी फक्कड़ की रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दर्शन दीन्हे रे पिंजरा में आई।
हाथ जोर के फक्कड़ कह रहो रे रवि मेरो ही जाने
कैसे पिंजरा से बाहर जाई।
इतनी सुनके खुदा बोल रहे रवि मेरो ही जाने
हमरी सुन लेउ रे तुम घिघलाई।
अपने चोंच से पिंजरा काठो रें सुन फक्कड़ मेरे
सब बिदा कर हौ रे तुम्हरी सहाई
खुदा की सुनके फक्कड़ फकीर ने रे रवि मेरो ही जाने
अपने मन में रे गयो हरषाई।
पिंजरा की कील से चोंच मार रहो रे रवि मेरो ही जाने
अपनो दीन्हो रे जोर लगाई।
लोहे की कील चोंच से कट रही रे रवि मेरो ही जाने
खुदा आय के रे करी सहाई।
पिंजरा की कील बहुत मजबूत थी रे रवि मेरो ही जाने
बीस मिनट में रे कील कट जाई।
पट्टू की सोचै महल में रें रवि मेरो ही जाने
पिंजरा कटे की रे जान नहिं पाई।
फक्कड़ सुवा के रूप में उड़ गयो रे रवि मेरो ही जाने
कोई न जाको रें देख न पाई।
ऊंचे गगन में उड़ने लग रहो रे रवि मेरो ही जाने
अपने दीन्हे रे पंख फुलाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

उड़ल रे सुवा जाय रहो रे रवि मेरो ही जाने
  झारखंड में रे पहुँचो जाई ।
कुटिया में बैठे अमर गुरू है रे रवि मेरो ही जाने
  जो फक्कड़ को रे गुरु कहलाई ।
तोता के भेष में चेला देख लियो रे रवि मेरो ही जाने
  मन में ताज्जुब रे भयो अधिकाई
धूनी से गुरू ने राखा उठाय लई रे रवि मेरो ही जाने
  मन्त्र पढ़के दई चलाई ।
असली रूप में फक्कड़ आय गयो रे रवि मेरो ही जाने
  गुरू को दीन्हो शीश झुकाई ।
अमर गुरू तब बोलन लागे रे रवि रवि मेरो ही जाने
  किसने दीन्ही रे दुबरी बनाई ।
नहि कछु छिपानी कोई रे सुन फक्कड़ मेरे
  कैसे जाइ र झूठो पड़ जाई ।
इतनी सुनके फक्कड़ कह रहो रे सुन बाबा मेरे
  साँची तुमको रे देउ बतलाई ।
छोलक भया हमसे बड़ो है रे रवि मेरो ही जाने
  ताकी पटटमगढ़ से आई सगाई ।
सजके बरायत जग भियाखे से रे रवि मेरो ही जाने
  पटटमगढ़ में रे पहुंची जाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

राजी से व्याह करो नहि भैयाको रे रवि मेरो ही जाने
पट्टू खां ने रे करी लड़ाई ।
गुस्सा हुइ के छोअक भैया ने रे रवि मेरो ही जाने
पट्टू खां की र धुरक बधाई ।
श्यामा मालिन रन में आय गई र रवि मेरो ही जाने
अपनो दीन्हो र जादू चलाई ।
बैल बनाय लियो छोअक भैया को रे रवि मेरो ही जाने
हमको लीन्हो रे तोता बनाई ।
कला हमारी चली कोइ नहि र रवि मेरो ही जाने
जादू हमारो रे झूंठो पड़ जाई ।
बैल बने हैं छोअक भैया रे रवि मेरा ही जाने
रहें तेली को रे कोल्हू चलाई ।
रन में तोता हमको बनाय के र रवि मेरो ही जाने
पिंजरा में दीन्हो र बन्द कराई ।
सात दिना नहि खैबे को दीन्हो रे रवि मेरो ही जाने
रहो प्यास न से रे गलो सुखाई ।
जीवन की हम आस छोड़ दई रे रवि मेरो ही जान
खुदा को मन में रे लियो मनाई ।
खुदा ने बिनती मेरी सुन लई रे रवि मेरो ही जाने
पिंजरा में दीन्हों रे दर्श दिखाई ।
दुख में हमको धीरज बंधाय दियो रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बड़े प्यार से कही सुनाई ।
पिंजरा की कील चोंच से काटदेउ रे रवि मेरो ही जाने
सब विध करहो रे तुम्हरी सहाई ।
इतनी सुनके अपनी चोंच से रे रवि मेरो ही जाने
पिंजरा की दीन्ही रे कील उड़ाई ।
पट्टू खां सोवें अपने महल में रे रवि मेरो ही जाने
पिंजरा कटे की रे जान न पाई ।
पिंजरा से फौरन उड़के चल भये रे रवि मेरो ही जाने
झारखंड में रे गये आई ।
जोरूं हाथ करुं तेरी बीनती रे रवि मेरो ही जाने
अरज गरीबी रे सुनो की नाहीं ।
छोछक भैया की कैद छुड़ाय देउ रे सुन बाबा
संग में चलके रे करो सहाई ।
रन में पट्टूमसिंह को हराय देउ रे रवि मेरो ही जाने
उनकी लेवो रे मुश्क बधाई ।
श्यामा पे जादू अपनो डारके रे सुन बाबा
वाको देवो रे रन में हराई ।
पट्टूमचंद की लूट कराय लेउ रे रवि मेरो ही जाने
पट्टू खां को देउ उमे डराई ।
छोछक भैया को बन्ना बनाय लेउ रे रवि मेरो ही जाने
सातों भांवर रे देऊ डरवाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इतनी सुनके अमरा गुरू ने २ रवि मेरो ही जाने
कहे फक्कड से रे वचन सुनाई।
धीरज राखो अपने मनमें २ सुन बच्चा मेरे
सब विध तुम्हरी रे करो सहाई।
फक्कड के संग बाबा चल दियो २ रवि मेरो ही जाने
कंधा पे झोला रे लियो लटकाई।
आगे आगे अमरा गुरू चल दियो २ रवि मेरो ही जाने
फक्कड रहो रे पीछे जाई।
रात दिना की मंजिल करके २ रवि मेरो ही जाने
पट्टमगढ़ में रे पहुंचे जाई।
समर भूमि में जाय निहारो २ रवि मेरो ही जाने
फौजे पत्थर की रे परी दिखाई।
मन्त्र पढ़के अमर गुरूने २ रवि मेरो ही जाने
जादू अपनो रे दियो चलाई।
अमरा गुरू को जादू चल गयो २ रवि मेरो ही जाने
असली सूरत में रे मानुष बन जाई।
मरे मनुज जो रन में डारे २ रवि मेरो ही जाने
अमरा ने दीन्हो रे सबको जियाई।
अमर गुरू ने फक्कड बुलाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
कहन लागो २ वचन सुनाई।
तेली को घर कहाँ पे बन रहो रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हमको चलके रे देउ बताई।
इतनी सुनके फक्कड़ चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
तेली के घर में रे पहुँचे जाई।
बैल रुपमें छोड़कर कोल्हू चलाय रहे रे रबि मेरो ही जाने
गुरू अमरा ने रे देखो जाई।
तेली को देखके अमर गुरू ने रबि मेरो ही जाने
अपनो जादू रे दियो चलाई।
तेली को मेढ़ा जन्द बनाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
लियो छुड़क को रे मनुष बनाई।
मढ़ा लेके अमरा चल दियो रे रबि मेरो ही जाने
देवी की मठिया में रे दियो चढ़ाई
तेलिन निकली अपने द्वार को रें राव मेरो ही जाने
कुलवारे में रे देखो जाई।
बैल दिखानो नहि तेलिन को रे रबि मेरो ही जाने
तेली पाट पे रे नहि परो दिखाई।
इकदम हौला दिल में बैठ गयो रे रबि मेरो ही जाने
रोवन लागी रे आंसू बहाई।
जोर २ से रोय रही है रे रबि मेरो ही जाने
सब कोई पूछे ... मर्द लुगाई।
काहे तेलिन रोय रही हो रे सुन तेलिन मेरो
सांची २ हमको रे देउ बताई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इतनी सुनके तेलिन कह रही रे रवि मेरो ही जाने
हमरी सुन लेउ रे तुम चितलाई।
जंग सियालो एक शहर है र रवि मेरो ही जाने
छोछक राजा रे नाम कहलाई।
बनके बरना सज के बरायत रे रवि मेरा ही जाने
पद्मगढ़ में रे पहुंचो आई।
पद्ममसिंह की कुंवारी कन्या से रे रवि मेरो ही जाने
भाँवर डरिवे के रे खबर पठाई।
इतनी सुनके पद्ममसिंह ने रे रवि मेरो ही जाने
लियो छोछक को रे बौल बनाई।
हमरे पति को जल्द बुलाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
बौल को दीन्हो रे घर पठवाई।
कोन्हू चलिवे को हुकुम दे दियो रे रवि मेरो ही जाने
बौल को कोन्हू में रे दियो मचवाई।
आज पती मेरे नहीं दिखाय रहे रे रवि मेरो ही जाने
नहिं कोन्हू में बौला रे परे दिखाई।
तेलिन रोय रही अपने घर में रे रवि मेरो ही जाने
पद्ममसिंह ने रे खबर सुनपाई।
सिगर तन को होश भूल गयो रे रवि मेरो ही जाने
मुंह को गयो है र पान सुखाई।
पद्ममसिंह ने मन में सोच के रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इक हरिकारा रे लियो बुलाई।
पद्ममसिंह ने हुकम सुनाय दियो रे रवि मेरी ही जाने
रन को जावौ रे पता लगाई।
इतनी सुनके खोजा चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
रन को देखो रें नजर घुमाई।
देखके फौजें खोजा चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
पद्ममसिंह से रे कहे सुनाई।
घूरे पे फौजे आय रुकी है रे रवि मेरो ही जाने
ऊंचे पे झण्डा रे रहो फहराई।
इतनी सुनके पद्ममसिंह ने रे रवि मेरो ही जाने
अपनी फौजे रे जल्द सजाई।
भूरा हाथी पे हौदा धराय दियो रें रवि मेरो ही जाने
तापै बैठो रे जाय हरषाई।
समर भूमि में पहुंच गयो है रे रवि मेरो ही जाने
गज गर्ज के रें रहो बतलाई।
किसके कलेजे में बार जमे हैं रें रवि मेरो ही जाने
किसकी माता रे बाहर जाई।
इतनी सुनके छोछक आय गयो रे रवि मेरो ही जाने
मोटे स्वर से रे कहे सुनाई।
खैर आपनी जो तुम चाहौ रे रवि मेरो ही जाने
जल्दी देवो रे भवर डराई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इतनी सुनके श्यामा बुलाय लई रे रवि मेरो ही जाने
ताको दीन्हो रे हुक्म सुनाई।
श्यामा मालिन देर करी नहि रे रवि मेरो ही जाने
झोला से लीन्हों रे जादू उठाई।
अग्नि की पुरिया श्यामा लैके रे रवि मेरो ही जाने
फौज के भीतर रे दियो चलाई।
फौज के भीतर आगी लगाई रे रवि मेरो ही जाने
सूर भाग रहे रे जान बचाई।
फौज जरत गुरू अमरा देख लई रे रवि मेरो ही जाने
पानी की पुरिया रे दई चलाई।
पानी बरसो बड़ी जोर से रे रवि मेरो ही जाने
फौजै में आगी रे बुझ जाई।
आगी बुझतै श्यामा देख लई रे रवि मेरो ही जाने
पवन की पुरिया रे दई चलाई।
हवा चली है बड़ी जोर से रे रवि मेरो ही जाने
दियो पानी को रे तुरत सुखाई।
अमरा गुरू ने हवा को देख लियो रे रवि मेरो ही जाने
नाग की पुरिया रे दई चलाई।
नाग न आय के हवा खाय लई रे रवि मेरो ही जाने
लियो फौजन को रे डस खाई।
गरुड़ की पुरिया श्यामा ने लैके रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रन में दीन्हीं रे तुरन्त चलाई।
गरुड़ फौज में फैल गये हैं रे रवि मेरो ही जाने
लियेा नागन को रे छिन में खाई
गरुड़ देख लिये अमरा गुरू ने रे रवि मेरो ही जाने
विष्णु की पुरिया रे दई चलाई।
समर भूमि में विष्णु आय गये रे रवि मेरो ही जाने
गरुड़ सवारी रे तुरत बनाई।
बैकुन्ठपुरी में गरुड़ चले गये रे रवि मेरो ही जाने
श्यामा मन में रे डर जाई।
श्यामा पे कोई जादू रहो नहिं रे रवि मेरो ही जाने
ठाढ़ी २ मन में रे रही पछताई।
अमर गुरू ने झोला उठाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
श्यामा पै दीन्हों रे जादू चलाई।
काली नागिन तुरत बनाय दई रे रवि मेरो ही जाने
बीन बजाय के रे पकरी लाई।
जादू चलाय दियो पद्ममसिंह पे रें रवि मेंरो ही जाने
बकरा लीन्हों रे तुरत बनाई।
सब फौजन को राख बनाय दई रे रवि मेरो ही जाने
लियो पद्ममगढ़ को रे किला लुटवाई।
महलन घुसके अमरा गुरू गे रे रवि मेरो ही जाने
कन्या को लीन्हों रे तुरत बुलाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

न मोहि डाटो मेरे पिता ने रे सुन चाचा मेरे
कही न मोसे रे कछु भौंजाई।
न मोहि घालो दई मैंया ने रे सुन चाचा मेरे
न कहुँ भैंया रे लड़ो लडाई।
देखो सपने रात में रे सुन चाचा मोरे
फंसी मैं दुविधा रे नहिं जाय बताई।
मोहि कहवे में शरम लगत है रे सुन चाचा मोरे
बिना बताये रे रहो न जाई।
सपने में देखो एक कुवर है रे सुन चाचा मोरे
सूरत बांकी रे मन बस जाई।
तख्त हजारे पाँव बताय दियो रे सुन चाचा मोरे
रांझा अपनो रे नाम बताई।
जोरू हाथ करूं तेरी बीनती सुन चाचा मोरे
अरज गरीबी रे सुनो के नाहीं।
चौ जोरे हाथ करूं चौ बीनती सुन हीर दिवानी
अरज गरीबी रे कहै चौ नाहीं।
तख्त हजारे चले जाव तुम रे सुन चाचा मोरे
खत रांझे को रे दियौ गहाई।
इतनी सुनके फक्कड़ कह रहो रे सुन हीर दिवानी
राखौ मनमें रे धीर बंधाई।
अपने हाथ से पाती लिख दे रे सुन हीर दिवानी

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

खत राँझे को रे दोहौ गहाई ।
हीर ने कागज ले लियो हाथ में रे रबि मेरो ही जाने
कलम दवात रे लई उठाई ।
खुदा करीम को पहले लिख दियो रे रबि मेरो ही जाने
गाँव सियालो रे लिख जाई ।
छोछक नाम पिता को लिख दियो रे रबि मेरोही जाने
हीर ने लिख दियो रे पटवल भाई ।
मोय सपने में दियो मरोसे रे रबि मेरो ही जाने
जल्दी आयके रे देउ दिखाई
चिट्ठी पढ़ते जल्दी आय जाव रे रबि मेरो ही जाने
देर न करियो रे खुदा दुहाई ।
लिखके बन्द लिफाफा कर दियो रे रबि मेरो ही जाने
ऊपर से दई है रे मुहर लगाई ।
फक्कड़ हाथ में पाती दे दई रे रबि मेरो ही जाने
कहन लगी है रे हीर बाई ।
चिठिया दीजो राँझे वीर को रे रबि मेरो ही जाने
फिर तुम कहियो रे पीछे समझाई ।
सपने वादा तुमने कर दियो रे रबि मेरो ही जाने
अब जरा निशाना रे मोरे संग आई ।
चिठिया लैके फक्कड चल दियो रे रबि मेरो ही जाने
तख्त हजारे की सुध लगाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बारामासा—फक्कड़ चल दियो खुदा कमाई।
तख्त हजारे को लिया सूध लगाई।
रस्ता में खाय दही बूरो।
सात दिना चल तख्त हजारे को दोवि लियो धूरो।
आवत एक मर्द मिल जाय।
तख्त हजारे को पूछो जबही बनियो रहो बताय॥
तख्त हजारो बाग जाके कहत है रे सुन बाबा मेरे
चवस राजा रे जाके माहीं।
जोरू हाथ करूं तेरी बीनती रे रवि मेरो ही जाने
अरज गरीबी रे सुने के नाहीं।
चौ जारे हाथ करैं चौ बीनती रे सुन बाबा मेरे
अरज गरीबी रे कहै चौ नाहीं।
सुनो है रांझा तख्त हजारे में रे रवि मेरो ही जाने
ग्वाहि बताय दे रे हमारे ताही।
डोरी है झोली अली साहब पैं रे बाबा मेरे
खुदा नाम तो रे रट लाई।
रांझे संग में चुनुवां भतीजा रे सुन बाबा मेर
मोहन भैसी रे चले संग माही।
बन्शी भी बाजे प्रेम से रे सुन बाबा मेरे
ऐसो मरद दुनियां मेरे जन्मो हतु नाहीं।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रांझा वाय बरावत मिलि है रे सुन बावा मेरे
सांची तुमको रे दई बताई ।
इतनी सुनके फक्कड़ चल दियो रें रवि मेरो ही जाने
वनियाँ संग मैं रे चलो हरषाई ।
बरगद पै रांझे वीर ने रे रवि मेरो ही जाने
अपनी वंशी रे दई बजाई ।
भाग के गैया आय गई रे रवि मेरो ही जाने
वंशी की धुन रे सुन पाई ।
रांझा उतर के बैठ गयो है रे रवि मेरो ही जाने
वनियाँ तब ही रे दियो बताई ।
फक्कड़ रांझे के पास पहुंच गयो रे रवि मेरो ही जाने
सूरत देखी रे सकुहे जाई ।
जितनी बातें हीर बताय दई रे रवि मेरो ही जाने
सुधि फक्कड़ को रे सब आई ।
रांझे बीर की शक्ती देख लेउ रे रवि मेरो ही जाने
हीर ने हमको रे दई बताई ।
पहले दिन ब्यानी बछिया की रे रवि मेरो ही जाने
हमको देगी रे दूध पिलाई ।
तब जाने हम यही है रांझा रे रवि मेरो ही जाने
मेरी शंका रे मिट जाई ।
मनमें खुश हुइ फक्कड़ चल दियो रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बरगद पास में रे गयो आई।
रांझे वीर को फक्कड़ बुलाय रहो रे रवि मेरो ही जाने
सुनके रांझा गयो आई।
पाँच वेर परकम्मा कर के रे रवि मेरो ही जानें
फक्कड़ को दियो रे शीश झुकाई।
आशीर्वाद दियो फक्कड़ ने रे रवि मेरो ही जाने
जुग जुग जीयो रे वीर बलदाई।
एक बात हम तुमसे बूझ रहे रे रवि मेरो ही जाने
सांची सांची हमको रे देउ बताई।
रांझो कुमर नहिं मिलत है हमको रे रवि मेरो ही जाने
चहुँदिश हमने रे पता लगाई।
ढूंढत रे हार गये हैं रे सुन बच्चा मेरे
कहूं न हमको रे परो दिखाई।
इतनी सुनके रांझो कह रहो सुन बाबा मेरो
पहले हमको रे देउ बताई।
कौन गांव में मढ़ी तुम्हारी रे सुन बाबा मेरे
कौन सो कारज रे रहो अटकाई।
कौन दिसा से हुवा बाबा आमना रे सुन बाबा मेरें
कौन दिशा की रे सुरत लगाई।
जंग छिपाले से हुवा मेरा आमना रे सुन बच्चा मेरे
तख्त हजारे की रे सुरत लगाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रांझो मरद रहे तख्त हजारे में रे सुन बच्चा मेरे
कहां मिलोगे रे देऊ बताई ।
रांझो वीर है नाम हमारो रे सुन बाबा मेरे
सांची तुमको रे रहे बताई ।
मीठी मीठी बातें रांझो कह रहो रे सुन बच्चा मेरे
नशा बनाय देउ रे हम को आई ।
गांजा भी पीऊं भांग भी पीनदा रे सुन बच्चा मेरे
अफ़ीम भी खाऊं रे इक तोले मांही ।
करके नशा तो बाबा दंग होगयो रे रवि मेरो ही जाने
मोह बताय दे भोजन के माहीं ।
सात दिना को सफ़र करो है रे सुन बच्चा मेरे
भूख बहुत है रे रही सताई ।
महलन चलो हमारः संग में रे सुन बाबा मेरे
तुमको भोजन रे देउ कराई ।
आठ बरस से अन्न छोड़ दियो रे रवि मेरो ही जाने
दूध पियत है रे खूब अघाई ।
इतनी सुनके वंशी बजाय दई रे रवि मेरो ही जाने
सुन २ गैंया रे गई आई ।
कोरी गैंया दुहि रांझे ने रे रवि मेरो ही जाने
देख के कक्कड़ रे कहं सुनाई ।
इस गैंया को दूध नहिं पीवत रे सुन बच्चा मेरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रोग हमारे हुइ जाईं ।
कौन चाव जौ आऊं रे सुन बाबा मेरे
षट रस व्यंजन रे तुम्हें खवाई ।
दूध दुहौ तुम मेरें अगारी रे सुन बच्चा मेरे
जो नहिं गैंया रे कभी वियाई ।
अनब्यानी को दूध हम बच्चा पीवते रे सुन बच्चा मेरे
दूध जो लावौ रें ओसर के मांहीं ।
दौनी लैके रांझौ चलि दियेा रे रवि मेरो ही जाने
विद्या भी पलटी रे फक्कड़ के मांही ।
जेा गैंया दस सेर दूध दुधारी रे रवि मेरो ही जाने
नहि दूध उतारे रे वन के मांही ।
इतनी देखके रांझेा कहि रहो रे रवि मेरो ही जाने
पीर जों सुमिरे रे वन के माँही ।
इतनी अवाज तो राजा घर से सुन लई रें रवि मेरो ही
धुरवक्के से रे भजमत छाई ।
दौनी लैके ओसर तर बैठ भयो रे रवि मेरो ही जाने
दूध दुहो है रे ओसर के माहो ।
लैके दवतो फक्कड़ ढिंग आय गयो रें रवि मेरो ही जाने
तुरतहि वाको रे दियो पियाईं ।
जानि गौ फक्कड़ रांझो जही है रे रवि मेरो ही जाने
हसके तबही रे कहे सुनाईं ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

करामात तेरी बच्चा भारी है रे सुन बच्चा मेरे
सब विधि मैंने रे लियो अजमाई ।
जौन काम को तेरे ढिग आये हैं रे सुन बच्चा मेरे
साची तुमको रे दिहौं बताई ।
पाती निकारी तुरतहि फक्कड़ रे रवि मेरो ही जाने
राँझे के हाथ में रे दई गहाई ।
खुश हुइ चिट्ठी लई हाथ में रे रवि मेरो ही जाने
खोल के चिट्ठी रे पढ़ जाई ।
हीर के पिता लिखे हैं छोकड़ रे रवि मेरो ही जाने
जंग सियालो रे नगर कहाई ।
बरगद पर से चुनुआ भतीजो रे रवि मेरो ही जाने
अपनो मन में रे हंस जाई ।
खत को पढ़ रहो रांझे वीर हैं रे रवि मेरो ही जाने
चुनुआं जानत रे सब जाई ।
रांझो मन में बहुत खुशी भयो रे रवि मेरो ही जाने
नाम हीर को रे लिखो दिखाई ।
रांझो पढ़ लियो हाल है खत को रे रवि मेरो ही जाने
अपने मनमें रे सोंचे अधिकाई ।
जंग सियाले को जो नहि जावे रे रवि मेरो ही जाने
हीर देयगो रे प्रान गमाई ।
राँझे ने कह दई मत करो चिन्ता रे सुन बाबा मेरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रहो फक्कड़ को रे बहु समझाई ।
आज रहौ मेरे तख्त हजार में रे सुन बाबा मेरे
सब बिधि करिहौ रे तेरी सेवकाई
भोरहि चल है संग तुम्हारे रे सुन बाबा मेरे
साँची सांची तुमको रे रहे बताई ।
फक्कड़ चलके खिरक में आय गयो रे रवि मेरो ही जाने
रांझे ने दीन्हों पलंग बिछाई ।
आधी रात में फक्कड़ चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
ओढ़ के चादर रे पांव फैलाई ।
भोर भयो फक्कड़ चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
जंग सियाले की रे सुरत लगाई ।
रांझो अपनी गैया छोड़ के रे रवि मेरो ही जाने
बन को चल भयो रे मन हरषाई
एक हाथ में सोटा जो लियो रे रवि मेरो ही जाने
दूजे हाथ में रे बंशी सुहाई ।
खिरक से गया चल भई है रे रवि मेरो ही जाने
जाय झलूमी रे बनी के मांही ।
कागज निकारो तब रांझे ने रे रवि मेरो ही जाने
बाँचत लागो रे मन हरषाई ।
देखके चिटिया चुनुवा कह रहो है रे सुन चाचा मेरे
चाची से कह दुंगो रे महल के मांही ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सिर पैं पगड़ी रांझे ने बांध लई रे रवि मेरो ही जाने
पाय में पनही रे पहनी हरषाई ।
जंग सियाले को रांझा चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
बंशी अपनी रे लई है उठाई ।
आगे आगे राँझो जाय रहो रे रवि मेरो ही जाने
पीछे २ चुनुवा रे रहो जाई ।
रांझे ने घूर निहारो रे रवि मेरो ही जाने
चुनुये देख के रे गुस्सा छाई ।
करीं धौंस दई चुनुवा को रे रवि मेरो ही जाने
मेरे संग कहां को रे चलो आई ।
लौट खिरक को जाव भतीजे रे सुन बेटा मेरे
घर में मौंजे रे करो जाई ।
कहाँ को चाचा जाय रहे रे सुन चाचा मेरे
सांची रे हमको रे देउ बताई ।
तौ चलो हमको अपने संग में रे सुन चाचा मेरे
रहे हैं तुमको रे अरज सुनाई ।
संग तुम्हारो हम नहिं छुड़िये रे सुन चाचा मेरे
रहें चाहे जिन्दा रे या मर जाई ।
निस दिन सेवा तुम्हरी करि हो रे सुन चाचा मेर
तुम्हरे अपने में रे करो सहाई ।
जहां पसीनो तुम्हरो गिर जाय रे सुन चाचा मेरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वहं हम दीई रे खून बहाई।
इतनो सुनके रांझा कहि रहो रे सुन बेटा मे
घर को जाओ रे छेड़िठई,
हरगिज लौटे न हम घर को रे सुन चाचा मेरे
चाहे मेरी गरदन रे देउ उड़ाई,
रांझे के तन में गुस्सा आय गई रे रबि मेरो ही जाने
हाथ में लीन्हों रे छड़ा उठाई।
लाल २ डोपा गुलाबी नैन पर गये रे रबि मेरो ही जाने
मार २ काची खाल कढ़ाई।
कमची तोड़ो असल गुलाब की रे रबि मेरो ही जाने
मार मार कपची रे देह सुजाई।
चुनुवां के तन में कमचो मार रहो रे रबि मेरो ही जाने
जाके रहो है रे खून चुवाई।
तरस न लावे रांझा मन में रे रबि मेरो ही जाने
चुनुवां रोवे रे आंसू वहाई।

—※—

❀ सातवो भाग रांझे गवन ❀

जेरू हाथ करूं तेरी बीनती रे सुन चाचा मेरे
अरज गरीबी रे सुने के नाहीं।
अब मेरी जान बकस देउ चाचा रे सुन चाचा मेरे
बने कसाई रे दया न आई।
बिनती करे पैं जो कुइ मारे रे सुन चाचा मेरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वौ रन नर्क में रे परैं वो जाई ।
जल्दी बेटा घर को जावो रे सुन बेटा मेरे
जिद छोड़ि देउ रे रहे समझाई ।
इन हाथन से चचा दूध पिलायो रे सुन चाचा मैं
इन हाथन से रे खाल उढ़ाई ।
इन हाथ से मोहि गोद खिलायो रे सुन चाचा मेरें
सुवरन काया रें मेरी दुखाई ।
ल०—घर को लौटो चुनुवा भतीजो स्याले को रांझे जाई रे
कानपुरी को जूती पहिरो सिरपे पगड़ी सुहाई रे
कांधे पै लटके लोटा डोरी ऊपर लाल रजाई र
बद्री शर्मा कहै कनवज के रांझे ने वंशी बजाई रें
घर को लौटो चुनुवा भतीजो रें रबि गोरो ही जा
रांझा रहो है रें स्याले जाई ।
हाँक दई गैया बनी के बीच ते रे रबि गोरी ही जाने
जाय झलमी रें खिरक के माही ।
गैया बांध खिरक में दीन्ही रे रबि गोरो ही जाने
कुठरी में बैठी र सेती माई ।
चुनुवा को रोवत सेती देख लियो रे रबि गोरो ही जाने
बेटा को लीन्हो रे छाती चिपटाई
कौने बेटा तोहि को मारो है रे सुन बेटा मेरे
कौने गारी रें तोहि सुनाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दुख कौन सौ तोपैं पर गयो रे रवि मेरो ही जाने
कैसे बदन मैं रे छाई मुरझाई।
घाम जो पड़ती कटीली ज्यार की रे सुन अम्मा मेरी
मारे घाम के रे बदन मुरझाई।
हाथी फिरायके बुढ़िया नारी देखती रे रवि मेरो हीजाने
क्यों सुवरन काया रे तेरी नसाई।
मैं तो चढ गयो भूरी भैंस पे रे सुन अम्मा मेरी
रिगसत डोले रे हसि के मांही।
आँख दीन्हीं बेटा मेरे देखवे को रे सुन बेटा मेरे
हिंसबिरों का बेटा रे लखो कि नांहीं।
गाय बो फैली अम्मा माली के खेत में रे सुन अम्मा
बा माली ने रे मेरी खाल उड़ाई।
साँच बतायदे बेटा लाड़ले रे सुन बेटा मेरे
झूंठ चों बोले रे महल के माँहा।
राँझो मरद तेरो चाचा संग में रे सुन बेटा मेरे
तज माली ने रे तेरी खाल उड़ाई।
जोरू भी हाथ करूं तेरी बीनती रे सुन माता मेरी
अरज गरीबी रे सुन के नाहीं।
चौ जोरे हाथ केरे चौ बीनती रे सुन बेटा मेरे
अरज गरीबी रे कहे चौ नाही।
रैन भी रहेगा फसल उठ जायेगी रे सुन अम्मा मेरी

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सुबह ही चाचा रे रहन को नाही।

पढ़ परवाना दिवानी हीर को रे सुन अम्मा मेरी
जंग सियाले की रे सुरत जगाई।

चुनुर्त्रा की सुनके सेती चल गई रे रवि मेरी ही जाने
जाय झलमी रे महलन के माही।

जोरू भी हाथ करू तेरी बीनती रे सुन सासुल मेरी
अरज गरीबी रे सुने के नाही।

चौ जोरे हाथ करे चौ बीनती रे सुन बहुअर मेरी
अरज गरीबी रे कहे चौ नाहीं।

समरथ बेटा तेरो जात है रे सुन सासुल मेरी
जाय समझाय ले रे कचेहरी माही।

चिट्ठी भी आई जंग सियाले रे सुन सासुल मेरी
देवर रांझो रे रहो जाई।

जंग सियाले में छोड़क अहीर है रे सुन सासुल मेरी
बाकी छोरी रे हीर बाई।

रांझे दिवर चौ भई दिवानो सुन सासुल मेरी
फक्कड़ बाबा रे दियो पठाई।

तख्त हजारे में फक्कड़ आय गयो रे सुन सासुल मेरी
चिट्ठी रांझे को रे दई है आई।

पढ़के पाती रांझे देवर ने रे सुन सासुल मेरी
सोचके मन में रे लियो ठाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हीर से मिलबे को रांझो जाय रहो रे सुन सासुल मेरी
जंग सियाले को रे सुरत लगाई ।
इतनी भी सुनके बुढ़िया चल गई रे रबि मेरो ही जाने
जाय मकारी रे बंगला के माही ।
गोदी में लै लियो रांझे वीर को रे रबि मेरो ही जाने
छाती से लीन्हो रे तुरत लगाई ।
चूमे चाटैं और पुचकारें रे रबि मेरा ही जाने
रांझे वीर को रे रही समझाई ।
आठ महीना राखो गरभ में रे सुन बेटा मेरे
नौवे महीना रे तोय हवा लगाई ।
पाल पोस के दरख्त कर दियो रे सुन बेटा मेरे
अब हो न बैठी रे तेरी छाई ।
फूल लगो तो फल अब ही नहिं लागे रे सुन बेटा मेरे
फल की बिरिया रे तैंने आंख दिखाई ।
लाल २ डोरा गुलाबी नैना परिगये रे रबि मेरोही जाने
भड़रु २ के रे रांझा बतलाई ।
दस पाँच बिरवा माली सींचता रे सुन माता मेरी
इक दुई बिरवा रे उखड़ क्यों न जाई ।
चार छै बेटा तेरे सामने हैं रे सुन माता मेरी
रांझा मरद तो रे तैंने जन्मो ही नाही ।
लाखों तारे आसमान में है रे सुन बेटा मेरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

चन्दा बिना तो ? सूनो दिखलाई ।
लिख परवानो आयो सिखाले से रे सुन माता मेरी
अब रुकने को रे हरगिज़ नाहीं ।
इतनो भी सुनके बुढ़िया चल दई है रे रवि मेरो ही जाने
जाय झलूमी रे महल के मांही ।
ऐतो के ढिंग जाय क बुढ़िया रे रवि मेरो हीं जाने
बिलख २ के रे रहो बतलाई ।
बारो होतो तो बर जाती रे सुन बहुअर मेरी
स्यानो बेटा रे बरजो न जाई ।
कागज होतो तो लेती बांच के रे सुन बहुअर मेरी
करम किसी से रे बंचते हैं नाहीं ।
कुआँ जो होतो लेती पाट के रे सुन बहुअर मेरी
समुद्र किसी पे रे पटता नाहीं ।
संसुल की जब सेनी सुन लई रे रवि मेरो ही जाने
लाचार भई है रे महलन के माही ।
खुदा मनाय के सेती चल दई रे रवि मेरो ही जाने
जाय झलूमी रे बंगला के माही ।
१०-कंधा पे धर लाल रजाई कहां देवर रहे जाई रे
इश्क सतावे जो तोहि देवर तुमको देय बतलाई रे
छँओ भावी खड़ी सामने करो मनमानी अघाई र
जो तेरे दिल में ब्याह करन की दीही ब्याह करवाई र

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पीहर में इक बहिन हमारी नांहे भई अभी सगाई रे
चलो अठखेड़ा संग हमारे देउ निका पढ़वाई रे
हीर के चक्कर में फंस देवर जान तुम्हारी जाई रे
भूखी सिंहनी बाको जानो लेगी तुमको खाई रे
कौनसी खूबी देख लई है देवर गये लुभियाई रे
कंचन घड़ा सुनहरी रंग में जहर भरो दिखलाई रे
ऐसो हीर हुस्न को जानो साँची कही सुनाई रे
बन बैरागी गयो तू देवर अब क्या दिल में आई रें
कई बेर तेरी शादी आई टीका दियो लौटाई रें
लौट चलो तुम संग हमारे रही तुम्हे समझाई रे
महलन भीतर बनी तिदुवारी पलका देउ बिछवाई रे
मनकी इच्छा पूरी कर लेउ खड़ी तुम्हारी भौजाई रे

जिन सेजन पे भैया पौढ़ता है रे सुन भाबी मेरी
उन सेजन पे रे चढ़ना मुनासिब नाही।
ब्याह कर लो चल पंजाब को रे सुन देवर मेरे
ब्याह कराय दे रे बहिन मैं जाई।
छोटी २ लागे बहिन भतीजी रें सुन भावी मेरी
बड़ी २ लागे रे वो धरम की माई।
इतनी भी सुनके भाबी कह रही है रे सुन देवर मेरे
कही मानले रे कचेहरी माही।
काम बघेरो मेरे मति करे रे सुन देवर मेरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

काग बसेरो रे महलन के माहीं।
लश्कर में से मति देवर निकस त रे सुन देवर मेरी
सुनो लगत है रे समर के माही।
जंग सियालो भावो शहर है रे सुन भावी मेरी
जन्म लियो है रे अहीर के माहा।
चिट्ठी भी आय गई जंग सियाले से रे सुन भावी मेरी
चिट्ठी भी दीन्ही रे फक्कड़ ने आई
बाँच के पाती में दंग है गयो रे सुन भावी मेरी
अब रुकने को रे मैं हरगिज नाही।
हीर जिगर में बस गई रे सुन भावी मेरी
अब मानूं नहिं रे तेरी भौजाई।
रत से हटे मेरी भावी शरमा रे सुन भावी मेरी
उल्टो लो रे कहं जाय समाई।
दे के धक्का रांझो चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
दिल पत्थर को रे लियो बनाई।
बंगला से भावी चल भई है रे रवि मेरो ही जाने
बहुत निराश भई रे गैल के माहा
रांझो दे धक्का चल दीयो। सबसे मोह बिसार के
दिल पत्थर कर लीयो। चुनुवा बछरा सो चिल्लाय।
नहिं छोड़ूं तेरी संग पिछारी चाहे खाल लेउ खिंचवाय
रांझेके गुस्सा है आई। हाथपैर दोउ चुनुवाँ के बांधे दियो

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

नोम लटकाई। चुनुआ कहो जोर चिल्लाय। हाथपैर मेरे खोलदे चाचा अब हम घर को जाय। चुनुये दीन्यो है तब खोल। जंग सियाले को रांझो चलमयो खुदाग्रहो बोल। रांझे ने वंशी नौ लई है रे रवि मेरो ही जाने

तख्त हजारे की परकम्मा लगाई।

दे परकम्मा रांझो चल दियो है रे रवि मेरो ही जाने

जंग सियाले की रें सरत लगाई।

रात दिना की मजिल कर रहो रे रवि मेरो ही जाने

बनखड रांझे को रे मिल जाई।

दीठो फकड़ खिल गयो है रे रवि मेरो ही जाने

धूनी लग रही र बनी क माहीं।

हाथ जोर क रांझो कह रहो र सुन बाबा मेर

बिनती मेरी र सुने के नाही।

पलक उठाये बाबा देखतो है रे रवि मेरो ही जाने

बच्चा कहां से आए र बनो के माही।

दे २ भभूती मिलाय ले बाबा भेष में र सुन बाबा मेर

नाही सराफू र भस्म है जाइ।

सखा है जाना जमी का लेटना र सुन बच्चा मेर

कठिन फकीरे सधेगी नाहीं।

कौन दिशा से हुवा तेरा आमना सुन बच्चा मेरे

कौन दिशा की रे सुरत लगाई।

तख्त हजारे से हुवा मेरा आमना रे सुन बाबा मेरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जंघ सिवाले को रे सुरत लगाई ।
जहां से आया वही को लौट जारे सुन बच्चा मेरे
शोच मरेगी रे तेरी बुढ़िया माई ।
इतने दिनों से पैदा किया है रवि ने रे सुन बाबा मेरे
माता पिता तो रे देखे नाहीं ।
दै दे भभूती मिलाय ले बाबा भेष में रे सुन बाब मेरे
नहीं सराफ रे भस्म है जाई ।
धोको भो देके फक्कड़ चलिदियो र रवि मेरो ही जाने
भीतर घुसगयो रे गुफा के माहि,
देख न पैड़ो शंभो कह रहो है रे रवि मेरो ही जाने
बाबा न आयो रे भभूती के मांही ।
लख २ पैड़ो वहांसे चल दियो है रे रवि मेरोही जाने
द्वारे पहुंचो रे गुफा के माही ।
सहसमन पटिया लगरही दरवाजे पे रे रवि मेरोही जाने
रांके पे पटिया रे हटने की नाहीं ।
ठाड़े २ सुमिरे सरवर पीर को रे रवि मेरो ही जाने
अजमत भेजो रे हमारे ताही ।
इतनी अवाज तो रोजा बरछे सुनलई रे रवि मेरोंही जाने
धुरमक्के से रे अजमत आई ।
बाये पैर से ठोकर मार दई रे रवि मेरो ही जाने
भारी पटिया रे हट जाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पटिया तोर के भीतर धस गयो रे रवि मेरो ही जाने
रहो ढूढ है रे गुफा के माही।
मिल गयो फक्कड़ राँझे वीर को रे रवि मेरो ही जाने
बाँह पकर लई रे झट जाई।
दे दे भभूती मिलाय ले अपने भेष में रे सुन बाबा मेरे
ऐसे माँरू रे देउ गर्द उड़ाई।
डर के मारे फक्कड़ उठ परो रे रवि मेरो ही जाने
राँझे के ढिंग में रे गयो आई।
राँझे के कान पकर लियो रे रवि मेरो ही जाने
कान फूंक दिये रे मन्त्र बताई।
कान फूंक दिये वादिन जोगी ने रे रवि मेरो ही जाने
जोग भी दे दियो रे बनी के मांही
फक्कड़ के संग राँझो चल दियोहै रे रवि मेरोही जाने
जंग सियाले की रे सुरत लगाई।
रात दिना की मंजिल कर रहे रे रवि मेरो ही जाने
चरत मवेशी रे जंगमगढ़ की पाई।
सोच समझ के फक्कड़ मन में रे रवि मेरो ही जाने
अपनो लीन्हो रे भेष छिपाई।
चहूं ओर को राँझो देख रहो रे रवि मेरो ही जाने
कहूं न फक्कड़ रे परो दिखाई।
राँझो सुमिरे अपने वीर को रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

करो पिछारी रे खुदा मनाई।

भला वनके मैंझिन में डोल रहा रे रबि मेरो ही जाने

राँझे ने फक्कड़ की रे पूंछ दवाई।

फक्कड़ के पीछे रांझो पड़ि गयो रे रवि मेरो ही जाने

पीठ में दीन्हो रे सोटा जमाई।

फक्कड़ की नहि पेश परी है रे रबि मेरो ही जाने

जाने हाय भरे की रे जीभ फैलाई

व्याकुल हुइ के फक्कड़ बाबा रे रवि मेरो ही जाने

रहो रांझे को रे तुरत बुलाई।

हाथ जोर के बीनती कर रही रे रबि मेरो ही जाने

हमरी सुन लेउ रे रांझे चितलाई।

—※—

※ असली पुराना हीर रांझा १२ भाग ※

हीर रांझा जिसकी कि गत वर्षों से आपको तलाश थी छपकर तैयार है, जिसे रोगी पशुओं के सामने गाने से तुरन्त आराम होता है। कीमत ३) रु० डाक खर्च १)५० अलग।

पता—दीपचन्द बुकसेलर, नयागंज हाथरस। यू० पी०

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मन्त्र--तन्त्र—यन्त्रों वाला पुराना रत्न कौतुक भण्डार

❀ असली महा इन्द्रजाल ❀

प्रत्येक नर नारी के मुख पर यही है कि अब असली प्राचीन हस्त लिखित इन्द्रजाल नहीं मिलता, लेकिन हमने बड़ी ही महनत से बड़े २ महात्मां, साधुओ की सेवा के पश्चात् हस्त लिखित कारी प्राप्त करके जन कल्याण के लिए इसपुस्तक को तैयार किया है, जिसमें बीसा मन्त्र, घरों बाधा. काली, महाकाली. दुर्गादेवी, महामाया. हनुमान, सबके मन्त्र क्षणमात्र में ही सिद्ध प्रदान करने वाले दिये हैं। इसके अलावा वशीकरण विद्या के मन्त्रों तन्त्रों को सिद्ध करना, चाहेजिस स्त्री पुरुष को वशीभूत कर मनचाहा काम लेना. यक्षणी साधन, भूत विद्या. आकर्षण सुरमा, वशीकरण तिलक करामाती ताबीज बनाने की क्रिया मुकद्दमे में जीत. सर्प; बिच्छू का बिष उतारना, ठोंट के द्वारा बिमा-रियों का इलाज इत्यादि बातों का पूरा विस्तार दिया है। १२०० पैज की सचित्र व सजिल्द पुस्तक का मूल्य २५ डाक खर्च माफ पुस्तक मंगाने के लिए ५) पेशगी मनीआर्डर भेजें।

इन्जेक्शन गाइड

इस पुस्तक में हर प्रकार के इन्जेक्शन लगाने के तरीका व उसके साथ काम में आने वाली वस्तुयें। इन्ट्रा वीनस इन्जेक्शन, इन्ट्राडर्मल, हाइपोडर्मिक अथवा सब केल्यूटेनिस, इन्ट्रामेडिकेल अथवा इन्ट्रास्पाइनेस आदि की जानकारी व ये इन्जेक्शन बाजार में किन किन नामों से बोले जाते है व मांगे जाते है व कौन २ से इन्जेक्शन किन किन रोगों में काम आते है तथा इनसे क्या क्या फायदे है व इनके लगाने के बाद जो प्रति क्रियाऐ होती हैं और उनका उपचार आदि दवाइयोंका बिस्तार पूर्वक वर्णन है। साथ ही आयुर्वैदिक इन्जेक्शन व गुण, सीरम चिकित्सा, वेक्सीन चिकित्सा, बिटामिन चिकित्सा डाक्टरी चिकित्सा आदि की पूरी जानकारी दी गई है जो बहुत सा रुपया खर्च करने के बाद भारत के बहुत ऊंचे लेखक राजेन्द्रकुमार दीक्षित द्वारा तैयार कराई गई है। कीमत ५) डा० ख० १)५०

पता—दीपक ज्योति कार्यालय हाथरस (उ० प्र०)

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बड़ा मैडीकल गाइड

डाक्टर व डाक्टरी सीखने वालों के लिए यह उच्च श्रेणी की पुस्तक है। इसमें औरत, मर्द, बच्चे आदि के रोगों को देखने के तरीके व उनका इलाज कैप्सूल व टेबलिट्स तथा डाक्टरी मिक्चर आदि बहुत सी दवाइयों द्वारा दिया गया है तथा दाद, खाज, खुजली जुकाम, खाँसी, कफ शक्कर का रोग, स्वप्न दोष, मासिक धर्म व कठिन से कठिन रोगों का इलाज अच्छे प्रकार से दिया गया है। साथ ही नये कैप्सूल व गोलियों के नाम व किन २ रोगों में ये काम आती है यहत है ही हैं। साथ ही मरहम पट्टा तथा उसके रोगों का भी इलाजभौखाथ भोजन का महत्व फलों का महत्व और इनको अच्छी प्रकार से उपयोग में लाने के तरीके भी दिये हैं प्रत्येक मनुष्य क यह पुस्तक रखना आवश्यक है। की० ५) डा० ख० १)५ नाड़ी ज्ञान तरंगिनी मू० ४) घर में वैद्य बड़ा मू० ५) कम्पाउन्डरी शिक्षा मू० ४) आयुर्वेद चिकित्सा मू० ३)५० बाल रोग चिकि० । मू० २)२५ घरेलू इलाज मू० ३) डाक खर्च अलग।

नोट—२ पुस्तक १ साथ मगाने पर डाक खर्च कम लगेगा।

सचित्र करामात

इस पुस्तक में योग विद्या के समस्त अङ्ग, मैस्मरेजम द्वारा दूसरे मनुष्य का रहस्य जानकर दूर देश की बात को एक ही स्थान पर बैठे हुए क्षण में जान लेना, गढ़ा हुआ धन देखना पशु पक्षियों की बोली पहचानना, अन्तर्ध्यान होना, बिना औषधि रोगों की चिकित्सा करना, भूत प्रेत आदि को बुलाना, मृतक आत्माओं से बात चीत करना, आदि ऐसी २ जादूगरी है जिसे देखकर आप भी दंग रह जाय। साथ ही। मन्त्र, तन्त्र, वशीकरण आदि का सविस्तार पूर्वक वर्णन किया है की० ४) डा० ख० १)५०

सांवरी तन्त्र (सेवड़े का जादू)

अगर आप तान्त्रिक विद्या में विश्वास रखते है तो हमारे द्वारा प्रकाशित पुस्तकें सावरी तन्त्र अवश्य मंगायें। इस पुस्तक में ८ सिद्धियां है। १—वशीकरण विद्या २—आकर्षण विद्या ३—सिद्धि ४—कायाकल्प विद्या ५—यक्षणी सायन। ६—भूत विद्या ७—ओझाविद्या ८—यन्त्र मन्त्र और तन्त्र विद्या। यह विद्या ऐसी है यदि विधिपूर्वक बय तो पूरा २ अब भी असर करती है लेकिन सिद्धकर्त्ता पर निर्भर है। की० ४) डा० ख० १)५०

पता—दीपचन्द बुकसेलर नयागंज हाथरस। यू० पी०

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सचित्र बूटी प्रचार बड़ा

यह वैद्यक ग्रन्थ स्वर्गबासी महात्मा महन्त सुखराम दासजी ने लिखा है। इसमें सकड़ों रोगों के बहुत ही सुगम इलाज दिए हैं। इस किताब के होने से साधारण रागों में वैद्य और हकीमों के पास दौड़ने को आवश्यकता नहीं रहतो है, इन सब बातों के अतिरिक्त जङ्गल की जड़ी बूटियों को पहचान बहुत सरल लिखो है, व औषध प्रस्तुत करने की प्रणाली भी विधिपूर्वक लिखी है, जड़ी बूटियों से इस तरह का इलाज इस किताब में दिया है, तथा प्रत्येक जड़ी बूटी के ऐसे सुन्दर चित्र दिए हैं. मानो असल को खीच दिया हो. इस किताब से साधारण पुरुष भी अच्छा वैद्य बन सकता है। पुस्तक के अन्त में कोष्ठी यन्त्र आदि अनेक मन्त्रों के चित्र भी दिए हैं। ऐसे अपूर्व ग्रन्थ की की. केवल ४ ५० डा० ख० १)५० बाल रोग चिकित्सा की. २); नाड़ी ज्ञान तरङ्गिणी की. ४)५० स्त्रीरोग चिकित्सा की. २)५०, कम्पाउन्डरी शिक्षा की. ५) घरेलू इलाज की. २)५०, दुग्ध कल्प चिकित्सा २) डा. ख. अ. लगेगा।

कौआ तत्र अर्थात (काला जादू)

[भविष्य का हाल बताने वाला संसार भरका माना हुआ पक्षी]

यह असली किताब भारत, पाकिस्तान तो क्या ससार भर के किसी भी पुस्तकालय से नहीं मिल सकती। परिन्दे कौवे से बड़ी बड़ी अनोंखी भविष्य की बातें मालूम होती हैं, कौआ तत्र के कुछ वशाकरण प्रयोग जैसे कि मन चाही स्त्री से शादी कराने का तत्र लोगों का दृष्टि से गुप्त रह कर सबको देखना परन्तु स्वयं किसी की नजर न आना जमीन में गड़ा धन मालूम करना, चोर का पकड़ने का अमल आदि ऐसे यन्त्र जिनसे मनुष्य आने वाली मुसाबतों से बच सकता है. इसी के द्वारा मनुष्य की शादी हो जाती है। गुमशुदा या परदेश गया हुआ आदमी शीघ्र वापिस आ जाता है, आदि सैकड़ों तरह के उत्पन्न प्रयोग हमारी पुस्तक में मिलगे अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है। मू० ४)५० डा० ख० १)५०।

पता—दीपचन्द बुकसेलर नयागंज हाथरस यू० पी०

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

❀ आठवाँ भाग हीर रांझा ❀

चादर की नाव
उर्फ
✻ सत की विजय ✻

दोहा–चंड मुंड सहारनी नल की करी सहाय।
बद्री कवि अज्ञान की देवहु इल्म सिखाय॥

राँझे वीर तुम हमको छोड़ देउ रे सुन रांझे मेरा
घर को चल दें रे तुरत खिंदाई।
रांझे ने छोड़ दियो फक्कड़ को अपने भेष में गयो अ ई
जंग सियाले जाय रहो है रांझे को लीन्हो संग खिदाई
राह में पड़ो नगर इक भारी मरे पशू तहं परे दिखाई
राँझो देख ताज्जुब भारी रहो वर खियन से बत ाई
कैसे मर रहे पसू नगर के हमसे कहो समझाई
रांझे से तब बोले वरखिया तुमको सांची कहें सुनाई
कालवलो सब नगर के खाये पशु एक न बच पाई
कौन बिमारी पहले आ देउ वरखिया सांच बताई
इतनो सुनके रांझे वीर को रें रवि मेरो ही जाने
तबहि बरखिया रे कहै सुनाई।
मुंह नीचे कर कुत्ता रोवे रे रवि मेरो ही जाने
इसी से हमको रे ताज्जुब अ ई।
और तमाशा नहिं देखो हमने रे रवि मेरो ही जाने
आंखिन देखी कही सुनाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अबकी कुत्ता जो कहुं रोबे रे रवि मेरो ही जाने
तब ही हमको रे दियो बताई।
कुत्ता को धर भेष बीमारी रे रवि मेरो हीजाने
पशुअन के ढिग रे गई आई।
रांझे बीर ने बीर छोड़ दियो रे रवि मेरो ही जाने
बीरन कुत्ता को रे लियो दवाई।
कुत्ता को भेष बिमारी छोड़ दियो रे रवि मेरो ही जाने
तुरत बिल्ली रे बन जाई।
रांझो सुन्दर कुत्ता बन गयो रे रवि मेरो ही जाने
रांझे ने बिल्ली रे पकरी जाई।
बिल्ली रूप बिमारी छोड़ दियो रे रवि मेरो ही जाने
चूहे को लियो रे भेष बनाई।
रांझो बिल्ली झटपट बन गयो र मेरो ही जाने
चूहो को जन्दो र झपट लगाई।
रांझे ने पकड़ बीमारी लई है, र रवि मेरो ही जाने
तब रूप बदल के रे मछली बन जाई
कूद [redacted] पानी में गई अन्दी रे रवि मेरो ही जाने
गहर गढढा में र गई छिपाई।
रांझो झटपट बगुला बन गयो रे रवि मेरो ही जाने
घुस गयो पानी में र भय नहिं खाई
अपनी चोंच से ढूंढत डोले प रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मछली को ढूंढो रे तब जाई।
बीमारी तब जल से निकर के रे रवि मेरो ही जाने
पवनी बनके रे उड़ जाई।
राँझो तब बन बाज गयो रे रवि मेरो हो जाने
तोती को पंजा में रे लियो दबाई।
फिर छल कर बीमारी रे रवि मेरो ही जाने
पंजा में र छुट जाई।
पृथ्वी ऊपर गिरी आयके र रवि मेरो ही जाने
कारी नागिन रे बन जाई।
देखके बरूआ रांझा बन गयो र रवि मेरो ही जाने
मीठो बानी रे बीन बजाई।
बीन मजावत नागिन आय गई रें रवि मेरो ही जाने
पकरी नागिन र राँझे ने जाई।
नागिन डरके तबहि बोल रही रे रवि मेरो ही जाने
मेरी सुन लेउ रे तुम चिल्लाई।
जोरूं हाथ करुं तेरी बीनती रे सुन राँझे मेरी
अरज गरीबी रे सुने के नाहीं।
जो जोरे हाथ करे चौ बीनती रे सुन राँझे मेरी
अरज गरीबी रे कहै चौ नाहीं।
अब तुम जिन्दा हमें छोड़ देउ रे रवि मेरो ही जाने
अहसान तुम्हारो रें भूले हम नाहीं।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इतनी सुनकै रांझो कह रहो रे रवि मेरो ही जाने
मेरी सुनलेउ रे तुम चितलाई।
गांव तबाही तुमने कर दई र रवि मेरो ही जाने
पशू मार दिये रे तरस न आई।
अब तुम संग हमारे चलके रे रवि मेरा ही जाने
मरी मवेशी रे देउ जियाई।
इतनी सुन बीमारी बोल रही रे रवि मेरो हो जाने
हम मरी मवेशी रे दिहै जियाई।
राझे ने तब छोड़ बीमारी दई है रे रवि मेरो ही जाने
पहले बीमारी से रे कौल कराई।
मरीं परी थी जितनी मवेशी रे रवि मेरी ही जाने
बीमारी ने तुरतहि रे दई जियाई।
रांझे वीर को नाम सुनत ही रे रवि मेरो ही जाने
कबहुँ रोग नहिं रे ढिग आई।
रांझो फकर दोनों चल दिये जरा न देर लगाई रे
थोड़ी दूर जब आगे बढ़गौ छोरी मिहरनकी इक आई रे
रांझे को फिर अपने महल में फौरन गई लिवाई रे
मा को जाओ भैंग बनाओ भोजन दिये कराई रे
बहू अपने घर परदेशी हमको लिखो बुलाई रे
इतनी सुनके रांझो कह रहो रे रवि मेरो ही जाने
हमरी सुनलेउ रे तुम चितलाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

माँ आई बहिन मानि हौ रे रवि मेरो ही जानें
कसम गंग की रे कही सुनाई ।
जमी पै जिन्दा जब तक रहिहै रे रवि मेरो ही जानें
भात तुमको रे दीहौ भाई ।
विदा मांग के महल से चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
रांझो रहो है अगारी जाई ।
रात दिना की मंजिल करके रे रवि मेरो ही जाने
कैवम न दिया रे कहीं आई ।
छोटो सो नौका मल्लहा हार के सुन महला मेरे
घर छपको से रे पार लगाई ।
कौन दिशा से हुआ तेरा आमनो रे सुन परदेशी
कौन दिशा की रे सुरत लगाई ।
हस्त हजारे से हुवा मेरा आमना सुन मल्लहा मेरो
जंग सियाले की रे सुरत लगाई ।
इतने में मल्लहा की छोरी आ गई रे रवि मेरो ही जाने
छोरी बैठी रे मल्लहा के मांही ।
यहां की बातें यहीं छोड़ देउ रे रवि मेरो ही जाने
अब घुघुरां को रे देउ सुनाई ।
छोरी से घुघुरा कह रहो रे रवि मेरो ही जाने
माता सुनले रे कान लगाई ।
जोरू हाथ करूं तेरी बीनती रे सुन माता मेरी

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अरज गरीबी रे सुने के नाहीं।
चौं जोरे हाथ करें चौं बीनती रे सुन बेटा मेरी
अरज गरीबी रे कहै चौ नाहीं।
यहां तो सूनो हुई गयो रे सुन मैया मेरी।
बिन चाचा के रे रहन के नाही।
चाचा के बिन लगत न नीको रे सुन मैया मेरी
वंशी बजैया रे दीखे नाहीं।
इतनी भी सुन के सेती कह रहीं रे रबि मेरो ही जाने
घोड़ो तो जायगी रे तेरे चाचा मांही।
सेती कों सुनके बुगुरा चलदियो है रे रबि मेरोही जाने
जाय पहुँचो रे तबेले माहीं।
जोरुं हाथ करूं तेरी बीनती रे सुन घोड़ी मेरी
अरज गरीबी रे सुने के नाहीं।
तख्त हजारे से चाचो रमि गये हैं रे सुन घोड़ी मेरी
मोकू लै चल रे चाचो के माहीं।
इतनी सुन के घोड़ी कहे रही है रे सुन बेटा मेरे
जौहर हुइ जायगो रे जगत के माही।
इतने दिननसे रांझो मोपे चढ़रहो है रे रबि मेरोहीजाने
धरती में नहिं रे कलग सिहाई।
सात जुगन से रांझो मोपे चढ़रहो है रे रबि मेरो ही जाने
दूजे न तौं रे पग धरो है नाही।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जो कोई आवे मेरी पीठ पै रे रवि मेरो ही जाने
जिन्दा बचि जाय रे हरगिज नाही।
हम रांझे से चाचा कह रहे रे सुन घोड़ी मेरी
तू मेरे चाचा की रे है असवारी।
अपनो बेटा मोकू जान कै रे सुन घोड़ी मेरी
गोदी में लै चल रे चाचा के माहीं।
घोड़ी कह रही ग्यादिन धुनुआ से रे रवि मेरो ही जाने
जीन तो कसलै रे पीठ के माहीं।
जीन तो कस लई घोड़ी की पीठ पै रे रवि मेरोही जाने
धुनुआ चढ़के रे चलो हरषाई।
इतमें नदिया के तटपे रे रवि मेरो ही जाने
रांझे से कह रही रे मन्हा की जाई।
कौन दिशा से हुवा तेरा आमना रे सुन परदेशी सिपाई
कौन दिशा की रे सुरत लगाई।
तख्त हजारे से हुवा मेरा आमनो रे सुन मन्हा की जाई
जंग सियाले की रे सुरत लगाई।
कहा काम है जंग सियाले मे रे सुन परदेशी सिपाही
जेहि कारन से रे सुरत लगाई।
हीरो दिवानी जंग सियाले मे रे सुन मन्हा की जाई
चिट्ठी उसकी रे है आई।
काली २ भौहे बल खाय रही है रें सुन परदेशी सिपाई

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

तोसो पुरुष तो रे दुनियां में नाहीं।
लाखो मुसाफिर आये घाट में रे सुन परदेशी सिपाई
तोसो मुसाफिर रे आयो नाहीं।
अब तो चल तू मेरे महल में रे सुन परदेशी सिपाई
देवै तुमको रे पलंग बिछाई।
मैं फूलन की तकियो लगाय दऊं रे सुन परदेशी
खातिर करूंगी रें महल के माहीं।
इतनीभी सुनके रांको कह रहो हैं रे सुन मल्हा की जाई
नाहक पाप चढ़ावै रें रसवामीर के माही
जीवत रहूंगो मात भरुगो रे सुन मल्हा की जाई
मरे को परेखो हतु नाहीं।
इतनी सुनके मल्हा की बेटी कह रही है रे सुन परदेशी
आयो सतवादी रे नदिया के माही
इतने ही में चुनुआ आय गयो रे रवि मेरो ही जाने
रांझो देखे रे नजर घुमाई।
औहर चुनुआ ने कर डारो रे रवि मेरो ही जाने
घोड़ी पे चढ़के रे कहां को जाई।
आजे तो लायो मेरी असवारी रे सुन चुनुआ मेरे
कल कहेंगो रे हीरो के माहो।
दाम उखारी बट लई जेवरी रे रवि मेरो ही जाने
बंधे हाथ पैर है रे नदियां के माहीं

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

करो कसके चुनुआ को डार दियो रे रवि मेरो ही जाने
फिर चुनुआ में रे मार लगाई।
टाँगो चुनुआ बरगद के पेड़ से रे रवि मेरो ही जाने
मार २ चुनुआ की रे खाल उड़ाई
घोड़ी छोड़ी रांझे ने बांदिना रे रवि मेरो ही जाने
घोड़ी उड़वई रे स्याले के माहीं
वहां से रांझा चल दियो है रे रवि मेरो ही जाने
जायके पहुँचो रे मल्हा के माही।
छोटोओ नवका मल्हा दीजो डारके रे रवि मेरोही जाने
घर हमको से रे देऊ पाड लगाई।
इतनी सुनके मल्हा की जाई कह रही है रे सुन परदेशी
वैसे उतर जाय रे सर के माँही।
केवट कन्या बोल रही है रे रवि मेरो ही जाने
अपनी शक्ती रे देउ दिखाई
जो तू रांझो सच्चो खड़ो है रे रवि मेरो ही जाने
बिन बैठे नाव प रे पार हुइ जाई।
तब हम रांझा तुमको जाने रे रवि मेरो ही जाने
अपनी करामत रे देउ दिखाई।
ठाड़ो २ सुमिरे सरवर पीर को रे रवि मेरो ही जाने
अजेमत मेरो रे हमारे ताही।
इतनी अवाजें शेजे सरमें सुनलई है रे रवि मेरोहीजाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

शौर करेंगे २ बाग के माही।
कौन दिशा से हुवा तेरा आमना २ सुन परदेशी
कौन दिशा की रे सुरत लगाई।
तख्त हजारे से हुवा मेरा आमना २ सुन मालिन मेरी
जंग सियाले की रे सुरत लगाई।
पांच असरफी मालिन को दै दई रे रवि मेरो ही जाने
खिड़की खोलदे रे बाग के माही।
पोच असरफी नौ लई घूंस की रे रवि मेरो ही जाने
तारो दै गई रे खिरक के माही।
तारौ भी दे गई तारी भी जी गई रे रवि मेरो ही जाने
धोखो दै गई २ बाग के माही।
ठाड़ो २ सुमिरे सरवर पीर को रे रवि मेरो ही जाने
अजमत भेजो २ हमा२ ताही।
इतनी तो सन लई गोजा सर से रे रवि मेरो ही जाने
धुरमक्के से रे अजमत आई।
मारी भी ठोकर बाये पैर की रे रवि मेरो ही जाने
फिर खिरका की रे कील उड़ा।
तोर के खिरका रांझो घस गयो रे राव मेरो ही जाने
मालिन ढूंढे रे बाग के माही।
दुबकी पाई मालिन को बाग में रे रवि मेरो ही जाने
हा २ खा रही रे मालिन की जाई

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

तोरी कमची कटीले गुलाब की रे रवि मेरो ही जाने
मार २ कमचिन रे खाल उड़ाई।
कौन शक्स को खस २ बाँगला रे रवि मेरो ही जाने
कौन शक्स को रे पलंग नवाई।
हीर दिवानी के खस २ बाँगला रे रवि मेरो ही जाने
हीर दिवानी को रे पलंग नवाई।
उड़ने पक्षी बाग में बोलते रवि मेरो ही जाने
पगड़ी बन्द को रे चलत कहाँ।
बाग जनानो गोरी हीर कौं रे रवि मेरो ही जाने
पुरुष जावे को रे काम इन नाहीं।
मार के मालिन जाने छोड़ दई है रवि मेरो ही जाने
मालिन चल दई रे शहर के माही
चिठिया दे दई वा हाथ में र रवि मेरो ही जाने
आप जाय सोगो रे पलंग के माही
राँझो खस २ बंगला में सोवे र रवि मेरो ही जाने
मालिन पहुँची रे शाले माही।
हीर के महलन मालिन आय गई रे रवि मेरो ही जाने
टाड़ी रोवे रे महेल के माही।
इतनी भी सुनके हीरो क्या कहे रे रवि मेरो ही जाने
रोय २ के रे मालिन बतलाई।
हौंच कदम से हाँथ जोर के रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

होगो सोचे २ मन के माहीं।
नाउन को घर हेर बुलाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
जल्दी दीन्हौ रे हुक्म सुनाई।
घर २ में दे आवो बुलौआ रे सुन नाइन मेरो
सखियाँ आवें रें महल के माही
धीरे २ मालिन चलके आय गई रे रवि मेरो ही जाने
पटमल बैठे रें बंगला के माही।
जमी पै मालिन इक दम गिर गई रे रवि मेरो ही जाने
सारे तनकी रे सुध भुलाई।
मालिन गिरतं पटमल देख लियो रे रवि मेरो ही जाने
पास पहुँच के रे पूछे जाई।

❀ नवां भाग हीर रांझा ❀

पटमल की लड़ाई

उर्फ

❋ रांझे हीर मलन ❋

दोहा चंड मुंड महारनी नब्ब की करो सहाय।
बद्री कवि अज्ञान को देहु ज्ञान सिखाय॥
मालिन बाग से कैसे आय गई रे सुन मालिन मेरी
साँची २ देवो रे मोहि बताई।
तोपै दुख कौन सो पर गयो रें सुन मालिन मेरी
जो गिरी जमी पै रे गश खाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हमको सिगरो हाल बताइयौ रे सुन मालिन ।
कौने तेरी खाल उड़ाई ।
कोरु भी हाथ करूं तेरी बीनती रे सुन राजन मेरे
अरज गरीबी रे सुने के नाही ।
चौ और हाथ करें चौ बिनती रे सुन मालिन मेरे
अरज गरीबी रे कहे चौ नाही ।
नाव बनानी तेरी बहिन छो रे सुन राजा मेरे
पगड़ी बन्द को तो रे खलत कहाई ।
आयो परदेशी एक बाग में रे रबि मेरो ही जाने
साँची २ तुमको रे देउ बताई ।
तोरके फाटक घुसो बाग में रे सुन राजन मेरे
मन में खौफ नहिं रे वाने खाई ।
तुम्हारो नाम लियो जब मैंरे रे सुन राजन मेरे
मन में गुस्सा २ भयो अधिकाई ।
तोड़ लई कमची कटीले गुलाब की रे सुन राजन मे
मार २ कमचिन रे खाल उड़ाई ।
बंगला में पलका बिछ रहो हीर को रे सुन राजन मेरे
दरी बिछाय के रे सोयो जाई ।
सख्त हजारे गांव बताय रहो सुन राजन मेरे
राँझा अपनो रे नाम बताई ।
हाथ जोर कर विनती उससे रे रबि मेरो ही जानें

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पायेन परके रे जान बचाई ।
रांझो को नाम सुन पटमल लियोरे रवि मेरो ही जाने
अपने मनमें रे गुस्सा हुई जाई ।
लहर-बख्तर पहिरके अपने पटमल तुरतहि गज सजवाईरे
मुड़िया हीदा धरो पींठ पै सांकल से कसवाई रे ॥
पटमल सजके जब ठाड़ो भयो होदा सिढ़ो लगाई रे ।
सिडिया ऊपर चढ़ के होदा बैठो जाई रें ॥
सिगरे ज्वान संगमें चल भऐ बाबको सूध लगाई रे ।
पटमल बागमें आयरहो है अब हीर को देउ सुनाईरें ॥
मीठी बाणी हीर बोल रही रे सुन माता मेरें
माता सुनले रे कान लगाई ।
झूला झूलन जाऊ बाग में रें सुन माता मेरी
सखियां संग में रही जाई ।
घर ही डराय दऊं चंदन हिंडोलना र सुन बेटी मेरी
रेशम डोरी रे लिहौ मंगाई ।
जल चौन जइयो चन्दन हिंडोलना रे सुन माता मेरी
रेशम डोरी रे जल चौंन जाई ।
बाग झूलन मैं तो जाऊंगा रे सुन भइया मेरो
अब रुकने को र हरी गज नाही ।
आय गई सखियां सिंगारो महल में रवि मेरो ही जाने
उन सखियन को रही सजवाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

आपतो बन गई भर भादों की बीजुरी रे रखियारी अल्ला
संग की सहेली रे बटा बनाई ।
ओढ़ परेला गौरी, २ जाटनी रे रवि मेरी हो जानैं
शीशा भी दमके रे चंदर के माही ।
सजके हारो अटा पैं चढ़ गई रे रवि मेरी हो जानै
मडक पै पटमल रे परी दिखाई ।
लहर–हीर हाप ने पटमल देखो नंगे पैरन धाई रे
गजब कौ मालिन ने भैया को दोनों हाल बताई रे ॥
परदेशी अपनी जान मुल्क में दी है आज गमाई रे ।
घेर अगारी लई पटमल को हरिने जल्दी आई रे ॥
जोरू मैं हाय करूं तेरी बिनती रे सुन भैया मेरे
आज गरीबी रे सुने के नाहीं ।
चो जोर हाथ करे चो बीनती रे सुन बहिना
आज गरीबी रे क्यों नाहीं ।
कैतों भैया हुइ गयो बाबरो रे सुन भैया मेरे
कैं काहू ने रे महजूम खबाई ।
के ोपै चढ़ आयो बादशाह रे सुन भैया मेरे
कैं चाचा ने रे मुहीम बनाई ।
न कोप चढ़ आयो बादशाह रे सुन हीरो
न चाचा ने रे मुहीम बनाई ।
न तो हुइगयो बाबरो री सुन बहना मेरी

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

न काऊ ने रे महरम लखाई।
गाग जनाने तेरो बन रहो रे सुन हीरो
पगड़ी बन्द की रे चलत कहाई।
ओ मालिन तेरे बाग मे रे सुन हीरो
बा पर देशी के रे खाल उड़ाई।
जाय कर बाघू व य बाग मे रे सुन हीरो
बरगद में रे देउ टंगवाई।
लहर–बहना बाग जलाने में तेरे रांझो गयो है आई रे।
डरन खायो उसने मेरो मालिन को डाट बताई रे॥
मालिन के तन मार २ कमचिन सारी खाल उड़ाई रे।
आसूं पौछके कहै पटमल से वादिन हीर वाई रे॥
सेना सजाय के भैया जाय रहे संग बड़न लड़ाई रे।
लाल २ डोरा गुलाबी नैना हुइ गये रे रवि मेरो ही जाने
गरज गरज कै हरि बतलाई।
इक परदेसी ऊपर तू मेरें सुन भैया
सिगरी फौज रे लई सजाई।
अकेलो वासंग लड़न को काफी रे सुन भैया मेरे
काहे लश्कर रे लियो सजवाई।
रवि को खौफ नहिं दिल में लावै रे सुन भइया मेरे
को बनो है भैया रे ऐसो अन्याई।
बख्तर पहने भइया अपन दे दे रे सुन मेरे भइया

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सैलानी दे दे रे दयारे माही।
अकेले लाऊं बागन पलट के रे सुन भैया मेरे
अकले काजे रे तीने फौज सजाई।
नाम भी वारी चाचा हीरासिंह को रे
इकलो जाऊं रे छोड़क नाई।
कै तो लौटाय लश्कर विक्रमनों रे सुन भैया मेरे
असराफ देउंगी रे भस्म हुई जाई।
वापिस लौट जा तू घर को रे सुन भइया मेरे
देखूं बागन मेरे दय जई।
उस परदेशी को लाऊं दरबार में रे सुन भइया मेरे
साची २ तुमको रे रही बतलाई।
झूठ तनिक जो तुमसे बोले रे सुन भइया मेरे
कसम खुदा की रे रहा खाई।
पटमल हीर की सुनके रे रवि मेरी हो जानें
वाके मन में रे गई समाई।
हुकम सुनाय दियो फौज को जल्दी रे सुन भइया मेरे
फौज सियाले को रे दई लौटाय।
छावनी में लश्कर ठहर गयो है रे रवि मेरी ही जाने
हीरो देख के रे खुश हुई जाई।
हीरो लौट के घर में आय गई रे रवि मेरी ही जाने
दिल में सोचे रे अति पछिताइ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कहँरन को हीरो जल्द बुलाय लियो रे रवि मेरे ही जाने
अपनो डोला रे लियो सजवाई।
डोली में चढ़ हीर बैठ गई रे रवि मेरो ही जाने
बाग नौलखा रे रही जाई।
खुश हुई मन में हीरों जाय रही रे रवि मेरी ही जाने
हीरो पहुंचो रे बाग के माही।
लहर–हीर आय गई बाग नौलखा अपने मन हरषाई रे।
बाग में मिल गई मालिन वाको रही हीर बतलाई रे॥
कहां पै ठहरी परदेशी बाग में मोको देउ बताई रे।
चल भई मालिन आगे २ पीछे २ चली है हीर बाई रे॥
बगला बीच पहुँची जाके जहाँ सोवे रांझा बलदाई रे।
चादर खेंची जाय हीर ने रांझो बेठे पलंग पे जाई रे॥
ऐसो सोयो निधरक पलंग पै सारी सुध बिसराई रे।
कहा नाय तेरो कहाँ गाम हैं दीजो मोय बताई रे॥
तेरे पिता को कहा नाम है कौन नाम की माई रे।
कैसे आयो बाग जनाने तोहिं मारे पटमल आई रे॥
ऐसो सोयो गबरू पलंग पेरे सुन परदेशी
चादर खींची रे पलंग के माही।
लेलई कोई कटीली लोदरी रे रवि मेरी ही जाने
हीर के मारी रे बदन के माही।
कमची मारे हीर के तन में रे रवि मेरी ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

छुटरँ कमली रे हीरो के माही।
रांझे की रिप खतम भई है रे रवि मेरो हो जाने
हीर बैठ गई रे बगला के माही।
हाथ जोर के हीरो कह रही रे रवि मेरो ही जाने
अरजी सुनले उरे मेरी चितलाई।
कौन धाम के रहिबे वारे रे सुन परदेशी
कहा नाम है रे कही सुनाई।
मात पिता को कहा नाम है रे रवि मेरो ही जानें
कहाँ से आये रे कहाँ को जाई।
रांझा नाम हमारो है हीरे रे सुन हीरो
तख्त हजारो रे गाँव कहाई।
गैलो नाम मात को है रे रवि मेरो ही जाने
नाम बाप को रे अल्ला दीन कहाई।
मेरे पास भी पकड़ मेज दियो रे रवि मेरो ही जाने
को हमको लायो रे संघ बुलाई।
मात पिता हम घर में छोड़ दियो रे रवि मेरो ही जाने
बिलखत छोड़ी रे सातों भौजाई।
चनुआ भतीजो रोवत छोड़ दियो रे रवि मेरो ही जाने
हम प्यार करत थे रे गले लगाई।
पूछत पूछत खोज लगाय के रे रवि मेरो ही जाने
तुम्हरे ढिग में रे चये आई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

असली रांझे तुम नहीं हो रे सुन परदेशी
काहे हमको रे रहे बहकाई।
हम संग चौपर अब तुम खेलो रे सुन परदेशी
तुमको लीहे रे हम अजमाई।
चौपर नौ लई हीरो ने हाथ में रे रवि मेरो ही जाने
जो सतर जी रे लई बिछाई।
बाजू दें दई हीरो बादिना रे रवि मेरो ही जाने
रांझा भी सोचे र पलंग के माही।
बैठे बैठे सुमरे सरवर पीर को रे रवि मेरो ही जाने
अजमत भेजो र हमारे ताहो।
इतनी अवाज़ तो रांझो मन से सुन लई रें रवि मेरो ही जाने
धुर मत के सेरे अजमत छुई।
रांझे ने चौटे नौ लई हाथ में रे रवि मेरो ही जाने
बाजू दे दई र हीरो के माहो।

हीर को रांझे ने हराय दियो रे रवि मेरो ही जाने
हीर सोच रही रे मन अधिकाई।
रांझे बिन कोई हराय नहि पावै रें रवि मेरो ही जाने
इस दुनियां में रे जन्मो नाहीं।
मनमें समझ के असली रांझा रे रवि मेरो ही जाने
हरि रही है रे तब बतलाई।
अब तुम संग हमोरे चल देउ रे सुन परदेशी

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पहले तुमको रे देय सुनाई।
पशुधन को इक खिरक बनो है रे रवि मेरो ही जाने
बाही खिरक में रे घास बिछाई।
दिन में हमारी गाय चरावी रे रवि मेरो ही जाने
रात में सोवो रे खिरक में नाई।
भोजन तुमको कछून मिल है रे सुन परदेशी
सेर भर तुमको रे छाछ मिल जाई।
अपने मनमें राजी हुई जाई रे रवि मेरो ही जाने
मेरे संग मेरे चलो हरषाई।
तुम्हारी राजी जो नहि होवे रे रवि मेरो ही जाने
तरुत हमारे को रे जाऊ सिधाई।
रोज खिरक में तुमसे मिलूँगी रे सुन परदेशी
निधरक मेरी रे गाय चराई।
फक्कड़ चाचा रहे संग तुम्हारे रे रवि मेरो ही जाने
करेगो निस दिन रे तेरी सहाई।
जान बचाय हम तुम्हारी लीहै रे सुन परदेशी
करके बहानो रे समझइयो भाई।
जंग सियाले रो रांझा चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
संग में चल दई रे हीर बाई।
रांझो बंगला में खड़ो भयो है र रवि मेरो ही जाने
जहाँ पै बैठो रे पटमल भाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रांझे के देखकर पटमल कह रहो रे सुन परदेशी
सांची सांची हमको रे देउ बताई ।
तू परदेशी जनाने बाग में रे सुन परदेशी
कैसे आयो रे देऊ बताई ।
मनकी मानी कैसे करी है रे सुन परदेशी
नाम हमारे रे नहि सुन पाई ।
जग जाहिर है तेज हमारी रे सुन परदेशी
अपने दिल में रे खौफ नहि खाई ।
सब बदमाशी देख हम लीहै रे सुन परदेशी
दई मालिन को खाल उढ़ाई ।
बिना मौत अब मारो जायगो रे सुन परदेशी
यहां पे तुमको रे कौन बचाई ।
इतनी कहके पटमल तबही रे रवि मेरो ही जाने
जल्लाद लिये है रे जल्द बुलाई ।
तनिक देर नहि करी जल्लादन रे रवि मेरो ही जाने
बगला गये हैं रे जल्दी आई ।
पटमल को समझाय हीर रही रे रवि मेरो ही जाने
भइया सुन लेउ रे तुम चितलाई ।
परदेशी पे बिन जाने कसूर भयो रे सुन भइया मेरे
तापे मरदाने रे बने दिखाई ।
मानुष आयो है परदेशी रे सुन भइया मेरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इसी से गणो रे नित चरबाई।
घर को वरधिया वनाय छेऊ रे सुन मइया मेरे
कहरही तुमसे रे द्य समझाई।
प्रान छोड़ दियो इस परदेशी के रे सुन मइयो मेरे
आज फाँसी से रे देउ वचाई।
ऐसो वानी हीर की सुनके रे रवि मेरो जाने
भई पटमल के री दिल में समाई।
सोच समझ के अपने मनमें रे रवि मेरो ही जाने
दियो पटमल ने रे हुकम सुनाई।
फांसी से तुम इसे उतार देऊ रे सुन मइया मेरे
हाथ की वेड़ी रे देउ कटवाई।
वेड़ी नटगई रांझे मरद की रे रवि मेरो ही जाने
जल्दी खिरक को रे दियो पठाई।
रांझो वयो रोज चराय रहो रे रवि मेरो ही जाने
जाको दियो है रे खिरक बताई।
निस दिन बीरन के जोर से रे रवि मेरो ही जाने
हीर आयके रे रांझे से मिल जाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हर्बा मैडीकल बाक्स

डाक्टर व डाक्टरी सीखने वालों के लिए यह उच्च श्रेणी की पुस्तक है। इसमें औरत, मर्द, बच्चे आदि के रोगों को देखने के तरीके व उनका इलाज कैप्सूल व टेवलिट्स तथा डाक्टरी मिक्चर आदि बहुत सी दवाइयों द्वारा दिया गया है तथा दाद, खाज, खुजली जूकाम, खाँसी. कफ शक्कर का रोग, स्वप्न दोष, मासिक धर्म व कठिन से कठिन रोगों का इलाज अच्छे प्रकार से दिया गया है। साथ ही नये कैप्सूल व गोलियों के नाम व किन २ रोगों में ये काम आती है यहत है ही हैं। साथ ही मरहम पट्टा तथा उसके रोगों का भी इलाजभौखाथ भोजन का महत्व फलों का महत्व और इनकी ओच्छी प्रकार से उपयोग में लाने के तरीके भी दिये हैं प्रत्येक मनुष्य क यह पुस्तक रखना आवश्यक है। की० ५) डा० ख० १)५० नाड़ी ज्ञान तरंगिनी मू० ४) घर में वैद्य बड़ा मू० ५) कम्पाउन्डरी शिक्षा मू० ४) आयुर्वेद चिकित्सा मू० ३'५० बाल रोग चिकि ा मू० २)२५ घरेलू इलाज मू० ३) डाक खर्च अलग।

नोट—२ पुस्तक १ साथ मगाने पर डाक खर्च कम लगेगा।

सचित्र करामात

इस पुस्तक में योग विद्या के समस्त अङ्ग, मैस्मरेजम द्वारा दूसरे मनुष्य का रहस्य जानकर दूर देश की बात को एक ही स्थान पर बैठे हुए क्षण में जान लेना, गढ़ा हुआ धन देखना पशु पक्षियों की बोली पहचानना, अन्तर्ध्यान होना, विना औषधि रोगों की चिकित्सा करना; भूत प्रेत आदि को बुलाना, मृतक आत्माओं से बात चीत करना, आदि ऐसी २ जादूगरी है जिस देखकर आप भी दंग रह जाय। साथ ही। मन्त्र, तन्त्र, बशीकरण आदि का सविस्तार पूर्वक बर्णन किया है

की० ४) डा० ख० १)५०

सांवरी तन्त्र (सेवड़े का जादू)

अगर आप तान्त्रिक विद्या में विश्वास रखते है तो हमारे द्वारा पकाशित पुस्तकें सावरी तन्त्र अवश्य मंगायें। इस पुस्तक में द सिद्धियां है। १–बशीकरण विद्या २–आकर्षण विद्या ३–सिद्धि ४–कायाकल्प बिजा ५–यक्षणी सायन। ६–भूत विद्या ७–ओझाविद्या ८–यन्त्र मन्त्र और तन्त्र विद्या। यह विद्या एसी है यदि विधिपूर्वक कय तो पूरा २ अब भी असर करती है लेकिन सिद्धिकर्त्ता पर निर्भर है। की० ४) डा० ख० १)५०

पता—दीपचन्द बुकसेलर दयागंज हाथरस। यू० पी०

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

असली हीर राझां दशवां भाग

शेर की लड़ाई

उर्फ

नारद का आना

दोहा-चंड मुन्ड सहारनी नल की करी सहाय।
वद्रो कवि अज्ञान को देवहु ज्ञान बताय ॥

छछ भी पीवे गइयां भाँ घेरता रे रबि अन्लामेरो ही जाने
गइयां भो चरावे रे ढेरन के माहो।

हाथ जोर के होरो बोली रें रबि मेरो अन्ला ही जाने
अरज गरीबी रे सुने के नाही।

दक्षिन दिशा में भूव शेर हैं रे रबि मेरो ही जाने
चौकस रहियो र बनी के माही।

तीन दिशा तो रांझे ने छोड़ दई रे रबि मेरो हो जाने
दक्षिन दिशा को रे गाय बढ़ाई।

गइयां भो छोडी रांझे ने ढेर मेंरे रबि मेरो ही जाने
नाहर को ढूढ़े रे बनी के माहो।

भूग शेर तो रांझे को मिल गयो रे रबि मेरो हो जाने
ठाढो हुई गयो रे होंश के माही।

शेर तो सोवे सिंहल बैठी मिल गई र रबि मेरो ही जाने
अरज गुजारो रे रांझे के माही।

जहां से आया वहीं को लौट जा रे रबि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रोयमर जायगी रे तेरी बुढ़िया माई।
जो धर जागे बनी को शेर है रे रवि मेरो ही जाने
नाहकजान जायगी रे बनीके माही।
इतनी सुनके राझो कथा कहे रे रवि मेरो ही जाने
कौन जगायदे रे गीदड़बनी केमाही
इतने दिनो से रवि पैदा किया है रें रवि मेरो ही जाने
मात पिता तो रे देखे आही।
लड़बे आयो बनो के बीच में रे रवि मेरो ही जाने
जा गीदड़ को रे देउ जगाई।
इतनी सुनके शेर बैठो हुइ गयो रे रवि मेरो ही जाने
शेर समझावे रे बनी के माही।
जहां से आयो वहीं को लौट जा रे रवि मेरो ही जाने
रोय मर जयगा रे तेरी बुढ़िया माही।
पतरो २ केला कैसो लौंदरो रे।
तेरी सूरत गबरू रे निरखीन जाई।
लाल लाल डोरा गुलाबी नैना हुइगयो रे रवि मेरोहीजाने
भड़क २ गोरे रांझो बतलाई।
तू कौन आवै निकर ठौंगर से रे रवि मेरो ही जाने
कुश्ती होयगी रे बना के माही।
इतनी सुनके गुस्सा छाई शेर के रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मारो रांझे में रे थाप चलाई।
दुइ कलमा पढ़ लिये कुरान के रे रवि मेरो हीं जाने
बांशी लई हैं रे हाथ उठाई।
हरी वार नाहुर कर गयो रे रवि मेरो ही जाने
बांशी पे नौ जाय चोट लगाई।
कुदरती आवाज तो आई जोर से रे रवि मेरो ही जाने
रांझा सुनले रे कान लगाई।
जो तू आयो लड़वे शेर से रे सुन रांझे मेरी
कमर कटारी रे कौन चलाई।
जब सुध आई रांझे को वन में रे रवि मेरो ही जाने
खींच कटारी रे जन्द चलाई।
नाहर के पेट में घुसी है रे रवि मेरो ही जाने
नाहर डारो रे धरन के माही।
कान भी काटे नाहर के बादिना रे रवि मेरो ही जाने
रांझे ने धर लियो रे जेब के माही।
शेर भी मारो शेरन भग गई रे रवि मेरो ही जाने
ठाड़ो सोचे रे वनी के माही।
प्रीति तो कीजे पगड़ी बन्द से रे रवि मेरो ही जाने
नारि जाति को रे पतियारो नाही।
शेर भी मारो शरिन लड़ती जा बन में रे रवि मेरो हीजाने
कोई अंदेशों रे मोको नाही।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इतनीं सुनने शेरिन क्या कहे रे रवि मेरो ही जाने
अरज गुजारी रे गबस के माही।
मर गयौ है तो मर जान दे रे परदेशी सिपाही
और करुंगी रे वनी के माही।
ठाड़ो ठाड़ो बेटा रोवे पठान को रे रवि मेरो ही जाने
जौहर हुइ गयौ र स्याले के माही।
आज कहो तो तख्त हजारे में रे रवि मेरो ही जाने
जुनुआ छुटतो रे शेर पै आई।
अपने मनमें सोच करत हैं रे रवि मेरो ही जाने
करो रांझे ने रे एक उपाई।
फार दुसाला लियो अपनो है रे रवि मेरो ही जाने
वाहि दुशाला में रे खून लगाई।
झूमर गाय के सींग में बांध दई रे रवि मेरो ही जाने
रहो गाय को रे रांझा समजाई।
हाथ जोरके रांझो कह रहो है रे रबि मेरो ही जाने
अरज गरीबी रे सुने के नाहीं।
चो ओर हाथ करैं चो क्यो बीनती र रवि मेरो ही जाने
अरजा गरीबी रे कहे चो नाहीं।
अपने संग में गइया ले जाओ रे रवि मेरो ही जाने
जल्दीं खिरक में रे पहुँचो जाई।
ना तुम किस हूं से बुलिहो रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हीर जो पूछे रे तुमसे आई।
हीर से कहियो तुम समझाय के रे रवि मेरो ही जाने
तुम्हें बतावै रे कहियो जाई।
भूरा शेर को राँझे ने मार दियो रे रवि मेरो ही जाने
शेरिन लड़ रही रे समु आई।
राँझो शेरिन लड़रहे बन रे रवि मेरो ही जाने
मरे जियत को रे मेाय सुध नाहीं।
कुश्ती होत हम उनको छोड़ दियो रे रवि मेरो ही जाने
हार जीत की रे मेाय सन्ह नाही।
द्वापर में दुर्योधन राजा देह छोड़ पुरी।
महाभारत के बीच भूप की बिलखत लाश परी॥
इकलख पुत्र सवा लाख नाती लड़की ब्याउन हुई।
कलुयुग में अंग्रेज राज भये माया खींच लई॥
मार शेर को रांझो चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
कन्या सी पाई रे ढहरन के माही।
ठाड़ी ठाड़ी रोवै कन्या ढहरन में रे रवि मेरी ही जाने
कन्या से पूछे रांझो आई।
ढहरन बेटी मेरी चौ रही रे रवि मेरो ही जाने
सांची बतायदे रे ढहरन के माही।
भइया भी मारे मामो भी मारे रे रवि मेरो ही जाने
भइया मारो रे रोग ने आई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

गइया घेरी मेरी रोग ने रे रबि मेरो ही जाने
रोटी न देयगसँ रे बगर के माही।
दया आयगई रांझे के मनमें रे रवि मेरो ही जाने
संग चलो है रे ढहरन के माही।
गइया भीं बछड़ा देखे बादिना रें रवि मेरो ही जाने
रोग बुलायो रें अपने माही।
आय रोग तो ठाड़ो हुइ गयो रें रवि मेरो ही जाने
रांझो रहो है रे रोग को समझाई।
हाथ भी मारो रांझे ने रोग में रे रबि मेरो ही जाने
चौ नाहक तू रे रहेः इनको दवाई।
रोग जो सुधे रांझे पे पर गयो रे रबि मेरो ही जाने
रांझे रोग में रे भई लड़ाई।
कुश्ती में तगड़ो रांझो पड़ गयो रे रवि मेरो ही जाने
रोग हारके रे सांप बन जाई।
जोड़ा भी बन गयो बेटा पठान को रे रवि मेरो ही जाने
साप दुबकत है रे हीस के माही।
रांझे भागत सांप पकड़ लियो रे रबि मेरो ही जाने
मार लगाई रे हीस के माही।
दोऊ हाथ जोर हा हा खाय रहो रे रवि मेरो ही जाने
जीवदान दे रें हीस के माही।
जहां कोय नाम आपको लेयगो रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बहां डटन के रें हरगिज नाही।
एक लड़ाई रोग की मरका लई रे रवि मेरो ही जाने
जायकर बैठी रे हौस के माही।
रांझो भी बैठो बन के टील पे रें रवि मेरो ही जाने
बंशी बजावे रें ढहर के माही।
भूधर गाय के संग सब गइया रें रवि मेरो हीं जाने
जाय झलूमी रे खिरक के मांसी।
देखके हीरो भूधर से क्या कहे रे रवि मेरो ही जाने
बबरु कहा छोड़ो रे ढहर के माही।
शेर भी मारो शेरन लड़ रही रे रवि मेरो ही जाने
मरे जिवत की रे खबर है नाही।
खिरक मे बैठी छोरी रांजा छोछक की रें रवि मेरो ही जाने
हीरो सोचे रे जिगर के माहीं।
आधी रात झुकी अंधियारी रे रवि मेरो ही जाने
चौमुख जोती रे जाने लगाई।
थार सजाय के हीरो चल भई है रे रवि मेरो ही जने
हौंस बनी की रे सुरत लगाई।
हीरो न चोमुख दियन ओर लियो रे रवि मेरो ही जाने
नौ रही कुदरती रे जोर बहराई।
शहर के बाहर हीरो आय गई रे रवि मेरो ही जानें
ढहर की हीरो रे सूध लगाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

भादों की नदिया याइ मिलत रे रवि मेरो ही जाने
ठाड़े सोवे रे छोछक जाई।
मर गयो है तो सपनो दीजियो रे रवि मेरी ही जाने
जिन्दो है तो रें नेक बंशी बजाई।
कान भनक रींजे के पर पई रवि मेरो ही जाने
रांझो अपनी रे बंशी बजाई।
मर गयो होय तो मोय बताय दे रे रवि मेरो ही जाने
जिन्दो भी होय तो रें पाज बताई।
सत की भरी वेटी राजा छोछक की रें रवि मेरो ही जाने
नदिया पाज दई रे हार के माहीं।
नदिया उतर के रे हीरो चल मई रे रवि मेरो ही जाने
जब आई है रे ढेरन के माही।
बंशी भी बाजे टीले पै बैठके रे रवि मेरो ही जाने
जो बंशी की रे सुरत लगाई।
जायकर पहुँची हीरो टहैर में रे रवि मेरो ही जानें
खायले मलीदा रे हमनें आइ।
खाबै मलीदा रांझो बादिना रे रवि मेरो ही जाने
जौरे बैठी रे वो छोछक जाई।
नजर पड़ी है रांझे समुहे रे रवि मेरो ही जानें
एक अचम्भों रे परो दिखाई।
हिरनी हिरना दोऊ सामने रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बिषय करत हैं रे हिय हरषाई।
ललचानो है राखो वादिना रे रवि मेरो ही जाने
नाशी है इन्द्री रे वनी के माही।
पाप बिचारो रांके ने वादिना रे रवि मेरो ही जाने
ऊठके आयो रे गुफा के माही।
जोरू हाथ करूं तेरी बीनती रे रवि मेरो ही जाने
महाघोर होयजायगो रे जगतके माही
नाही तो हीरो वादिन कर रहो रे रवि मेरो ही जाने
टेर सुनो अब स्वामी रे वन मेंआई।
तुम ब्रजराज बिचित्र नगरो किलबिल्ला के संग गये।
भिलनी के बेर सुदामा के तन्दुल रुच २ भोग लगायगये
दुर्योधन की मेवा त्यागी साग बिदुर घर खाय गये।
गज और ग्राह लड़े जल भीतर लड़त २ गज हार गये॥
जो भर सूंड़ रही जल ऊपर तब ही नाम सुमिर लये।
गज की टेर द्वारका नगरी पायन आय गये॥
पलकी देर लगन न पाई बीच समुन्दर आय गये!
रोयके बेटी कहैं ब्रोछक की मेरी बेर कहां तुम सोयगये॥
जोरूं भी हाथ करूं तेरी बीनती रे रवि मेरो ही जाने
अरजी सुनलेउ रे प्रभु चितलाई।
हम दोनों की तुम लाज राख लेउ रे रवि मेरो ही जाने
तुमको रही हैं रे शीश झुकाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पाक मुहब्बत बनी रहे हम दोनों की रे रवि मेरो ही जाने
छिन २ बाढ़े रे प्रेम अधिकाई।
श्री ठाकुर ने नारद बुलाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
जाओ मंजयोक की २ बनके माही।
इतनी सुन के नारद चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
जाय पहुचे रे टीले के माही।
ढोल बजायो बादिना टीले पे रे रवि मेरो ही जाने
भांभा नारद रे दई फैलाई।
इन्द्री शिथिल तो रांझे की हुइ गई रे रवि मेरो ही जाने
जल्द निकल निकलके २ बाहर आई।
रांझे को लैके हीरो चल दई रे रवि मेरो ही जाने
आय भलूमी रे खिरक के माही
हीरो गई है अपने महल में रे रवि मेरो ही जाने
रांझोभी आयो रे खिरक के माही।
गइया चराऔ छाछ भी पीवता रे रवि मेरो ही जाने
मौज उड़ाऔ रे बनी के मांही।
एकदिना तो चाची हीरो की कहर ी रे रवि मेरो ही जाने
कैसैं रांझे को रे देउ रपटाई।
हीर की माता खौफ खाय रही रे रवि मेरो ही जाने
बैठी महलमैं रे सोचे अधिकाई।
देरी हीर को रांझे नौ खाय रे रवि मेरो ही जाने
मेरी हंसी जगत में रे हुइ जाई।
मनमें सोचके दूत बुलाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
नासे कही है रे हीर के माई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जल्दी चले जाउ तुम बंगला में रे रवि मेरो ही जाने
यहाँ पटमल को रे लाउ बुलाई।
इतनी सुन के खोजा चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
बंगला गयो है रे झट आई।
हाथ जोर के बिनती कर रही रे रवि मेरो ही जाने
राजा सुनवेउ रे मेरी बितलाई।
तुमको भइया घर में बुलाय रही रे रवि मेरो ही जाने
देर कान को रे मौका नाही।
इतकी सुन के पटमल चल दियो रे रवि मेरो ही जाने
लियो महलन को रे सूत्र लगाई।
पटमल महल में पहुँच गयो है रे रवि मेरो ही जाने
माता के जो रे गयो हरशाई।
हाथ जोर के पटमल कह रही रे रवि मेरो ही जाने
कैसे हमको रे लियो बुलाई।
पटमल की सुन माता कह रही रे रवि मेरो ही जाने
कही न हम पे रे कछु जाई।
खिरक रहै जो पशु चरावै रे रवि मेरो ही जाने
हीर को एक दिन रे लै जाई।
जो लै जावै राखो हीर को रे रवि मेरो ही जाने
इज्जत धूर में रे मिल जाई।
सिगरे कुल में दाग लाग जाय रे रवि मेरो ही जाने
तासे तुमको रें देय बतलाई।
मनमें सोच रही है रे रवि मेरो ही जाने
शादी अठखेड़ा में रे देउ करवाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

व्यापार दस्तकारी अर्थात

[व्यापार का खजाना]

इस पुस्तक में हर प्रकार के उद्योग धन्धे जिसे थोड़ी पूंजी वाला भी बनाकर अच्छा व्यापार चला सकता है, जैसे मोमबत्ती, लिपिस्टिक, चौक, क्रीम, हर प्रकार का साबुन, स्याही, सुगन्धित तेल, शर्बत, आशव, चूर्ण, काजल, बूट पालिस, बिस्कुट, डबल रोटी, सेम्पू पाउडर, मांथे की बिन्दी, उबटन, खमीरा, गोंददानी, रबड़ के प्रत्येक सामान तथा अचार, चटनी, मुरब्बा, बेसलीन, नाखूंनी, मंजन, लाखबत्ती, नकली हींग, धूपबत्ती, अगरबत्ती आदि सैकड़ों प्रकार की चीजों का बनाना दिया गया है। मूल्य ४) डा० ख० १.५०

• साबुन तेल शिक्षा

इस पुस्तकमें सैकड़ों प्रकारके साबुन जैसे कारबोलिक, नीम का, बाल सफा, नारियल के तेल का, हजामत बनाने का, ऊनी रेशमी सूती कपड़ा धोने का, फोड़ा फुन्सियों के लिए साबुन एवं कपड़ा धोने का पाउडर, संदल सोप, आमला सोप आदि सैकड़ों प्रकार के साबुन बनाना दिया गया है। तथा हर प्रकार के सुगन्धित तेल, क्रीम तैयार करना भी दिया है फिर भी मू० ४) डा० ख० १)५०

पता—दीपचन्द बुकसेलर नयागंज हाथरस यू० पी०

• बड़ा दृष्टान्त महासागर

दृष्टान्त ही भाषा का अलंकार माना है, इस ग्रन्थ में दैविक, लौकिक, सामाजिक, धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, भक्ति-ज्ञान वैराग्य आदि सभी विषयों के अच्छे से अच्छे दृष्टान्तों का संकलन किया है, संसार के अनेक महापुरुषों, राजाओं, विद्वानों एवं सिद्धोके अनुभवों तक का इसमें अनोखा समावेश है। कथाओं में पण्डित लोगभी इसीमें देखकर दृष्टान्त देतेहैं, सजिल्द पुस्तक की की० ३.५० डा० ख० १.५०

व्यापार साधन (तेजी मन्दी के लिये)

इस पुस्तक में आल इण्डिया के अनाज तिलहन, गुड़, चीनी, किराना, कपड़ा, बारदाना, दाल तथा तेल के कारखाने आदि सभी तरह के व्यापार करने वालों के पूरे पते तथा टेलीफोन नम्बर व तार के पते दिए गये हैं। व्यापारी तथा आढ़तियों के लिए बहुत जरूरी तथा धन पैदा कराने वाली किताब है। तेजी मन्दी व हर प्रकार का व्यापार करके लाखों का धन कमाइये थोड़ी ही प्रतियां बची हैं, आज ही मंगायें, १३६८ पेजों की सजिल्द किताब की की. १० रु० डा. ख. ३ रु०

नोट—डा.ख. के लिए ३) का मनीआर्डर आना जरूरी है

• पता—दीपचन्द बुकसेलर नयागंज हाथरस उ० प्र०

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हीर रंझा ग्यारहवां भाग

कन्नू पठान का ब्याह

उर्फ

अठखेड़ा में हीर जाना

दोहा- चंड मुन्ड सहारनी नव की करी सहाय।
बद्री कवि अज्ञान को देवहु ज्ञान सिखाय॥

माया हीर की कहन लगी है रे सुन परदेशी
पटपल सुनले रे कान लगाई।

अठखेड़ा में कन्नू पठान के संग में रे सुन परदेशी
निकाह हीर को रे होन पड़ाई।

इतनी सुनके पटपल बीर ने रे राव मेरो ही जाने
पाती लिखके रे दई पठाई।

कन्नू पठान को खत मिल गयो रे रवि मेरो ही जाने
अपने मनमें रे खुश हुइ जाई।

ब्याह की त्यारी कन्नूमल कर रहो रे रवि मेरो ही जाने
जाको अठखेड़ा रे गांव कहाई।

सेजी अपनी बहिन बुलाय लई रे रवि मेरो ही जाने
सब रिस्तेदारन को र लिया बुलाई।

सज र फौज अठखेड़ा में आय गई रे रवि मेरो ही जाने
चहुँदिश घरे पे रे दियो रुकवाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कन्नू के सिर मौर धर दियो रे रवि मेरी ही जाने
हाथ मैं कंगन रे दियो बधाई।
पटुका जामो कन्नू पहिर लियो रे रवि मेरो ही जाने
कमर कटारी रे लई लटकाई।
दुल्हा बनके कन्नू सजगयौ रे रवि मेरी हीं जाने
काहू ने समुही रे कैको आई।
लहर—कन्नूमलके माथेऊपर मालिन मौरधर दियोजाईरे।
पटुका जामा कन्नूमल को दरजी दियौं पहिराई रे ॥
कर में कंगन बांध लियो है जामें छल्ला दिखाई रे।
खम्तर चरने तेल चढ़ रहो गावे गीत लुगाई रे ॥
बैन्ड को बाजाबजे द्वार पर कुआ लियो पुजवाई रे।
मरद सरैयां को करनेग पालकी पे कन्नू लिया चढ़ाई रे ॥
पालकी कंधन धरी कहपन पैं सोलह पेर दिखाई।
फोज चलन को हुकम भयो है डंका तब बजवाई रे ॥
अठखेड़ा से सब फौज चल भई रे रवि मेरो ही जाने
सियाले नगर को रे सूध लगाई।
सात दिना की मंजिल करके रे रवि मेरो हो जाने
जंग सियाले रे पहुंचे जाई।
तम्बू कनाते डेरा पर गयो रे रवि मेरा ही जाने
आसमान में रे चंदुआ छाई।
कन्नूमल ने नाऊ बुलाय लीयो रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

खबर बरायती की दई पठ ई
शरबत पानी पटमल भेज दियो रे रवि मेरो ही जाने
सब लघु मइया रे लियो बुलाई।
हंसी खुशी से दियो जनमासो रे रवि मेरो ही जाने
भेट में दीन्हों हीरा पटमल जाई।
पटमल ने बारौठी करन को रे रवि मेरो ही जाने
कन्नू पठान की रे बरात बुलाई।
बजो नगारो बारोठी को रवि मेरो ही जाने
सजके बरायत चली हरषाई।
कन्नूपत्न तब पालकी बैठ गयौ रे रवि मेरो ही जाने
आतिश बाजी रे तब छुटवाई।
पटमल अपने घर में जाय के रे रवि मेरो ही जाने
कहै हीरो से वचन सुनाई।
महलन देर करो न बहिना रे सुन हीरो हीर दिवानी
भवर पान को समय नियराई।
इतनो सुनके हीरो कह रही रे रवि मेरो ही जाने
पहले क्यों न रे पूछो आई।
हमसे बिन पछे सगाई भेज दई रे सुन भइया मेरे
अब चौ पछे रे ढिग आई।
कन्नू से संग करे न शादी रे रवि मेरो ही जाने
चाहे देवो हमको रे फांसी चढ़ाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बसो बरबिया मेरे मन में रे सुन बीरन मेरे
जो खिरकन में रे गाय चराई।
प्रानन प्यारी रहे खिरक में रे रवि मेरो ही जाने
दुसरो बालम रे नाहि सुहाई।
हीर की सुनके पटमल कह रहो रे रवि मेरो ही जानें
मेरी बदनामी रे हुई जाई।
सात साख को नाम डूब जाय रे रवि मेरो ही जानें
फिर गई न इज्जत रे मिल पाई।
लाख जतन करो तुम भइया रे रवि मेरो ही जानें
प्रन ठानो हमने रे टूट न पाई।

जोरा परी ब्याह जो करिहो रे रवि मेरो ही जाने
जहर खाय के रे मर जाई।
इतनों सुन के पटमल कह रहो रे रवि मेरो ही जाने
कौन तेरी रे मति बौराई।
जोराबरी हीर को लै गयी रे रवि मेरो ही जाने
मंडप के ढिग रे राखी जाई
हीर की भावर कन्न संग डार दई रे रवि मेरो ही जानें
कन्न मल से रे कही सुनाई।
वर्ष के भीतर गौनो करहो रे रवि मेरो हीजाने
अबहीं न भेजे रे हीर बाई।
कन्न मल के सगमें रे पटमल ने रे रवि मेरो ही जनेा

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

खिरक की गइया रे दई हकाई।
नौके गइया कन्ह चल भयो रें रवि मेरो ही जाने
अठखेड़ा गाँव में रे राखो जाई।
चार महीना में राँझो आय गयो रे रवि मेरो ही जाने
खिरक में गइया रे नहि पाई।
रहत रहत बहुदिन हुइ गये रे रवि मेरो ही जाने
एकदिन गयो है रे खिरक के माहीं।
नन्ही २ बूंदे मधवा में से पर रहो रे रवि मेरो हीजाने
जब इन्दुर ने रे झड़ी लगाई।
राँझो खिरक में बैठो रोय रहो रे रवि मेरो ही जाने
सब दे ही तोरें डासन खाई।
आपतो सोवे खस खस बाँगला रे रवि मेरो ही जाने
राँझे मरद को रें तौने खिरक बताई
आपतो खाओ दूध मलाई रें रवि मेरो ही जाने
राँझे मरद को तौने छाछ बताई।
आप तो सोवे सूती निवार की रे सुन हीरो हीर दिवानी
राँझे मरद को रे तने जमी बताई।
सद २ मारे बाँसुरी सुन हीरो हीर दिवानी
सुवरन काया रे डाँसन खाई।
इतनी सुनके हीरो कह रही रे रवि मेरो ही जाने
अरज गुजारी रे खिरक के माही।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

यो मत जाने राझो भोवता रे सुन गुरू मेरे
हींगे भा भीजे रे झरोखन मांही
हुक्म करे तो ऊपर से हिग पडू रे सुन गबरू मेरे
हड्डी टूटी रे जुन की नाही ।
गोरी २ बहियां हरी २ चुरियां रे सुन गबरू मेरे
फिर बचन को रे हरगिज नाही ।
चादर फांसू तो रांझो आंवत नाही र सुन गबरू मेरे
रेशम डोरो रे यहाँ हत नाहीं ।
इतनीभी कहके हीरो वहांसे चल दई है रे रबि मेरोहीजाने
जाय झूलूगी रैं चौक के माही ।
गैल में सोवे कोढ़ा भोस्काई र रबि मेरो ही जाने
चौंक धमक से रे जगजाई ।
हीरो देखकें कौढ़ा कह रही रे सुन हीरी हीर दिवानी
आंधी रात पे रे कहां को जाई ।
जोरूं भी हाथ करूं तेरी बीनती र सुन भाभी मेरी
मेंतो जात हो रे खिरक क माहीं ।
मारो ढकेला कौढ़ा ने बांदिनी रे रबि मेरो ही जाने
हीरो गिरो है रे चौकन भेराई ।
ठोक के तारमें हीरो दैदई है रे रबि मेरो ही जाने
कुठरी के भीतर रे हीरो बिलखाई ।
रांझो भी रोवे खिरक के बीच में रे रबि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हीरो भी रोवे रे कुठरिन के माही।
ठाढ़ी टाढ़ो सुमिरे सरवर वीर को रे रवि मेरो ही जाने
अजमत भेजो रे हमारे ताही।
इतनी आवाज तो रोजा सरसे सुन लई रे रवि मेरोहीजाने.
धुरमक्के से र अजमत छाई।
तारो न टूटो भीत नं फूटी रें रवि मेरो ही जाने
खिरक में आय गई रे छोछक जाई।
अपने मनमैं कौढ़ा सोच रही रे रवि मेरो ही जाने
चोला छोड़ दियो रे हीर बाई।
कुठरीके भीतर जाने क्या हुई रहो है रे रवि मेरोहीजाने
कोई आवाज नहि रे परत सुनाई।
कुंडी खोलके कोढ़ा चल पड़ी रे रवि मेरो ही जाने
कुठरी के भीतर देखो जाई।
हीर को चहुंदिश ढूंढ रही है रे रवि मेरो हो जाने
कहूं न हीरो रे परी दिखाई।
कौढ़ा को हीरो नहि मिली है रें रवि मेरो ही जाने
अपने मनमैं रें ताजुब हुइ जाई।
मैंने कुठरी में हीरो बन्द करी है रे रवि मेरो ही जाने
यहाँ से हीरो गायब हुइ जाई।
चित्रसारी पे कोढ़ा चढ़ इई है रे रवि मेरो ही जाने
देखन लागी रे खिरक के माहीं।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

खिरक के भीतर औौढ़ा देख रही रे रवि मेरो ही जाने
रांझो सोबे रे खाट के माहीं ।
एक तरफ को हंसो औंढा है रे रवि मेरो ही जाने
कलमा कुरान को रे बांचत जाई ।
देखके ताजुर औढ़ा हुई गई रे रवि मेरो ही जाने
फिर सासु के ढिग में रे पहुंची जाई ।
चादर खैंच के साथ जगाय दई रे रवि मेरो ही जाने
मीठी बानी से रे कहे सुनाई ।
अपने बेटा का जल्द बुलाय लेउ रे सुन सासुल मेरी
देउ बबरु को रे शूली चढ़ाई ।
हीरो दिवानी भई बारू पै रे रवि मेरो ह जाने
जाहि मराय देउ रे लाज बचजाई ।
हीर से रांझौ कह रहो है रे रवि मेरो ही जाने
हमरी सुन लेउ रे तुम चितलाई ।
जीने में कन्नू तुम्हे जी जौरे रे सुन हारो हीर दिवानी
हमसे जइया रे जो चरबाई ।
आसू भरके हीरो रोय रही रे रवि मेरो ही जाने
रांझे से कह रही रे वचन सुनाई ।
अपने मनमें मत घबरानौं रे सुन परदेशी
धीरजे धर लेउ रे मन के माहीं ।
सात दिना अठखेड़ा में रहयो रे सुन रांझे मेरी

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

धूनी कंडा मेरे संगम हुइ जाई।

पहले जन्म में भारी तप कीन्हों रे सुन रांझे मेरी
छिट दसकेकी रे विधिकी लिखाई।

अठवे दिन हम रुकेगे नाहो रे सुन रांझे मेरी
सात रोज की रे जूरी लगाई।

सात रोज तक चलो हमारे संग में रे सुन रांझे मेरी
रहों वहां पे रे मेष छिपाई।

झूठो बात नही हम बोलें तुमसे रे सुन साजन मेरे
दिना आठवे र बिछुडो आई।

हीर की सुनके रांझो खुश भयो रे रवि मेरो ही जाने
तबही रांझो रे कहै सुनाई।

गाय हमारा जल्द मगाय देउ रे सुन हीरो हीर दिवानी
बिना गांयके र रहन के नाही।

इतनी सुनके हीर बोल रही रे रवि मेरो ही जाने
बिना तुम्हारे रे नहि कोइ भाई।

घोड़ी मेरे पास नही हैं रे रवि मेरो ही जाने
कैसे गइया रे लावौ भाई।

तीन महीना है मोकू है गये रे सुन हीरो हीर दिवानी
सुरत लगाऊं रे हजारे के माहो।

इतनी सुनके होरो बातें चल दई है रे रवि मेरोही जाने
जाय पहुँची रे बँगला के माही।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जोरू हाथ करूं तेरीं बीनती रे सुन बीरन मेरे
गाय मगाय देउ रें ओखा के माहो।
कै तो मगाय दे मेरी गायन को सुन बीरन मेरे
नाहि तो सराफू रे भस्म हुइ जाईं।
जोरूभी हाथ करूं तेरी बीनती रे सुन हीरो हीर दिवानीं
गायजा लाऊ रे अठखेड़ा से जाईं।
इतनी भी सुनके मीरो बाते चल दई है रे रविमेरोहीजाने
आय झलूमो रे खिरक के माहो।
धौताए को हौन में बुढ़िया रे रवि मेरो ही जाने
बंगला की रे सुरत लगाई।
जायके पहुँची पटमल के पास में रे रवि मेरो ही जाने
रोय २ बुढ़िया रे अरज सुनाई।
हाथ भी जोरूं करु तेरी बीनती रे रवि मेरो ही जाने
अरज गरीबो रे सुने के नाही।
गबरु का मारों बेटा खिरक में रे सुन बेटा मेरे
नहि रांझा हीर को रे ले जाई।
सात साख को नाम डूब जाय रे सुन बेटा मेरे
घर २ तुम्हारी रे हँसी हुइ जाईं।
बेटा बात हमारी मानो रे सुन बेटा मेरे
सांची २ तुमको रे रही बतलाई।
आज वहुने आखिन देख लियो रे सुन बेटा मेरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बात में बड़ौ रे लग जाई ।
चलो खिरक दिखलावे रे सुन बेटा मेरे
साग खेल रही र खिरक के माही।
सोरह अठखेड़ा में भेज देउ र सुन बेटा मेरे
कन्नूमल को रें लेउ बुलाई ।
लहर-माता की सुन बात एकदम पटमल के मन भाई रे
हीर को चौने का लिख पात कन्नू ने पठाई रे ॥
रांझे को मिल खबर गई है खटका अधिक सताई रे ।
हीर मिलेगी हमको नाही कन्नू घर नौ जाई रे ॥
सोच समझ के रांझा चल भयो तख्त हजारा जाई रे ।
आगे २ रांझा चल भयो संग में हीरो आई रे ॥
रांझे के संग जाय रही है पटमल ने सुन पाई रे ।
रांझ हीर को जल्दी पटमल घूरी पेघो जाई रे ॥
रांझे हीर ने वीर के बल से पत्थर फौज बनाई रे ।
जग जीत के खड़ा है रांझा देखे हीर बाई रे ॥
पटमल भइया नहिं बिले अब अच्छी दियो बनाई रे ।
ऐसो ताजुब करी हीर ने अमृत तब नौ आई रे ॥
पत्थर फौज पे अमृत डारी मानुश दियो बनाई रे ।
पटमल पे अमृत डारके जिन्दा तब करवाई रे ॥
हीरने अपनो सत्य को परचय पटमलको दियोकराई रे ।
बद्री शर्मा कहैं कनवजके जंग खतम हुइ जाई रे ॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अपने घर को पटमल छोटो रांझे से हीर बतलाई रे।
जाऊं अठखेड़ा सात दिना को लौट के मिल है आई रे॥
पहुँच खिरक में रांझो बीर गयो घरमें गई हीर बाई रे।
हीर की भावी घर मे बोली तुमको जान न पाई रे॥
मैंने लियो अजमाय खूब है सत्यतेरी अधिकाई रे।
कन्नोमल को जल्द बुलाय के दीहो विदा कराई रे॥
खबर भेजके कन्नू बुलाय लियो रे रवि मेरो ही जाने
हीर को दीनी रे बिदा कराई।
हीर विदा भई सियाले कोट से रे रवि मेरो ही जाने
रांझो रोवे रे आंसू बहाई।
प्यारी हमको दर्श दिखाय देउ रे रवि मेरो ही जाने
तुम बिन रात मैं रे नीद नहि आई।
पशु बधे सब खिरक में छोड़ दिए रे रवि मेरो ही जाने
ढूंढन चलो हीर कोरे रांझोबलदाई।
बंशी जान हाथ में ले लई हैं रे रवि मेरो ही जाने
बगल में दाब लई रे लाल रजाई।
कांधे पे झोली डार लई हैं रे रवि मेरो ही जाने
भेश भिखारी को रे लियो बनाई।
गेरू रंग में कपड़ा रंग लियो रे रवि मेरो ही जाने
अंग भभूती रे लई लगाई।
सात दिना औ आठ रोज में रे रवि मेरो ही जाने

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सांझ अठखेड़ा में रे पहुंचो जाई।
बीच गांव में मस्जिद बन रही रे रवि मेरो ही जाने
रांझो रुक गयो रे वहाँ पे जाई।
नगर निवासी देखन आय रहे रे रवि मेरो ही जाने
रांझे से पूछे रे लोग लुगाई।
भेष राजसी को तज दीन्हों रे सुन बाबा बाबा मेरे
क्या कोई राजाने रे करो चढ़ाई।

हीर रांझा बारवाँ भाग

रांझे का स्वर्ग वास

गोरख नाथ की झांकी

दोहा—चंड मुंड संहारनी, नल की करी सहाय।
बद्रो कवि अज्ञान को, देवहु ज्ञान बताय॥
कवि—घरमें एकदिन रांझे मरद से रे रवि मेरो हीं जाने
गुरुगोरख नाथ के रे देउ दर्श दिखाई।
हीर हमको अपने संगमें रे लीजे रे सुन साजन मेरी
गुरु गोरख नाथ के रे देउ दर्श कराई।
कवि इतनी सुनके रांझो चल भयो रे रवि मेरो ही जाने
पीछे २ जाय रही रे वो हीर बाई।
दिन और रात की मंजिल कर रहे रे रवि मेरो ही जाने
रस्ता में तनिको नहिं रे ठहराई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

देउ हम दोनों को रे ज्ञान सिखाई।
अपने संग में हम को रख लेउ रे सुन बाबा मेरे
हम निसदिन करहो रे तेरी सिवकाई।
कवि राम्के की सुन गोरख नाथ ने रे रवि मेरो हो जाने
कान में कुन्डल रे दिए पहराई।
कोसक जाई के कान फूक दये रे रवि मेरो हो जाने
जल्दी गुरु मन्त्र रे दियो बताई।
राम्के हीरको कुछ दिन राखो कुटीमें रे रवि मेरो होजाने
गुरु ने इकदिन रे कहा समझाई।
गुरु अपने बातन को अब तुम जावो रे सुन बच्चा मेरे
लेउ अपने मुलक को रे सुधलगाई।
माय बाप से जाय मिलो तुमें रे सुन बच्चा मेरे
उनको निसदिन कर होतुम सिवकाई।
घर घर में तेरी कीरत छाई
कवि इतनी सुन के गुरबर जीं की रे रबि मेरो ही जाने
राम्के ने दीन्हों रे शीश झुकाई।
राम्के आशीर्वाद देउ तुम स्वामी रे रबि मेरो हो जाके
तब घर को जावे रे हम हरषाई।
जो हम वचन माँग लेय तुम से रे सुन बाबा मेरे
गुरुजी दे देउ रे मोय हरषाई।
इसी जगह में जेमी फाट जाय रे सुन बाबा मेरे
दानों जमी के अन्दर जाय समाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मेरी मुक्त हुइ जाय यहां पे रे सुन बात्रा मेरे
हमह कछु अब चहिए नाही।
कवि---राझे को सुन गोरखनाथ ने रे रवि मेरौ हीजाने
बड़ी जोर से रे धौंस दिखाई।
गुरू---मरिवे की क्यों जिद ठान रहे सुन बच्चा मेरे
तेरे संग सुखन पायो रे हीरवाई।
तुम दोनों की नई जवानी है रे सुन बच्चा मेरे
मौज उड़ाय लेउ रें हम हरशाई।
समय चक्र ने सब को बांध लियौ रे सुन बच्चा मेरे
नहिलौट के आगो रे जग के माही।
कवि---गुरु की सुनके राझे मान रे रे रवि मेरौ ही जानें
चरनन दीन्हों रे शीश झुकाई।
रांझे हीर तब दोनों चल भये रे रवि मेरो ही जाने
रहे अपने मनमें रे दोऊ हरषाई।
सघन बनी में दोनों जाय रहे रे रवि मेरो ही जाने
चहुंदिश रात अन्धेरी रे रही छाई।
हाथ पसारे नहि सूझत बनमें रे रवि मेरो ही जाने
सिंह गरज रहे रें तन थर्राई।
राझो सौचे अपने मनमें रे रवि मेरो ही जानें
यहाँ प्रान बचनके रे हरगिजनाही।
छोड़कर जाई से कहन लगौ है रे रवि मेरो ही जाने
इससघन वनीमें रे मरन भयो आई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वनमें अपना कोई नहीं है रे सुन साजन मेरे
रहो चारों ओर को रे अंधिरिया छाई।
कवि-निर्भय हुइ के रांझे मरद ने रवि मेरो ही जाने
मीठी वन्शीं रे बन में बजाई।
बन्शी से अपने वीर बुलाये हैं रे रवि मेरो ही जाने
छिन में सिगरे बीर हैं रे गये आई।
बिपदा में सब साथ छोड़ दये रे रवि मेरो ही जाने
रिश्तेदार हितू भीं आई ॥
ऐसे दुख मैं रांझे मरद को रे रवि मेरो ही जाने
वीरेन साथ दिये हैं नाहीं।
रांझे हीर तब रोवन लागे लागे रे रवि मेरो ही जाने
नयनन आंसू रहे बहाई।

रांझे-अबन प्रान बचेंगे हमरे रे सुन प्यारी मेरी
हमरी सुनलेउ छोड़क जाई।
हीर--काहे स्वामी हिम्मत हार रहे सुन साजन मेरे
मन में धीरज बांधो रे तुम चितलाई।
कवि--रांझे हीर तब हिम्मत बांध के रे रवि मेरो हीजाने
वहां से चल भये रे मन हरसाई।
आगे २ रांझो चलि रहो रवि मेरो ही जाने
पीछे पीछे जाय रही रे वो छोड़क जाई।
बामी बनी थी एक वहां पर रे रवि मेरो ही जाने
सांची २ तुमको रे कहौ सुनाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

ओढ़ चादरे को मायाधारी रे रवि मेरो ही जाने
बाग से निकल के रे गयो आई।
रांझे हरि दोऊ सोवत वहाँ पै रे रवि मेरो ही जाने
नाग देख रहो रे अति बलदाई।
सूरत लख २ दोऊन की रे रवि मेरो ही जाने
अपने मन में रहौ हरषाई।
इन दोनों को हम कैसे खाय लेय रे रवि मेरो ही जाने
जोड़ी हम पै रे विनाशी नहिं जाई।
जो हम डस लेउ रांझे मरद को रे रवि मेरो ही जाने
विधवा हुइ जाय रे ये छोकरू जाई।
शेष कुवर ने मनमें सोच के रे रवि मेरो ही जाने
हीर हुरम की अंगुली में रे लिपा खाई।
नाग तो अपनी बर्मी में चल दियौ रे रवि मेरो ही जाने
हीर के तन में रे जहर समाई।
नीलो चेहरा इकदम पर गयो रे रवि मेरो ही जाने
मुंह से झाग पटक रह जाई।
भोर होत ही रांझो जग गयो रे रवि मेरो ही जाने
छोकरू जाई को रे रहो बुलाई।
जगी नहो जब हरि हुरम है रे रवि मेरो ही जाने
तब पास जाय के रे रहौ जगाई।
इधर उधर को रही हलाय है रे रवि मेरो ही जाने
रहो बड़ी जोर से रे अवाज लगाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जागत नही अब हीर हुरम है रे रबि मेरो ही जाने
खोल के घूंघट रे देखा आई।
गोरो रंग सब नीलो पर गयी रे रबि मेरो ही जाने
नारी देखे रे हाथ उठाई।
नबज चलत नहि जाकी देखा रे रबि मेरो ही जाने
रोय रहो रांझो रे आंसू बहाई।
रांझे-तेरे कारने घर हम छोड़ दियो रे सुन प्यारी
रोवत बुढ़ा भतीजे छोड़ दियो रे सुन प्यारी मेरी
रोवत छोड़ी रे सेतो भौजाई।
जंब सियाले में मैंने आयके रे सुन प्यारी मेरी
गैया पटमल की रे बनमें चराई।
तेरे कारने खिरक में सोयो रे सुन प्यारी मेरी
सब तन लीन्हों रे डाँसन खाई।
तेरे कारन जोगी बन गयो रे सुनि हीर दिवानी
घर २ मैंने रे अलख जगाई।
नाग को खायो अब न बचि है रे सुन प्यारी मेरी
जरा हमको दैयो रे जवाब सुनाई॥
करुना कर २ रांझो रोय रहो रे रबि मेरो ही जाने
आँखन आँसू रे रहौ बहाई।
सोच समझ के अपने मनमें रे रबि मेरो ही जाने
हीर को बिनती रहो सुनाई।
रांझे-हाथ भी जोरूं करूं तेरी बीनती रबि मेरो

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

आज गरीबी रे मेरी सुनके नाहीं ।
हम पे बिपदा भारी पर गई रे सुन भगवन मेरे
प्रभु हमरी देवो रे दुख नसाई ।
हतो सिंहासन विष्णुचन्द्र को रे रवि मेरो ही जाने
लियो नारद को रे बुलाई ।
देर करो न जल्दी जावो रे सुन नारद मेरे
रहो मेरे भक्त को कौन सताई ।
प्रभु की सुनके नारद चलि दयौं रे रवि मेरो ही जाने
जल्दी वन में रे गये आई ।
क्या नाम और कहा धाम है रे सुन बच्चा मेरे
कैसे बनमें गये रे आई ।
झा--जरूत हजारे धाव हमारो है रे सुन स्वामी मेरे
शंझा नाम हमार कहलई ।
वहां पर मुसीबत भारी पर गई रे सुन बाबा मेरे
नाग काट गयौ रे छोड़कर जाई ।
अब स्वामी कृपा करके रे सुन स्वामी मेरी
मेरी प्यारी को रें देउ जियाई ।
नारद--इतनी सुन के नारद कह रहे रे सुन बच्चा मेरे
हमरी सुन लेउ रें बेटा चितलाई ।
मन में धीरज धर लेव रें बेटा सुन बच्चा मेरे
भली करैंगे रे श्री रघुराई ।
नारद--श्री गोरख नाथ को सुमिरन करियो रे सुन बच्चा

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रहे राँझे को रे नारद समझाई।
कवि--धीर बंधायके नारद चल भये रे रवि मेरौही जाने
राँझौ सुमिरै रे ध्यान लगाई।
छोड़कर जाई की लाश उठाय के रे रवि मेरो ही जाने
रांझे ने कन्धा पै रे लई लटकाई।
गोरखनाथ की कुटियाको चलदियौ रे रवि मेरो ही जाने
रोय रहौ रांझौ रे आंसु बहाई।
गुरुवर के ढिंग पहुँच गयौ है रे रवि मेरौ ही जाने
कन्धा से लाश धरी है रे समुहे जाई।
बड़ी जोर से रोवन लागौ है रे रवि मेरो ही जाने
तब गुरजी चित ये रे आँख उठाई।
गुरुजी उठ के ठाड़े हुए गए रे रवि मेरो ही जाने
झट रांझे को लीर हृदय लगाई।
गुरु--मूड़मार के चों तू रोवे रे सुन रांझे सिपाही
मत तू रोवे रे आंसू बहाई।
अपने दिल में धीरज धरले रे सुन बच्चा मोर
रहे हैं हम तुमको समझाई।
कवि--रांझे की सुन गोरखनाथ ने रे रवि मेरो ही जाने
जल्दी दीन्हों रे उपाय बताई।
गुरु--बड़ी जोर से वन्शी बजाय दे रे सुन बच्चा मोरे
फिर मैं शेष कुमर को रे लिहौ बुलाई।
इसके तन से जहर खेंच लेय रे सुन बच्चा मोरे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

फिर यहबच जायगी तेरीहीर बाई ।
कवि-गुरु जी सुनके राक्षो वीर ने रे रवि मेरो ही जाने
लई अपने हाथ और वन्शी उठाई ।
वंशी धर लई अधर पे जाने रे रवि मेरो ही जानैं
दोऊ हाथ से रे रहौ बजाई ।
राक्षे वीर की वंशी बज रही रे रवि मेरो ही जाने
गुरजी धूनी रे तुरत लगाई ।
मन्त्र पढ़ २ शेष कुमर पे रे रवि मेरो ही जाने
श्री गोरखनाथ ने रे दियो चलाई ।
मन में जान गयो कुमर हैं रे रवि मेरो ही जाने
मन पछतावे रे बहु आधकाई ।
फिर शेष नाग से जाय कही है रे रवि मेरो ही जाने
पिताजी सन लेउ रे मोरी चितलाई ।
श्री गोरखनाथ जी गुस्सा हुइ के रे रवि मेरो ही जाने
जल्दी हमको रे रहे बुलाई ।
बाभी के ऊपर हमने डस लई रे रवि मेरो ही जाने
उनके चेलाकी रे हती लुगाई ।
बड़ी भारी मुशीबत आय गई रे रवि मेरो ही जाने
जाना परेबा रे गुरु के ।
इतनी सुनके वासुक कह रहो रे रवि मेरो ही जाने
लियो गोरख सेरे और बढ़ाई ।
गोरख जती से लड़े न जित है रे रवि मेरो ही जाने
कोई कल में रे नहि बच पाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वासुक की सुन तक्षक चल गयो रे रवि मेरो ही जाने
राह में जावे रे मैन घबराई।
थोड़ी देर में तक्षक चलके रे रवि मेरो ही जाने
गोरख के समुख गयो आई।
शीश झुकाल के तक्षक कहि रहो रे रवि मेरो ही जाने
खता की माफी रे देउ हरषाई।
तक्षक की सुन गोरखनाथ कह रहे रे रवि मेरो ही जाने
जहर खींचके रे दउ हीर जियाई।
गुरुकी सुन तक्षक तबही रे रवि मेरो ही जाने
जहर खींचके रे हीर जियाई।
तक्षक तब पाताल गयो है रे रवि मेरो ही जाने
सज्जन सुन लेउ रे कान लगाई।
गोरखनाथ मन हर्षित हुइ के रे रवि मेरो ही जाने
दो वर मांगो देउ हरषाई।
गुरुकी सुनके रांझो कह रहो रे सुन बाबा मेरे
अब नहिजीहैं रे इस जग के माई।
वचन देउ तुम पृथ्वी फट जाय रे रवि मेरो ही जाने
धरती में दोनों जाय रे समाई।
इकदम पृथ्वी फट गई जोर से रे रवि मेरो ही जाने
दोनों गये हैं रे जमी समाई।
सात जन्म तक सगं भयो है रे रवि मेरो ही जाने
अन्त समय मे रे मुक्ती पाई।

* समाप्त *

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

असली हीर रांझा

अमीचन्द का व्याह उर्फ रङ्गमगढ़ की लड़ाई

तेरहवां भाग

दोहा—जै जयरानी अम्बिका, सारो जन के काज।
आज गजाधरसिंह की, रखि दङ्गल में लाज॥

टेक—जन टरे तोय भवानी, दर्शन जल्दी दिखइयो री।
मइया मोइ भरोसो भारी, आजा नाहर की असवारी।
तेंने कहां पर करी अबारी, आइके धीर बँधयोरी॥ १
मइया जल्द वे तोय मन ई, कारे गाढ़े कटव...ई।
दीये पिंगुल में बटबाई, मेरी जीत ...रैयो री॥ २
महाभारत में पढ जिताये, कौरव दल को नष्ट कराये।
ते दुशमन से लीए दाये, मतना मोइ बिसरैयो री॥ ३
जगमें है रह्यो नाम तुम्हारी, विशदिन भक्तन को प्यारी
गजाधर कहै फतेहपुर वारी, कलम मेरी शुद्ध चलयोरी॥४
नारायण को सुमिरन करिके गुरु चरननमें रहो शिरनाई
लिखूं लेखनी अब रांझे की शुद्ध करो मेरी कविताई।
सब दिन भक्त आपने तारे बिना भक्ति तारो म ई।
सात द्वीप नवखंड मानि गए महिमा रही जगत छाई।
अमीचन्द को व्याह लिखूं मैं पंची सुनलेउ ...लाई।
रङ्गमगढ़ को रङ्गम राजा ताके सुता भई है आई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

चन्द्र वदन मृग लोचन नैना देखि २ मात हरषाई।
राम पदम मुहड़े की शोभा होठन रही लाली छाई॥

रङ्गत - राजा आयौ महल में सरदारो सुनिऐ
देख खुशी भई रे जाकी ब्य हा।

रानी पति से कहि रही सरदारो २ सुनिये
क्वारी महलन रे आपके जाई।

जल्दी सुता को ब्याह कीजिए सरदारौ सुनिऐ
महलन नित उठि रे पड़े परछाई।

इतनो सुनिके राजा कहि रहौ सुनि पियारी मेरी
बात ई है रे समझ में आयी।

मैंने लखि लये चारो दिश में सुनि पियारी मेरी
सुता योग वर न पड़े रे लखाई।

पूरी करिये मेंरी सत्य को सुनि पियारी मेंरी
उसी कुमर को रे सुता दूं ब्याही।

नवरोबन को देय कटवाय के सुनि पियारी मेंरी
बाने व की देइ रे नाम मिटाई।

बेटी ब्याहूं उसके साथ मैं सुनि पियारी मेरी
हंसी खुशी से रे लेइ ओट सगाई।

शहर हमारे मैं अमीचन्द्र भप है सुनि पियारी मेरी
कुमर समझ मैं रे रहौ आई।

मात पिता उसके मरि गए सुनि पियारी मेरी

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बारी छोड़ो रे कुमर बलदाई ।

राजी हो तो मुख से तुम कहो सुनि पियारी कोरी उसी कुमर को रे देउ भेज सगाई ।

सुनि वचन भूप के सुधि लये रानी । दोऊ द्रगन से बरसो पानी । हिलकी भरि गई रोय । काम अहीर को बेटी अपनी कबहु न ब्याहिनो राजा माय ।

अपनी दूंगी प्राण गमाई । रानी राजा से कहै भाई । मानो बात सही । प्राण गवादू अपने साजन प छोडेगी नाव बही ।

सुनि राजा ने गिरा उचारी । कहो कहां की समझ तिहारी । ठीक बताय दे मोय । क्यों तू प्राण गमावे अपने क्यों रही है सिसको भरिके रोय ॥

बार बार रानी समझाई । गई समझ रानी के भाई । क्यों रही मोय सताय । जो आवे जहां शादी कीजो जो तोय सुहाय । लेकर ज्वाब चली रानी को राजा बङ्गला में आइ गयी ।

लहर—जोरि लियो दरवार भूप ने जरा न देर लगाई रे,
तुरत बुलाय लिये राजा ने अपने सब धुर भाई रे ।
तख्त हजारे करूं दुहिता की सगाई रे ।
इतनी सुन कर राजा की धुन गिरा सुनाई रे ।
नाई अरु ब्राह्मण जाये लिए हैं बुलाई रे ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दाखिल है गए बंगला में जरा न देर लगाई रे।
कोरी लियो कागज तुरन्त भूप ने मंगाई रे।
सिद्ध श्री नारायण लिख दई बेटी की सगाई रे।
दानेन की न मारो जावे शहर की मिटाई रे।
बबरी बन कटवाने को करि दानेन से लड़ाई रे।
ऊजर करि दयो दाने ने लिए मनुष हजारों खाई रे।
जो नहीं हिम्मत हो तो कर देउ साफ मनाई रे।
बन्द लिफाफा कियो रंगमगढ़ की मोहर लगाई रे।
नाऊ और प्रोहित को दिए हीरा सात गढ़ाई रे।
चिट्ठी है दई हाथ भूप ने मन अपने हरषाई रे।
नाऊ और प्रोहित ने लिए हैं घोड़ा सजाई रे।
चढ़ि घोड़ा दोनों चलि दए जरा न देर लगाई रे।
सात दिना को धावा कियो शहर की सीम दगाई रे।
घसे शहर के भीतर जाय रहे दोनों प्रहलाद नाई रे।

बारहमासी—नाई प्रोहित दोनों तख्त हजारे में आए। वनिता लखी शहर की दोनों भारी हरसाए। शहर को देखि रहे वनिता। सुबस बसि रहो शहर गाय रही सुख भारी जनता। देखि छबि इन्द्रासन लाजे। चौपड़ बने बजार निरख कर भूख प्यास भाजे। आगे बाज बढ़ाय दीऐ। अमानचन्द के बंगला में दाखिल तुरत भए। पातुरा नाच रहीं बंगला। खुशबू छूट अमित

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

टाँगि रहे छींकेन पै घमला, रमग्मी नाऊ ने कीनी।
चिट्ठी तुरत लई प्रोहित से पढ़न सबन दीनी, बाँच के
खुशी भई भारी। नाई प्रोहित परस दए भोजन
कचन थारी

ज्योनार—नाई प्रोहित जैमें ज्योनार धरी है कंचन थारी।
कली—थारी अरु कटोरा पर से लोटा धरे अगार।
अति आनन्द भूप के द्वारे होन लगी ज्योनार॥
तो०—त्रिया गावें गारी॥ नाई॥
कली—लुचई मगद कचौड़ी खुरमा लड्डू धरे सम्भाल।
घेवर मोहन भोग इमरती दई जलेबी डाल।
तो०·करी खातिर हारी। वाइ।
कली-रबड़ी खोआ दूध मलाई पेड़ा मधुर बनाये।
बरफी बालूसाइ मठूं मोमन के बन वाये।
तो०-मिठाई बरेली वारी। वाई०।
कली=पेठा हलुआ दिल खुशाद और परस दिये रस-
गुल्लाह चामर और गुलाब जामुन के आगे धरिदये कुलह
तोड-मिठाइ २ न्यारी। ४। नाई॥
कली-खास डाकखना और मगढ़ के रस भानो होगी,
फतेहपुर शुभ धाम गजाधर नाम कहते है मारा।
तो०-सुनो सब सरदारी॥
चाल-बिदा करि दीये वेगा भूपने कचन कडे दियेह
पहनाई कई लाख को माल दियोहै खुश है गएजहमाव

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रङ्गमगढ़ में पहुंच गए हैं भूप कचहरी आई ।
तख्त हजारे में करि आए सिक्का राजा को रह बतलाई
पक्को गढ़ बनि रही पत्थर को सोतिल बनि रही दिखाई
सबलसिंह तै हम फिर आये उसने शादी कीन्हाई
तखत हजारे को सब जानता है कीति रहो जगमें छाई
बबरी बन को कारणा दानेन से लड़ेगी आई
शहर पनाः के छुड़ा सब काटें राजा भारी बलदाई
भाग्य खुलि गये भूप कुमरि के राजकुमर में सुघराई
सुनकर वचन खुशी भया राजा महलन में पहुंचे जाई
कहन लगौ राजा रानी से प्यारी सुनि लेउ चितलाई
तखत हजारे में हैगई शादी नाऊ प्रोहित गए आई
त्यारी करौ ब्याह की प्यारी सुनिले मेरी चितलाई
दाबे मारे बबरी बन काटौ राजा भारी बलदाई

रङ्गल यहांकी बातें अब तो यहां रही सरदारो सुनिए
तखत हजारे की रे रहे सुनाई ।

चिट्ठी लिख रहौ राजा ब्याह की सरदारो सुनिए
कोरो कागज तो रे लयो मगाई ।

सिद्ध श्री गणपति लिख दयो रे सरदारो सुनिए
सब राजन को रे लिखौ बुलाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हद चढ़ामि कामिन कमर पे रे सरदारो सुनिये
महलन मङ्गल रे रहीं हैं गाई ।

देश २ के राजा आय गये रे सरदारो सुनिये
डेरा तम्बू रे दिए गड़वाई ।

रङ्ग महल में दावत है रही रे सरदारो सुनिये
सातो जाति ता रे दई जिमाई ।

सब राजन को दियो जिमाय के सरदारो सुनिए
बड़े प्रेम से रे दावत खाई ।

होत सबेरे दिया हुकम है रे सरदारो सुनिये
लशकर में दियो रे बिगुल बजाई ।

त्यारी करि दई चलिबे को रे सरदारो सुनिये
सजने लागे रे सभा छुटे भाई ।

फौज रिसाले जाके सजि गये रे सरदारो सुनिये
हाथी साजि गये रे गिने नहीं जाई ।

घोड़ा चढ़ैया घोड़न चढ़ि गये रे सरदारो सुनिये
पैदल पल्टन रे सङ्ग कछु भाई ।

अमीचन्द तो बरना बनि गयो रे सरदारो सुनिए
शीश पे मौर रे धरो जब भाई ।

मङ्गल गाय रहीं हिलमिल कामिनी सरदारो सुनिए
पत्रिका दीनी है महल भिजवाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

लशकर चलि दयौ भूप को रे सरदारो सुनिए
धौंसा बाजत रे राह में जाई।

रात दिना को धावा करि चले रे सरदारो सुनिऐ
खबरी खब को रे सीम दबाई।

डेरा डारे जाकर सीम पै रे सरदारो सुनिऐ
धौंसा दियौ है हाल बजवायो।

धौंसा बाजौ हल्ला है गयौ रे सरदारो सुनिऐ
बाने सुनकर तो रे गए चकराई।

लशकर धायौ असुरन आइ के सरदारो सुनिऐ
गए बरागी रे सबौ घबराई।

हुकम सुनायौ अमीचन्द भूप ने सरदारो सुनिऐ
यहां सजि जाऔ रे लड़न को भाई।

सबी आय गयौ अब तो युद्ध को सरदारो सुनिऐ
अब क्यों राखो है रे देर लगाई।

* बारहमासी *

भूप ने करो इशारो है। दानैन से लड़िवे कूं भरि रहे ज्वान हुंकारो है॥ चलि दए पट्ठा उतपाती। दिए बनौ में हूलि एकदम से खूनी हाथी। ज्वान लड़ि रहे लड़ाई है। करी बनी बिसमार असुर की आफत आई है॥ वीर नर लड़ि रहे मरदाने। पकरि पकरि के

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/
धरनी पै डारे सब हैं सबर। नाश असुरन कौ करि
दा यो। दाने दीपे मार जीत को बिगुल बजाय दियो ॥
खबरि रुक्म ने सुनि पाई। बवरो बन सर करो भेज
दयों जाने बाई ॥ चली अब जयमाली लीजे। पूरी
है गई शर्त भूर तुम वारोठी कीजे॥ भई सबकी पूरव
करवा। जल्दी से तुम भेजि देउ राजन अपनों बरना ॥
भेज दयी कुमर हजारो है। सारी नारी छज्जेब पे
पावत एगारी है।

गारी

हम जानत तेरी जाति लला तुम सत जतियाँ। देश हिन्द
केबसा किनारे हमसे यह सुन राखी ॥
आई माता तिहारी भगके वह जगल था साखी।
तोड़= खसम की खाय लतिया ॥ हम ।' १
कलो देश हमारे भारत है लाला कंचन की खानि।
और देश में मात तुम्हारी है मक्का पड़ी चबानि।
तो० घिस गये सब दतिया ॥ हम ॥
देश हमारे मैं मात तुम्हारो है करि लीये काजी मुल्ले,
दूध मलई रबड़ी खोआ और खावे रसगुल्ले।
तो०-घरे पाव्व सतिया। हम।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कली-यहाँ पर मात तुम्हारी ने लाला जनके दियो है
बहैंहो । कारे घोरे लगडें लूले कुछ कावे कई मेड़ो ।
तो.-न सोवे सारी रतीया । हम. ।
कली-क्यों वहीं लाला मात अपनी लाये अपने साथ
मात तुम्हारो बिना कुमर जो सूवी लगे बरात ।
तो.-करूंगी हो दो बतिया । हम ।
कल—छोड़ पिता जो दये तुम्हारे मात रही हुरसन्डीं ।
अबे बचिके सत भामा बठां प किरस्तानी रन्डी ॥
सो—लगाई लिये तुम छतिया । हम. ।
अब ही लाला और सुनाउं सुनि में वे जो रक्खो ।
क्यों न चेकूं नारि नबाई मजा व्याह को चक्खो ।
तो.-चढे आये ह थया ।
पिता तुम्हारे सीधे साधे मात बड़ी छर छन्दी । पंछे
खबर पड़ी थी हमको है मारी नाखन्दी ।
तो.-भेजूंगी लिख पतियाँ । हम।
बाबा मामा तुम्हरे नाएं सुधि राखी है ओसाफी । कछु
याद कछु भूल गई हूँ दिन है गयेहैं काफी ।
तो.-भले संग में भतिया । हम ।
इब गारीन को बिलग मति मानों कछु आगे से गारी

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

विजेन्द्रसिंह व्याह में राखी अब ही गवाति नारी ॥

तो,-अभी दादी व तयां । हम ।

भावर का गात

बरनी की डलौ मगओ घड़ो शुभ सोधि २ के ।
केना मंगाओ मंडप गढ़ाओ ।
चन्दन की लाओ लकदिया ।
आक धाक के समद मगाओ ।
पानी की लाओ गगरिया । घडी.
धूप दीप रारी चावल लाओ ।
फूलन की लाओ छबरिया । घड़ी ।
कपड़ा पहना के वरनो को लाओ ।
लखि कहीं जावे उगरिया ।
वरनी पै डालो फूल बतासे ।
लगि नही आवे बजरिया । ५
रगत रगम राजा ने भात दई डरवाके सरदारो २
सुनिये । कंचन कलशा रे दिये नहाई ।
मोहर असर्फी भरिके दीये सरदारो २ सुनिये ईनकी
गिनतोरे मिनीना जाई ।
द्रव्य दियो है कई लाख को सरदारो २ सुनिये गढ़ीन
में दियो रे माल भरवाई ।
भाँवर पड़ि गई सातों महल में सरदारो २ सुनिये । अब

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दावत को रे बरात बुलाई।
दावत दई सबे जिसाय के सरदारो २ सुनिये। आनन्द भारी रे रहो है छाई।
तख्त हजारे बारो कहि रहो सरदारो २ सुनिये। अब देउ हमकों रे बिदा कराई।
बहुत दिना तो हमें यहां है गए सरदारो २ सुनिए। चिन्ता रही रे जिगर पै छाई।
इतनी सुनिकर राजा चलिदयो सरदारो २ सुनिए। महलन रानी को गिरा सुनाई।
त्यार कुमर को जल्दी किजिए सरदारो २ सुनिए अब क्यों राखी देर लगाई।

धुनि-तावे सीरे लिए जल करवाई। मल मल बेठी उधर न बाई। चोआ चन्दन अतर अरगजा कि शरबतनें देयी मलवाई। पटिया लीनी पार।
पाँव महावर लिए रचाई सुरमा नैनन मैं लयो सार।
तियार भई महलन मैं बेटी,
अपनी माता से मिल भेटी, बेटी गई है रोय ठिकय त्योहार भूजम तजइयों सावनमें बुलाय लीजो मातारी मो मिलिके सुता बैठ गई रथ मे बेटी हरत हजारे आय गहो।

✽ समाप्त ✽

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

असली हीर रांझा

चौदहवां भाग

पटमल का ब्याह उर्फ भीलन की लूट

दो० जैजग जननी अम्बिका सारो जनके काज।
आज गजाधर सिंह की रखि दंगल में लाज॥

भेट

जब टेरे रे तोय मनावो दर्शन जल्द दिखर्गो री, मैया
मोय भरोसो भारा, आय बा नाहर का असवारी तंने
कहां पर करी अवारी आपके धाम वधैंगो री।
मैया नल वे ताय मनाया कारे गाढ़ कटब लायी दोये
पिगुल म बटवाई मंगो ोत करया री २
महा भारत मे पंड जिताये कौरव दल को नष्ट कराये
तेने दुश्मन से लिये दाये मतना मोय विसरयो री।३
जगमें है रहयो नाम तुम्हारो निशि दिन भक्तन को पत
पारो गजाधर को फतेह २ बारो कलम मेरी शुद्ध
चलंयोरी।
बाल जीवन चरित्र लिख रांझे को पचों सुनियो चितलाई
ऐसा वीर जलेथा है गयो दुनियां में दूजा हो नाई।
सत्तर वोर से रांझा पदा बहत्तरसे छोठक जाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दावत को रे बरात बुलाई ।
दावत दई सबे जिमाय के सरदारो २ सुनिये । आनन्द भारी रे रहो है छाई ।
तख्त हजारे बारो कहि रहो सरदारो २ सुनिये । अब देउ हमको रे बिदा कराई ।
बहुत दिना तो हमें यहां है गए सरदारो २ सुनिए । चिन्ता रही रे जिगर में छाई ।
इतनी सुनिकर राजा चलिदयो सरदारो २ सुनिए । महलन रानी को गिरा सनाई ।
त्यार कुमर को जल्दी कीजिए सरदारो २ सुनिए अब क्यों राखी देर लगाई ।

धुनि-तावि सी रे लिए जल करवाई । मल मल बेठी उधर न बाई । चोआ चन्दन अतर अरगजा कि शरतनें देयी मलगाई । पटिया लीनी पार ।
पाँव महावर लिए रचाई सुरम। ननव में जयो सार ।
तियार भई महलन में बेटी,
अपनी माता से मिल मेटी, बेटी गई है रोय ठिकाय
त्योहार भूनम तजइयों सावनमें बुलाय लीजो मातारी मो मिलिके सुंता बैठ गई रथ मे बेटी तख्त हजारे आय गहो ।

* समाप्त *

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

असली हीर रांझा

चौदहवां भाग

पटमल्ल का ब्याह उर्फ भीलन को लूट

दो० नैजग जननी अम्बिका सारो जनके काज।
आज गजाधर सिंह की रखि दंगल में लाज॥

भेट

जब टेरे रे तोय मबावो दर्शन जल्द दिखऱ्यो गो, मैया मोय भरोसो भारी, आयजा नाहर का असवारी तंने कहां पर करी अवारी आपके धाम वधैगो री।
मैया नल वे ताय मनाया कारे गाढ़ कटव लायी दोये पिगुल म बटवाई मेगो ोत करया री २
महा भारत मे पंढ जिताये कौरव दल को नष्ट कराये तेने दुश्मन से लिये दाये मतना मोय बिसरयो ो ।३
जगमें है रहगो नाम तुम्हारो निशि दिन भक्तन को पन पारो गजाधर को फतेह २ बारो कलम मेरी शुद्ध च लंबोरो।
बाल जीवन चरित्र लिख रंझे को पचों सुनियो चितलाई ऐसा बीर जलेथा है गयो दुनियां में दूजा हो नाई।
सत्त वीर से रांझा पदा बहत्तरसे छोछक जाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सात जन्म से पाक मुहब्बत इन दोनों में है आई ।
यहां की बाते यहां छोड़ों भीलम गढ़ की सुन चितलाई
अजय नृपत भीलम गढ़ को ताके सुता जन्मी आई ।
मृग लोचन और शशि बदनी है,शोभा वरण कहीनाज ।
कोकिल बनी हसा हासिन ने लखि २ माता हरसाइ ।
पदम कुमारे बेटी के पग लाली रहीं होटन छाई ।
रंगत-: जय राजा आयो महल में सरदारो सुनिये
देखि खुशी भई रे भूप की व्याही ।
हंसि हंसि रानी पति से कह रही सरदारो सुनिये
क्यारी महलन रे आपकी जाई ।
ब्याह सुता को जल्दी कीजिये सुनि साजन २ मेरे ।
नित उठि महलन परे पग छाई ।
सुता आपकी बरना योग्य भई सुनि साजन २ मेरे ।
जल्दी बेटी कहीं करो सगाई।
इतनी सुनि राजा कह रह्यो सुनि प्यारी २ मेरी ।
बात समझ में रे नही है आई ।
चारो दिश में मैंने लखि लये सुनि प्यारी २ मेरी ।
सुता योग्य बरेन पड़े लखाई ।
शर्त हमारी जो पूरी करे सरदारो २ सुनिये ।
उसी भूप को रे कुमारी यूं व्याही ।
सघन बन को कटवावे आपके सुनि प्यारी २ मेरी ।
मोलव दल से रे करेगा लड़ाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सुता ब्यायू उसके साथ में सुवि प्यारी २ मेरा।
हंसी खुशी रे लेह आट समाइ ॥
तख्त हजारे में छाकक भूप है सुनि प्यारी २ मेरी।
स्यानो है गयो रे कुमर बलदाइ ॥
जो वह आवे तेरी समझमें सुनि प्यारी २ मेरी।
उसके वहाँ तीरे देउ भेज सगाई।
संगम बन करवावे आपके सुनि प्यारी २ मेरी।
भाल न दल का रे, दे धूल मिलाइ।
कैसा सुनिकर तू चुप होय सुनि प्यारी २ मेरा।
कहा समझ में रे तुम्हारे आई।

धुनि-इतनो सुनकर रोयगो रानी। दोउ द्रग से बरसे पानी
ह बहार जो होय। कौम अहीर को बेटी अपनी
कबहूँ न व्याहुनो होयगी ढेंढा को बाँध कमर से लूगी
काऊं कुआ में खिसक पड़ूगी। मेरो मानों सजन कही
जाटव मे मर जाऊगी पिया डोलंगी नाव वही।
ऐसे घर बेटी को न व्याहूं। अपने पति मैं प्राण गमाऊं
सुनि लीजे चित लाय। तख हजारे में करोगे सगाई मेरो
व्याहौं देगी प्राण गमाय। इतने बचन सुने रानी के
राजा हंसि हंसि बानी कहि रह्यो।

रंगत–सुनि करि इतनी राजा कहि रह्यों सरदारा
सुनिये। हंस हंस रानी को आज सनाई।
आवे प्यारी जी तेरी समझ मेरे सुनि प्यारो २ मेरा

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

अपनी समझ सेरे करो मगाई ।
हंस कर चरचा करो सुनि प्यारी सुनि प्यारी मेरी ।
क्यों कर तुमको रे लगो बुराई ।
रागिनी–इतने वचन सुने रानीके गई भूप समझमें आई
अब मैं सत्य लिखूं चिट्ठी मैं सुनि प्यारी चितलाई ।
संगम वन को जो कट वावे मोहन से करे लड़ाई ।
बेसक मेरी राजकुमारी को ले जाइ प्यारी ब्याही ।
तख्त हजारे ओकक को मैं यूं भेज रहो सगाई ।
वचन भूप के सुने एकदम गई नारि मुसिकाई ।

चाल—इतनी सुनि कर चलि दयो राजा तुरत कचैरी गयो आई । जायके बैठ गयो बंगला में खोजा खोया बुलवाई । आय गयो खोजा है बंगला में शीश नवाय रहो हरषाई । कहा कारण महाराज बुलायो साफ साफ देउ बतलाई इतनी सुनिकर राजा बोला खोजा सुनिले चितलाइ । मांग ब्राह्मण और नाई को जल्दी ले आओ भाई ।

रंगत इतनी सुनि कर खोजा चलि दयो सरदारो २
सुनिए, मांगे ब्राह्मण २ संग लियो वाई ।
दाखिल बंगला में दोनों है गए सरदारो २ सुनिए,
जहां पर बैठो रे भूप बलदाई ।
छुट भया तो लिए बुलवाय के सरदारो २ सुनिए,

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सब मेयन मे रे जाने सलाह मिलाई।
ब्याह योग तो बेटो है गई रे मरदारो २ सुनिए,
कहीं पर तो रे करो सगाई।
इतनो सुनि कर छुटभया कहैं सुनि राजा २ हमरे,
शहर हमारे पं काठन कठिनाई।
भीलम दल की हल्ला विकट है सुनि राजा २ हमरे,
इस सङ्कट को रे देइ बच इ।
कवित्त—कलम को सम्हारि कागज मेज पे जमाय लियो अजयसिह राजा खत लिखत बनाई है। उज्वल वरण बेटी रम्भा से रूप में अगम, हंसी खुशी से राजा कोई ओट यह सगाई है। संगम बन के आय भीलम से युद्ध करे, संकट को मेटि मेरा लेइ सुता ब्याहा है। कहत पजेधर खत छोटक को तयार कियो, पुरोहित के पत्र दियो हाथ पकराई है।

*** तर्ज—रेशमी शलवार ***

गाना—नाई मोहिन चले मगन मन भारी है।
भोलम गढ से जाय न करी अवारी है।
कली*दो दिन दिये गढ बिताइ, गये तख्त हजारे आई,
चलने में करी सफाई, नहीं मग में देर लगई।
तो० वाज असवारी है। १।
कली=जहां होय शाम रुक जाते, वहीं सुलफा भांग उड़ाते

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/
कर बशा गर्क सो जावे, होय भोर तभी उठि जाते ।
तो०—च लखें पिछारी है । २ ।
कवी—ये करते चले सफर है, रस्ते में बनी जबर है ।
जामें दुबके शेर बबर है, नाई प्रोहित को डर है ।
तो० रैन अंधियारी है । ३ ।
कवी=कहीं पे जाय करें गुजारो, वहीं दीखे तख्तहजारो
गजाधरसिंह जे मतवारो, कहै ग्राम फतेपुर वारो ।
तो०=सुवो सरदारी है । ४ ।

* तर्ज—बारहमासी *

तख्त हजारे में नाई प्रोहित दोउ आए । बनता देखि शहर की दोनों मन में हरषाए । शहर को दोनों निरखि रहे, भारी सजा बजार जौहरी हीरा परखि रहे । देखि छवि इन्द्रासन लाजे, चौपड़ के बाजार देख कर भूख प्यास भाजे । खुशी भये दोउन के हीए, छोड़कर के बंगला जब आए बाज बढ़ाय दीए ।
रङ्गत—दाखिल है गये बगला बीच में सरदारो २ सुनिए
झुकि राजा को रहे शीश नवाई ।
मुंह से इतनी भइया कुछ ना कही सरदारो २ सुनिए,
चिटठी दीनी रे हाथ गहाई ।
चिट्ठी बांची खोलकर भूप ने सरदारो २ सुनिए,
वह चिट्ठी को रे खुशी अति छाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हंसी खुशी से सिक्का रखि सभी सरदारो २ सुनिए,
नाई प्रोहित रे रहे दावत खाई।

ज्यौना...नाई प्रोहित जैमें ज्यौनार परसि कंचन थारी। थारी और कटोरा परसे लोटा धरे अगार। अति आनंद भूप के द्वारे होंन लगी ज्यौनार। त्रिया गावें गारी।१ लुचई मगद कचौड़ी खुरमा लड्डू धरे सभार। घेवर मोहनभोग इमरती दई जलेबी डार। करी खातिरदारी।२ रबड़ी खोया दूध मलाई पेड़ा मधुर बनाये, बरफी बालूसाई मठ्ठे लोगन के हरसाये। मिठाई बरेली वारी।३ पेठा हलुवा दिलखुसाल और परसि दये रसगुल्ला। घेवर और गुलाब जामुन के आगे धरि दये कुलुवा। सुनों सब सरदारी।४

चाल...बिदा करि दीये नाई प्रोहित कंचन कड़े दिए पहनाई। कई लाख को माल दियो है खुश है के प्रोहित नाई।

रगत* यहाँ की बातें यहां रहीं सरदारो २ सुनिए,
तख्त हजारे की मेंड हो सुन ई।

तख्त हजारे में आनन्द छाय रहे सरदारो २ सुनिए,
शहर रोशनी रे जानि दई कराई।

किया बिदा लोचक भूप ने सरदारो २ सुनिए,
सातो जात तो रे दई जिमाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

*** तर्ज बारहमासी ***

हसी खुशी से नृप ने सातो जात जिमाई है। जै-जैकार मनाय रहे सब ने दावत खाई है। लगि रही दिल भारी करना, कामिन रहो बधाय कुमर पटमल को है बरना। है रहो दिल में बहुत खुशी, कंकन दीयो बांध कि जानि घरिके नौव सो। सेहरो शीश जमायो है, बरना दियो बनाय बिगुल बाजो बजवायो है। सजाय दिया इकदन्त हाथी, पटमल चलि दियो और चल छुटभैया है साथी। चलि रहो लशकर कोसन में, रात दिना ये चले ज्वान कछु मौजत मौसम पै।

धुनि* रात दिना का धावा कीयो। रस्ता में कहीं मुकाम न लीयो। करी करी मुहेम, कौन बढ़ावे जंजारवको भीलमगढ़ की दबा सीम। धौंसा दियो है बजवाई, जाकी घोर दूर तक जाई। चहुं दिश छाय गयो शोर, सुनि २ घोर बिगुल धौंसा की कोकन लागे मोर। हल्ला है गयी भीलमगढ़ में जानि दिये सिपाई भेजिके।

चाल* भीलमगढ़ में हल्ला हैगयो देखो बरात कौन सं आई, अजयसिंह ने नौकर भेजे खबर देउ जल्दी लाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इतनी सुनि के नौकर चलि गए घोड़ा लीए कसवाई।
जाकर कहि दई अजयसिंह से वरवा तो गयो है भाई।
धुनि-तख्तहजारे के वीर जुझारे, बांधि २ हथियार समर को भग्ते सरदार, संगम वन के हेत। काटी वनी धरणिपे डारी इन चौकस करि दयो खेत। हल्ला भीलन में पडिजाय टोल के टोल चले हैं लशकर लखि सँग भई घबड़ाय।
करि करि जोर बढ़े हैं आगे को देखो सारे धम्मा।
रागनो-एकदम ज्वान पड़े अरी कर बोल दियो है हल्लारे युद्ध करि रहे भीलन से देखो रजपूतों के लल्ला रे।
दावे के सर पकड़ पकड़ कि फोड़त जैसे मल्ला रे।
लड़े समर में हिन्दु आवें बढ़ते जाय मुसल्ला रे।
भीलन मार धरणि पे डारे वीर ऊधा पल्ला रे।
मोरमुकुट नई रागनी गावे भीलन डारे कल्ला रे।

चाल—और संगम वन को सग कर दयो वीर रहे दिल हुरषाई कई हजार मार दिये भीला बड़े २ जो बल दाई तख्त हजारे की सेन भीलन लाख से कम वाय निबटाई, खोजा पहुँचो भीलन गढ में हाल दियो समझाई।
हीरा सात हाथ पै धर के भेट भूप की कीये जाई

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कहवे लगे ब्राह्मण ना बारोटो देउ करवाई ।

बारोटी–कामन रही मंगल गाय सजन करि बारोटो ।

कलो–धन्य धन्य है भाग्य हमारे दीये दुख गमाय ।

मार भील धरणी पै डारे दोयौंहैवन कट्ट वाय ।

तोड़–हमारो शादी ओटी ॥१॥

कली-भीलन जुलम गजारे भार बगर कीये चौपट्टा

बालक बारे न को कथा गिनतो लोग खाय लये छट्टा

तोड़-न खाने दे रोटी । २ ।

कला-इन भीलन से सजन हमारी एक पड़ोवा पेश,

एक परीक्षित मेरो खायलई जब से भई कलेश ।

तोड़-सुनों घर में छ'टी । ३ ।

कला-कामिन गाय रही महलन में भारी है रही

भीर हमने साजन यह सुन पाई तुम हो कौम अहीर ।

तोड़-जाति तुम्हारी खोटी । ४ ।

कला-इन गारान को बिलग न मानों करो आपनों

काम । वरवा जुग २ जीयो भैया खुश रही अपने धाम ।

तोड़-सुनो भाषा मोटी । ५ ।

कली-गाँम फतपूर धाम हमारो कारस की है खेरो.

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

तोछे गढ़ । पास गजाधर नाम कहत हैं मेरो ।
तोड़ भंग मैंने घोट्टीं । ६

रङ्गत–अजय राजा ने बारौटी करी सरदारो २ सुनिए,
कवच कलशा रे दिए गहाई ।
भामर पड़ि गई सातो महल में सरदारो २ सुनिए,
अब दावत को रे बरात बुलाई ।
करो रोशनी अपने शहर में सरदारो २ सुनिए
गैस के रे हण्डा दिये है लटकाई ।
आये हैं बराती दावत खायबे रे सरदारो २ सुनिए,
तुरत बिछाई रे दई बिछवाई ।

ज्यौनार--जे रहे बराती जौनार गांय रहीं कामिन गारी । भीर महल में है रही भारी कामिन मगल गामें, गांव के लोग जुगति से परसें सजन प्रेम से खामें । करो खातिरदारी । १ । लोटा और कटोरा बेला थारी धरो अगार । जल्दी जल्दी इनको परसो क्यों तुम करो विचार । धरो जल की झारी । २ । पूड़ी और कचौड़ी लुचई लड्डू धरो संभार । घेवर मोहनभोग इमरती देउ थार में डार । मिठाई न्यारी-न्यारी । ३ । खुरचन

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रबड़ी दूध मलाई परसो बालूसाई। गुलाबजामुन और रसगुल्ला चम-चम देउ मिठाई। जो अति खुशबू वारी ४

पुनि-अजय राजा ने करी है सफाई, तुरन्त विदा बेटी करवाई। मेरी पंच सुनौ चितलाई, जो रांझेको लेइ पाई, रोग मवेशी को कटि जाई। मोय पायबेको चाहु, ग्राम फतेपुर कहत गजाधर कहो पटमल राजा को ब्याहु।

कवित्त--चार छः आदमी मिल जुल के बैठे होय, आपस में कहैं कहा काम जारी है। दुशमन देख जात देखत में चक्कर खात मन में खिसियाय जात इनने कहा मिसिल विचारी है। हुक्का को छोड़ि देत उठि घर को धाय जात बालक फटकार कहै पास बुलाय वारी है। गजाधर कहै भारत में ऐसे नर पैदा भए, आप घर कछु बचै न औरन पै खिस्याय और देत फिर पारो है।

इति

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

असली हीर रांझा

चनुआ का ब्याह उर्फ सिंहलद्वीप की लड़ाई

पन्द्रहवां भाग

दोहा=विघ्न हरण मङ्गल करन, सकल संभाग्न काज।
आज गजाधरसिंह की, रखि रंग में लाज॥

*** भेंट ***

टेक—भक्तन की रख लाज, आज तू जय राधा रानी।

कली मैंने प्रथम तू मनाई; रखियो लाज सभा में आयी।
तैने कहां पर देर लगाई आजा जल्दी महारानी।

कली=फागुन में लगै मेला भारी. जहां पर बहुत जुरें नर नारी॥ पास में ताल तेरे महतारी, कि जामें है ठन्डा पानी॥ १

कली-मैया रो कोई तुमरो ध्यान लगावे, उसका मसिद्ध का है जावे। मुख से जो मांगे सो पावे। कभी न हो
लीक-मैया तेरो लिया सहारा, ताम अभी उमर कोप उसको हानी॥ २

बारी। गजाधर कहै फतेहपुर बारी। जगत में थोड़ी जिन्दगानी॥ ४

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

आज दास ने तोय मनाई, मेरी सुधि क्यों बिसरायी।
लघु लेखनी रांझे की कलम चले मेरो सरायी।
भूले अक्षर मोय बताओ कन्ठ बैठ दुरगे मायी।
बिजय राजा अखंगढ़ को ताके सुता जनमो आयी।
मृग लोचन और शशि बदनी जाकी शोभा कही न जायी।
कोकिल बनी हंस हँसन है लखि २ माता शरमायी
पदम कुमारे बेटी के पैर में लाली रही छोटन छायी।

रंगत—बिजय राजा आयो महल में सरदारो सुनिए देख खुशी भयी भूप की ब्याही।

हँस २ रानी पति से कह रही सुनि बालम मेरे कवारी महलन रे आपको जायी।

ब्याह सुता को जल्दी कीजिए सुनि साजन रे रे नित उठि महलन रे पड़े परछायी।

सुता आपकी भई बर योग है सुनि साजन मेरे जल्दी बेटी की रे करौं सगाई।

इतनी सुनिके राजा कहि रहो सुनि प्यारी मेरीं बात समझ में रे गई है आई।

चारों दिश में मैंने लखि लिए सुनि प्यारी मेरी सुता योग्य वर के रे पड़े न लखाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

शर्त हमारी जो पूरी करे सुनि पियारी मेरी
उसी भूप को रे कुमरि दूं ब्याही ।
खन्दक बन को देइ कटवाइ सुनि पियारी मेरी
रुहेलेन दल से रे करे वो लड़ाइ ।
सुता ब्याह दू उसके साथ में सुनि पियारी मेरी
हंसी खुशी से रे ल आदि समाइ ।
तख्त हजारे में फूलसिंह भूप है सुनि पियारी मेरी
मेरो समझ में रे कुमर गयो आई ।
जौन वह आवे तेगी समझ में सुनि पियारी मेरी
उसके वहीं तो रे दऊं भेजि सगाई ।
खन्दक बन कटवावे आयके सुनि पियारी मेरी
रुहिले दल को रे दए धूल मिलाई ।
कैसे सुनकर तू चुप है गई सुनि पियारी मेरी
कहा समझ में रे तुम्हारी आई ।

धुनि-इतनो सुनकर रोय गई रानी । दोऊ दृगन से बरसे पानी । होवहार जो होय । कौम अहीर की बेटी अपनो कबहू न ब्याहनो साजन मोय । बेटा का बांधि कमर से लंगो । काऊ कुआ में खिसक पडूंगी । मेरी मानों सजन कहो । जाढव से मरि जाऊँगी पिया पीछे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

डोलेगी नाव वही। ऐसे घर बेटी को न ब्याहूं। अपने पति मैं प्राण गमाऊं। सुनि लीजे चितलाय। तरुन हजारे में करोगे सगाई तेरी ब्याही बेगी प्राण गमाय। इतने वचन सुने रानी के राजा हंसि हंसि बानी कहि रह्यौ।

रङ्गत–इतनो सुन राजा कहि रह्यो सरदारो सुनिए हंस २ रानी को रे अरज सुनाई।

आवे प्यारी जो तेरी समझ में सुनि प्यारी मेरी अपनो समझ से रे करो सगाई।

इतनी सुनि रानी कहि रही सुनि सजान मेरे अरज गरीबी रे सुने के नहीं।

हवस नगर को राजा है बड़ो सुनि साजन मेरे उसकी कीरति रे मैंने सुनि पाई।

सब राजन में नादो है बड़ी सुनि साजन मेरे उसके लड़का को रे करो सगाई।

दावे मारे यहाँ पेर आय के सुनि साजन मेरे जाय हमारे रे दुःख मिटाई।

इतनी सुनकर राजा खुश भयो रे सरदारो सुनिए बात हमारी रे समझ में आई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

इतनी कहिके राजा चाल दयो सरदारो सुनिए भूप कचहरी में गयौ है आई।

छुट भइया तो लिए बोलिके सरदारो सुनिए नाऊ प्रोहित रे लिए बुलवाई।

चिट्ठी लिख रहौ अपने हाथ से सरदारो सुनिए दवात कलम तो रे लई उठाई।

कबित—कलम को संभाल कागज में जमाय लई श्री सिद्ध गनपति तो लिये मनाई है। सिंहलद्वीप ग्राम नाम अपनों हूं लिखो है भूप अपनी दुहिता की लिख दई सगाई है॥ इबस नगर को चिट्ठी लिखी बड़े सरन में भूप भेजी अपनी बेटी की सगाई है। ढाँकक बन के दानिन से युद्ध करो आय गजाधर कहत सुता जब लेउ ब्याही है।

*** कबित्त ***

दूसरी लिखी है चिट्ठी भूप ने न कीनी देर तख्त हजारो गांव लिखो हरषाय के।

सिंहल दीप आयो आप दानव से युद्ध करो। खंडक वनी को देउ भूप कटवाय के।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दाने दुख दई दुख अति देत भारी । असुरन
को जायौ तुम नाम को मिटाय के ।
गजाधर कहत अपने कुमर को बरात लाओ ।
हंसी खुशी से बेटी ले जाओ आप ब्याह के ।

कहरवा

भूप ने चिट्ठी लिखकर नाई को दई पकराय ।
भेंट को हीरा दीये राजा ने सात गाय ।
चलि दीयें नाई प्रोहित अपने निज बाज सजाय ।
रात दिन को करि धावा हस नगर वो गए आय ।
शहर की बनिता देखी शोभा कहीं ना जाय ।
किले में दोनों धसि गयें चिट्ठी दई है पकराय ।
बांचि रहो खत को राजा फूलों न अंग समाय ।
युद्ध लिख रहो दानेन को सुनत गयो है कुम्हिलाय,
है दई चिट्ठी वापिस घर से को मरिवे को जाय,
चलि दये धाऊ प्रोहित मन में रहे हैं पछिताय ।
दुखी है भारो चोला ऐसो सुता मरिजाय । सगाई
कोई न ओटे भारी रहें दुख पाय ।
बढ़ाय दिये दोउन घोड़ा गए है हजारे में आय ।
बनि रहो गढ़ पत्थर को लाल दवाजा फौंबाय ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

किले पर करे रखाड़े पहंगे है बामें सिबाय ।।
धसि गए है फाटक में भूप कचेरी गए आय ।

रंगत-दोनों ठाड़े बंगला में है गए सरदारो २ सुनिए ।
शोभा देखि रे बड़े हरषाई ।
बारेहद्वारी को हैं बांगला सरदारो २ सुनिए ।
खम्ब अठासी की बैठक भाई ।
खम्ब २ पे तोता टंगि रहे सरदारो सुनिए ।
राम नाम कौरे शब्द सुनाई ।
वाचे पातुरा बंगला बीच में सरदारो सुनिए ।
तबला सारंगी राग रहें गाई ।
चिट्ठी निकाली नाई ने जेब से सरदारो सुनिए ।
जो राजा को रे दई गहाई ।
खत को बांचत राजा खुश भयो सरदारो सुनिए ।
शहर सिंहल तौ रे लिख रहो भाई ।
दाने भारे मेरे द्वार पे सरदारो सुनिए ।
जब बढ़ी की रे होइ सगाई ।
खांडक बन को देइ कटाय के सरदारो सुनिये
बेशक बेटी को रे लेजाओ ब्याही ।
हंसी खुशी से राजा फूलसिंह सरदारो सुनिये
सिक्का चनुआ को रे लयो चढ़ाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

भीर महल में भारी है बड़ी सरदारो सुनिये
कामिन मङ्गल रे रही हैं गाई।

नाऊ प्रोहित दिए जिमाय के सरदारो सुनिये
कंचन दिये रे कड़े पहनाई।

विदा भूप ने दोनों करि दये सरदारो सुनिये
सिंहल दीप को रे चले दोऊ भाई।

ब्याह की त्यारी राजा करि रहो सरदारो सुनिये
चिट्ठी बाने रे स्वयम लिखाई।

सिग्नामा लिख दई रम्मी सरदारो सुनिये
व्याह कुमर को रे लिखो हरषाई।

बन्द लिफाफा बावे करि दयो सरदारो सुनिये
तखत हजारे को रे मौहर लगाई।

तुरन्त रवावे खत कर दए सरदारो सुनिये
सब राजन को रे रही बुलाई।

यहाँ की बातें अब तो यहाँ रहीं सरदारो सुनिये
सिंहल दीप को रे रही सुनाई।

नाऊ प्रोहित दोऊ पहुँच गए सरदारो सुनिये
भूप कचहरी में रे गए आई।

हाल सुनायौ दोउन भूप को सरदारो सुनिये
हवस नगर की रे जिकर चलाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हवस नगर तो सिक्का छैलयो सुनि राजन मेरे
तखत हजारे घेरे दयी चढ़ाई।

व्याहिवे आवे अपने कुमर को सुनि राजन मेरे
दानेन के तो रे जाय नाम मिटाई।

डांडक को देऊ कटवाय के सुनि राजन मेरे
तेरी दुहिता को रे लेजाय व्याही।

त्यारी करना राजा व्याह की सुनि राजन मेरे
अब क्यों राखी है रे देर लगाई।

इतनी सुनि के राजा कहि रही सरदारो सुनिये
कैसी बाबत रे तुमवे आई।

कहा विदा मैं तुमको दं दयी सरदारो सुनिये
नाऊ प्रोहित न रे गिरा सुनाई।

अब दयो है हम कई लाख को सरदारो सुनिये
कंचन कड़े दिये रे पहनाई।

छुट भइया लिए बोलिके रे सरदारो सुनिये
शहर दियो रे साफ करवाई।

करी रोशनी अपने शहर में सरदारो सुनिए
हन्डा दिए रे तुरत टङ्गवाई।

हल्दो चढ़ाय रही कामिनि कुमर पे सरदारो सुनिये
बरवा के दिल रे खुशी अति छाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

*** चाल ***

यहाँ की बातें अब यहीं छोड़ो आगे की सुनों चितलाई ।
तख्त हजारे में फूलसिंह ने हुकम दयो है फरमाई ।
नाते रिस्तेदार आय गये दावत सबको करवाई ।
दियो शहर जिमाय भूप ने रहो नहीं कोई भाई ।
बरना महल बनाय रहीं कामिन मंगल रही महलनगाई
महल तुरत भूप बुलवाए महलन पलकी भिजवाई ।
बरना बैठि गयौ पलकी में शीश सेहरी लहराई ।
लशकर त्यार भूप ने कीयौ धौंसा दियौ बजवाई ।
तख्त हजारे के पट्ठा सजिगए देर जरा कीनी नाई ।
हाथी चढ़ैया हाथी नु चढ़ि गए घोड़न बैठे घुड़याई ।
बड़ बड़ी तोपें अष्टधातु की को चरखिन पे धरवाई ।
तख्त हजारे से चले हैं बराती शहर से बाहर गए आई
बरना कुआ झांकि चलिदियौ माता ने कुच दयौ प्याई ।
रात दिना को धावा कीयौ खांडक बन पहुंचे जाई ।
सोम दबाय लई सिंहलद्वीप के डेरा दिऐ लगवाई ।
लशकर डाटि भूप ने दीयो बिगुल दियौ है बजवाई ।
मालुम पड़ गई सिंहलदीप में देखी बरात कोई आई ।
छुट भइया लिए साथ भूप ने लशकर में पहुचे जाई ।
हाथ में हीरा सात धरिके भेंट भूप को करवाई ।
तबही भांवर पड़ें कुंवर की खंडक बन देउ कटवाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दानेन से तुम लड़ो लड़ाई फेरि सुता को लेउ ब्याहा।
देके भेंट भूप लौटि आयौ इन्तजाम कियौ आइ ॥

* बारहमासी *

तख्त हजारे वारे राजा ने हुक्म सुनायौ है। है जाओ ज्वान तइयार समय लड़िबे कौ आयौ है ॥ बनो अब मेरें सब साथी। खड़क बन सर करौ हूलि देउ तुम खूनी हाथी ॥ बनो बिसमार करो वारो। दानन से करो जङ्ग पिछारी हटो न रण थारो। बजाय देउ तुम रन को डङ्का। खंडक बन सर करौ करो तुम दानेन को फङ्का।। ज्वान एक दम से दौरि छूटे। खडक बन सर करौ असुर दनैन दल कूटे॥ लड़ि रहे ज्वान करारे हैं। खंडक बन के दाने इन बीरन ने मारे हैं॥ बांधि लयो करौं फेंटा है। दानेन पे आय परो एक सूर कनेंटा है ॥ कुमर था भारी बलधारी। पेश कब्ज लई हाथ असुर के गर्दन पै मारी॥ खतम कर दिए हैं सब दाने। तख्त हजारे वारे राजा ऐसे नहिं जाने॥ करी दानेन की बरबादी। खडक बन सर करी होगई लाला की शादी॥

धुनि—राजा ने दिए भेजि सिपाई। बागीठी को लियौ कुमर बुलाई॥ बरना गयौ द्वार पे आई। कामिन गामी रहीं सचाई॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पुनि बारौठी दई भूप कराय। बरवा महलन दियो भिजवाय॥ मङ्गल गाय रहीं नारि। वेद रीति से कुमर को दीनो सात भवरियाँ डारि॥ मांभरि डारि भूप ने दीनी त्यारी दावत की करि दई। लई बरात बुलाय। दावत भूप जिमाय दई सबको रहे भारी आनन्द जाय॥ बेटी त्यार करी है महलन में हुकम भूप ने करि दयो। ताते स रे जल करवाय। मल मल बरनी और वहवाई। चोवा चन्दन और अमर अरगजा जाके केशन में दियो मलवाई॥ जरा न करी अवार। करि सिगार महल भई ठाढ़ी अब भई स ुया लहमा है त्यार॥ अजय राजा ने करी सफाई। तुरत विदा बेटी करवाई। मेरी प थी स ुनौं चितलाय। रांझे को गावे भाई रोग मवेशी को कटि जाय॥ रोग मवेशी में नहिं आवे। गावे सु ने परम पद पावे। रांझौ सजीवन मूर। जा मुख से रांझौ नहीं निकले वाके मुख में डारि देउ मिलके धूर॥ मोय गाइवे की चाह, गाम फतेपुर कहत गजाधर भयो धनुआ राजा को व्याह॥ दिल की दूर भई भै। गाम फतेहपुर कहत गजाधर बोलो अटल क्षत्र दुरगे की जै॥

* इति *

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

असली हीर रांझा

सोलहवां भाग

कन्नूपाल का ब्याह उर्फ खैरागढ़ की लड़ाई

दो०—जै जय जननी अम्बिका, सारी जन के काज।
आज गजाधरसिंह की, रखि दङ्गल में लाज।

● भेंट ●

टेक—जन टेरे री तोय भवानी दर्शन जल्द दिखइयो री।
मैया मोइ भरोसो भारी, आइजा नाहर की असवारी;
तैने कहां पर करी अबारी, आइके बार बधइयो री।१
मैया नल ने तोइ मनाई, कारे गांड़े कटवाय लाई।
दीये पिंगुल में बंटवाई मेरी जीत करइयो री।२
महाभारत में पण्डव जिताये, कौरव दल को नष्ट कराये
तैंने दुशमन से लये दाये मतवा मोय बिसरइयो री।३
जगमें हैरहौ नाम तिहारो, निशदिन भक्तन को पचपारो
गजाधर कहैं फतेहपुर बारो कलम मेरी शुद्ध चलइयोरी।

चाल यहां की बातें अब यहां छोड़ो आगेकी सुनो चित लाई। रङ्गमगढ़ के राजा के यहां दुहिता एक जन्मी भाई। चन्द्र बदन मृग लोचन बेटी देखि देखि माता हरषाई। रूप पक्ष में अगम है बेटी शोभा बरन करी न जाई। दिन दिन स्यानी बेटो है गयी माताको चिन्ता छाई। भूप बुलाय लियो महलन में रानी कहन लगी समझाई। क्वारो कुमरि महल में डोले नजर पड़े

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

नित परछाईं । ढूंढो कुमर काऊ राजा की राजन सुधि
लेउ चित लाई ।
रङ्गत -इतनी सुनि कर राजा कहि रह्यो सुवि प्यारी २
मेरो, बात समझ मेरे गई है आई ।
अठखेड़ा को कनूमल भूप है सुनि प्यारी २ मेरी,
सुता य'ग्य है रे कुमर बलदाई ।
सिक्का भेजूं कुमरि को सुनि प्यारी २ मेरी
कुवर समझ में री पयौ है आई ।
सङ्ग भवन को हेर कर बाह के सुनि प्यारी २ मेरी
दानेन से लड़ैगो रे लड़ाई ।
इतनो सुनि रानी कहै सुनि साजन २ मेरी,
बात समझ में रे गई है आई ।
दाने जौहर करि रहे बाहर पै सुनि साजन २ मेरे,
मानम लीए हैं शहर कि खाई ।
सङ्ग भवन को हेर कुटि बाहु के सुनि साजन २ मेरे,
उसको देना रे कुमरि को ब्याही
इतनो सुनि कर राजा चलि दयौ सरदारो २ सुनिए,
छुटभया लीए बुलवाई ।
शादी करवी मीकूं कुमरि की सरदारो २ सुनि .
जब राजा ने रे गिरा सनाई ।
अठखेड़ा को कन्नूमल भूप है सरदारो २ सुनिए,

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

उसको देना रे भेजि सगाई।
रुक्मवत को देइ कटवाय के सरदारो २ सुनिए,
चावेन से आय के लड़े रे लड़ाई।
सब राजन में भारी सूरिमा सरदारो २ सुनिए,
कीरति जाकी रे जगत में जाई।
नाई प्रोहित लोग बोलि के सरदारो २ सुनिए,
भूप कचहरी में गये हैं आई।
कोरी कागज लै लयौ भूप ने सरदारो २ सुनिए,
खत राजा नौ रे लिखत बनाई।
सिद्धि श्री नौ जाय लिखि दई सरदारो २ सुनिए,
रुक्मगढ नौ रे लिख्यौ हरषाई।
यहि शादी करना आय के कुवरि की सरदारो २ सुनिए
रुक्मवत को रे देउ कटवाई।
दाने मारी मेरे शहर में सरदारो २ सुनिए,
जब बेटी का रे लेउ तुम ब्याही।
बन्द लिफ़ाफा में खत को करि दयो सरदारो २ सुनिए
अपनी व नी मुहर लगाई।
होगा चौथे ग्यारह मेल को सरदारो २ सुनिए,
भेट भूप की रे करना जाई।

चाल-अठखेड़ा को दोनों जाय रहे मनमें खुशी प्रोहित नाई। अच्छी खत होरेकी लाए हमने मुशीबत अति पाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

ऐसी है ब्याह भाड़ में जाओ बतलाय रहे प्रोहित नाई।
शेर बघर्रा विकट बनी में कोइ हमको जाता खाई।
बालक रोय रोय मर जाते मर जाती घर पर ब्य ही।
खेलन शिकार बनो में आयो अठखेड़ा को कन्नू भाई।
नाई प्रोहित नजर पड़े हैं बाज दयो जाने ठहराई।
कैसे सोच करि रहे मन में ठीक ठीक देउ बतलाई।
इतमैं आये हो तुम कहां से रहे अगारी कहां जाई।

विहालवे इतनी सुनिके नाई कहि रहो रे मेरी एक सुनों जी घोड़ा वाले ज्वान। शहर कुम्भगढ़ से हुआ मेरा आमना तुम सुनि लेउ धरि के ध्यान। अठखेड़ा को रहे हम जायके रे जहां कन्नू बसता मुगल पठान। कैउ दिन हो गए हमको राह में रे हम बहुत दुख हैं भाई हैरान। दीखे हमको अठखड़ा नहीं रे हम भूलि गए हैं खान और पान। ऐसो ब्याह तो जाओ भाड़ में रें अति दुखित हमारे है रहे प्रान। अब नहीं आमेंगे कबऊ भूलि के रे मैंने ऐंठे अपने दोऊ कान। इतनी सुनिके कन्नू कहि रहो र तुम सुनिलेउ दोनों ज्वान। रङ्गत–इतनी सुनिके कन्नू कहि रहो सुनों प्रोहित प्रोहित नाई, कन्नू हमसे ही कहत हैं फाई।
अब तुम चलि देउ मेरे सङ्ग पै सरदारो सरदारो सुनिए पीछे चलि रहे प्रोहित नाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मठखेड़ा में दाखिल है भए सरदारो सरदारो सुविए,
शहर की शोभा रे देखि हुलषाई।
चाल-ऊंचो कोट रखो परकोटा लोतिन खुदरही है खाई।
तोप धरीं जाके बुर्जन पर लाल धुजा रही फौराई।
शोभा देखि रहे मगवा की ठाड़े दोऊ बामन बाई।
पाती काढ़ि लई पाकिट से तुरत तख्त पर सरकाई।
खत कन्नू ने लीया हाथ में पढ़न लगो है मन हरषाई।
पढ़ि के खत कन्नू चलिदीयो महलन में पहुँचो जाई।
भोजन त्यार भए महलन में बुलवाय लए प्रोहित नाई।
गाने-नऊ प्रोहित जैमैं जौनार धरी है कचन थारी।
कली-पूरी और कचौरी लड्डू परसो है बालूसाई।
तरह तरह की इनके आगे लाकर धरी हैं मिठाई।
तो०=धरी है जल की झारी। १
कली-आम अचार रायतेन के फिर आगे रखि दए
कुल्ला, पेठा हलुआ दिलखुशाल और परस दए रसगुल्ला
तो०—मिठाई न्यारी न्यारी। २
कली-बालूसाई बरेफी मट्ठे मोमन के बनवाए।
खोवा रबड़ी दूध मलाई पेड़ा मधुर बनाए।
तो०-मिठाई बरेली वारी। ३
कली खास डाकखाना तोखीगढ़ कास्स जानो मोरी।
फतेहपुर सुखधाम गजाधर नाम कहत हैं मेरो,

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बो०-सूनों सब सरदारी । ४

धुनि-नाई प्रोहित दए विदा कराई । कंवर के दए हैं कड़े पहुमाई । मन में रहे सिहाय, अठखेड़ा से दोऊ चलि दए रहे रङ्गमगढ़ को जाय । करी करी मुहाम, रात दिवा धावा किया रङ्गमगढ़ को जाई दोऊव ने सीम । नाऊ प्रोहित रङ्गमगढ़ आए, नाथ नृप को हाल सूनाए । अठखेडा सिक्का धरि आव । बामब कहब लगो समझाय, संगम वन को कटवावेगो, दावेन को जायगी न ब बिटाय ।

रंगत-यहाँ का बातें यहाँ रहीं सरदारो २ सूनिए ।
अठखेडा को रे रहे सुनायो ।
भोर महल में भारी है रही सरदारो २ सेनि ,
कंकन बांधो रे कुंवर के मांही ।
हदं चढायी लाला पे प्रेम से सरदारो २ सूनिए,
मरुअठ केशर रे अंग लगायी ।
लग्ना बन का कुन्नू ठाड़ो भयी सरदारो २ सूविए,
शीश सेहरो धरो रे जमाई ।
कामिव मगल गाय रहीं सरदारो २ सूनिए,
लाला कुआ पे रही जाई ।
झाँकिके कुपग्रा लाला चलि दयो सरदारो २ सूनिए,
धा फोरिदै यभदों हदै स।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बैठि गयौ है पलकी में जाय के सरदारौ २ सुनिए,
संग मैं सजि गए रे सब भाई।
हाथी चढ़इया हाथी चढ़ि गए सरदारौ २ सुनिए,
घोड़ा बैठ रे सूरमा जाई।
पैदल पलटन चलि दई संग में सरदारौ २ सुनिए,
लश्कर कौ दियौ कूंच कराई।
अड़खेड़ा से लश्कर चलि दयौ सरदारौ २ सुनिए,
रंगमगढ को रे रहौ है जाई।
रात चलें और दिन को चालते सरदारो २ सुनिए,
रस्ता में कहीं रे बिरमत थाई।
पानी मिल जाय जो आगे चले सरदारो २ सुनिए,
पिछले कीच को रे मिटाते जायी।
धावा करके लश्कर चलि रहौ सरदारो २ सुनिए,
रंगमगढ की रे सीम दबायी।
डेरा दे दए जाय के सीम पे सरदारो २ सुनिए,
धौंसा दियौ रे भूप बजवायी।
बड़े पेटिया लश्कर बीच में सरदारो २ सुनिए,
घोड़न दानों रे घास बटवायी।
संगम वन में दाने घूमते सरदारो २ सुनिए,
जो शंकर के रें बीर बलदायी।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

खबर पड़ी है रघसिंह को सरदारो सुनिये। लश्कर को दिये भेजि सिपाई।
जाय सिपाईन लशकर में कहीं सरदारो २ सुनिये। संगम कोरे करो मर भाई।
दाबे मारो बनके बीच मे सरदारो २ सुनिये। जब दुहिता को ले गए तुम ब्याही।
इतनो सुनकर कन्नू कहि रह्यो सरदारो २ सुनिए। अब कर्यों राखी रे देर लगाई ॥
सजि लेउ लेउ मेरे सूरमा सरदारो २ सुनिये। संगन बन घेरे करो चढ़ाई।

तर्ज बारहमासी

अढ खेड़ा के सुनि ज्वाब भये एकदम ठाड़े।
लश्कर में बजवाय दिये कन्नूमल नक्कारे ॥
सजि गये पट्टा अवरन को
खूनी हाथी झुलि दियो ज्वानन संगम बन को ॥
ज्वानन लगी उमायी है।
संगम बन ढो ढाल बिगुल नन्नूमल बजवायो है।
सूरमा बड़े बड़े मरदाने।
संगम बनके युद्ध करि रहे ज्वानन से दावे।
मारि रहे छावे हुंगी है।
केई रंग को बानों कारी पीरी भुरी है।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कटिक में दुन्द मचाय रहे ।
अठ खेड़ा के ज्वानन को असुर चबाय रहे ।
खाय लेय ज्वानन बहुत पटठा ।
रखठें करे बिघेस असर भागी है मुंह फटट्रा ।
कटिक में हलचल हाल मची ।
लाखौं कीये खून खून से पृथ्वी देखि रची ।
वीर कन्चू अर्रायो है ।
संगम वन के दविन को किस्सा निवगयो है ।
खत्म करि दिये असुर बली ।
दविन की करि खत्म सैन रघइ गढ तुरत टाली ।
बाजि रहे लशकर में बाजे ।
बारोठी को बोलि लिये दरवाजे पर गाजे ।

धुनि–बारोठी दई भूप कराय । लाखों को दयो मालमहाय । बरना महबूब लियो बुलवाय । केलनु मढप दियो छाय, बनी महलन तुरत सजाइ । मंडप तर लीनो बुलवाइ । कन्यदान कुमरि को लेन्ही मिलि जुलि के जाक काको बाइ । मगल गाय रही नारि । बेद नीति से कुमरि की रह सात भंवारेया डारि ।

भांवर का गीत

बन्नी की लागे भंमरिया घड़ी शुभ सोधि सोधि के ।
केला मगाओ, मंडप गढ़ाओ ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

चन्दन की लाओ लकड़िया ।
आक दाक के समद मंगाओ ।
पानी की लाओ गगरिया गगरिया । घड़ी०
धूप दिये रोली चावल लाओ ।
फूलन की लाओ छबरिया घड़ी० ।
कण्डा पहनावे बरनी को लाओ
बरनी पे डालो फल बतासे ।
लगि नहीं आवे नजरिया । घड़ी० ।

पुनि भूपने व्याह कुमर को कियो । लाखों का माल दाति में दीयो लई बरात बुलाय । दावत त्यार करी है सबको दीनी भूपने तुरत जिमाय । दावत । खाय बराती खुश भारी । कन्नूमल ने गिरा उच्चारि । विदा करो राजा राजकुमारी ।

तो०—तुम कबुनूबो कनिया । लाला ।४।
पल पल भारी होय बहुत दिना भये शहर ।
तिहारे अब जानो है शहर अपने को मोय

कवित्त

दर्पण की विकार डिब्बा गहने को अगार घेरा ।
प्यार है निरख छवि केशव परछाई हैं ।
अतर गुलाब सिर के बडो को लियो अरि ।
केशन में दीपे जाके मोदी ऊयहाई है ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मोमब से पटिया पारि मांगन में सिन्दूर भरो।
मस्तिक पै लीनो नाने गेतीहू चिपटाई है।
लाल २ लालीं जाने होटहू रचाये लीये।
मुख के बीच लियो पान को चबाई हैं।
युमानयाँ तिमनियाँ और पचमनिया को पहन लीयो।
हार और हमेल लौकट गले नै झुकाई है।
लँहगा लियो पहनि जामें रेशमी नारो बड़ो।
चटकदार चोली रही छाती पै सहाई है
जैपुर की साड़ी ओढि महलन में ठाड़ी भई।
सच्चे लगे मोती चकचौदा नभछाई है।
बिजेन्द्र कहत जल्दी त्यार करो बेगो को।
अजेन्द्रसिंह ठाड़े अब देर क्यों लगाई है।
धुनि–गोरे २ हाथ रचाय लई हमेंदी माँथे पे
अंधेली सी बैठी ॥ पीम मुरायन कहवे हैं।
लच्छे। गलमैं पहिनो हार लगे जामें मोरी।
सच्चे। कुमीर की मूंगफली सी ऊंगली।
ऊगरीन बीच पहनि लई मुदरी। अब जाते
सजत न लागी भूल करि सिगार महय भई ठाड़ी हाथन

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

में पहन लये हथ फूल ।

बेटी मधुर मधुर रही बोली । छाती बीच पहन लई चोली

जाको दिल चाहैं धरितीहु धीर ।

पांव मूड़ि से चादर रेशम ओढी जाको झिल मिल

करत शरीर ।

सजि बजि महल है गयी खड़ी । मति । इन्दुर की है

नायन हारी ।

बेरो महल है गई होय । कि त्यौहार भूलि मति

जइयो सावन मैं बुलाय लयो मोय।

मात रहो सम्झाय । हंसी खुशी से जा मेरी बेटी

तोय जल्दी लेउ बुलाय ।

मिल ने सुता चली महलन से अब रथ बैठी जायके ।

रथ कू नू दयौ बढ़ाय । कौन बढ़ावे बंजारवकू ।

अडखेड़ा में गयें बरती बरना आय ।

इति

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

असली हीर रांझा

रांझे का वीर विद्या सीखना

दोहा—जै जग रानी अम्बिका, सारौ जन के काज।
आज गजाधरसिंह की, रख दङ्गल में लाज॥
भेट—तू सिंह सजाय के आजा मइया धोरागढ़ वारी।
तू अपनौं सिंह सजइयौ। मइया मतना देर लगइयौ॥
जन अपने कौ मात जितइयौ, आकर कीजौ रखवारी।१
तू नगर कोट गाजे है। घटा चौरासी बाजे है।
जिसदम तेरी दल साजे हूं, पीटूत जिन्द चले तारी २
तैने भक्त न के पन पारे। कारज नल राजा के रारे।
दाने महकासुर से मारे, धड़ से नारि करी न्यारी। ३
तैंने द्रोपति को तन धारो, कौरब दल को हनि डारौ।
गजाधर कहै फतेपुर बारौ, शरण लई तेरी महतारी।४।
रङ्गत—आगे बरणन अब रांझों करूं न सरदारो२ सुनिये
हाथ जोर मैं रह्यौ सुनाई।
पढ़न जाय रांझो चटसार में रे सरदारो सरदारो सुनिये
सब बच्चों को रे साथ लिवाई।
हित चित से तौ पढ़े चटसार में रे सरदारो सुनिये
अल्प काल में रे बिद्या आई।
पहले जग में ये सदाव्रज था रे सरदारो सरदारो सुनिये

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बारहमासी–सुनि रम्भा का हुकम गन्धरवचलने कोसाजे
हैगए त्यार बिमान बैठि गए ले ले के बाजें ॥
अफसरा बैठी देवन की। स्वर्ग लोक ते सुरति लगाय
लीनीविक्रम वन की। स्वर्ग ते जब विमान छूटे।
अर्टाटौ है रह्यौ कि छक्का राँझे के छूटे। देखि रह्यौ राँझौ बलदाई। आइ गए तुरत विमान ताले पै भीर भई भई। अपसरा मल स्तान करें। खडी ताल की पार कछू ऊपर ते कूदि परे। हैं रह्यौ जाल में अर्राटौ; देख देख राँझे कौ सीनामा जावे फाटौ दे रहे देव बुहारी है। करि कें बहाँ छिडकाव दिए फिर आसन डारी है। कि कुरसी मूढ़ा रखि दीए। इत्र गुलाब केंबड़े के छिड़काव बहुत कोए देवता बैठे आसन पैं। रम्भा सबसे ऊँचे आ बैठी सिंहासन पैं। शुरू जब नाँच वहाँ कीना। तबला और मृदङ्ग बजाय रहे नारद जी बीना। अपसरा नाँचत दें ताली। सब बाजे बजि रहे बांसुरी पड़ी एक खाली। देखकर राँझो बलदाई। देवन की महफिल में गयौ है तुरत वीर आई। ये हू ओ देवन कौ अन्शी। करिकें लम्बौ हाथ उठाय लई राँझें ने बन्शी करी जाने बहुत सफाई है। रही अपसरा नाच कि बन्शी अधर बजाई है। मिलाय दई बन्शी गाने में बैठि गयौ घुट्टिनाय अखाड़े देव जनाने में अपसरा लें फिरकैया है। वडी बन्शी की धुनि पयारी। रम्भा रही निहारि

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जा इन्दुर कैं घरवारी । दैरि रही सूरत रौंझें की।
पयारी धुनि अति लगी कि जाय बन्शो कैं बाजे की।
एकदम नांच बन्द कीयौ । बन्शी बागै जावे अपने पास
बुलाय लियौ । कौन तू बन्शी बारौ है। छिप कैं वैंठो।
आई दें खि रहौ नांच हमारौ है। बताय दें सही सही
मोकूं । जो बोलेगौ झूठ आज मैं मरवाय दऊं तोकू॥
रागिनी-जो तुम पूछौ हाल जिगर काकहूं नहीं मैं झूठी।
लिखा भाग्य कौ होइ नहीं जग में टूटी को बूटी।
कली-मैं हूं बालक सिर्फ अकेला राह भूल कर आया।
रम्भा-कहा नाम कहाँ गाँव तेरा औ किसने तुझे पठाया
राम नाम के कारण मेरा यह तन मात बनाया।
मेरी महफिल में ए बच्चे किसनै तोइ पहुँचाया।
तोड-आकर बैठि गया महफिल में शर्म हमारी लूटी।
कली-तुझें बताऊँ हाल गाँव है मेरा तख्त हजारा।
अमीचन्द को सब जग जाने वो है पिता हमारा।
नाम अपनो तोइ बताऊ मैं रा बालक बारा।
राँझा सब मुझ से कहते हैं छोडो चाहे मारौ।
तोड-भटकत डोलूं मैं बन २ में किस्मत मेरी फूटी।
कली-मात पिता ने महल से दें दये देंश निकारे।
कोई न धीर दया बैया डोलत मारे मारे।
खान पान सब मैंने त्यागे कष्ट सहे अति भारे।
करदे मांफ कसूर हमारी पकडूं चरण तिहारे।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

तोड–करौ महर की नजर मात अन्न ज उ न मौसे छूटी।

रङ्गत–इतनी सुनि कें रम्भा कहि रही सुनि लाला २ मेरी, अरज करूं तो रे सुने कि नाही।

बिकट वनी में इकलौ क्यों फिरे सुनि लाला २ मेरी शेर जानवर रे तोय ले खाई।

सूरत सपनों तेरा है जायगो रे सुनि लाला २ मेरी रोय रोय तेरी रे मरेगी माई।

किस कारण से घर तजि दयौ रे सुनि लाला २ मेरी कहा मुसीबत रे तो पर आई।

इतनी सुन कर रौंझो कहि रह्यौ रे सुनि माता २ मेरी हाल जिगर कौ रहौ सुनाई।

रोज पढ़ौ हौ मैं चटसार में रे सुनि मइया २ मेरा पर विद्या तो रे जरा न आई।

तज कर आयौ मैं चटसार को री सुनि मइया २ मेरी आखिर दीनी रे छोड पढ़ाई।

राम नाम की आशा लो लग रही री सुनि मइया २ मेरी उनके नाम पे रे लियौ मूढ़ मुडाई।

मैं मति मूढ़ गमार हूं री सुनि मइया २ मेरी तेरे दरशन तेरे मिले भलाई।

दीन जानकर मोपै महर करो सुनि मइया २ मेरी मोकूं सेवक रे लेउ बनाई।

शरण लई है तेरा आयकर री सुन मइया २ मेरी

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बेशक मौकू' री तू रे ठकराई।
इतनी सुनकर कहि रही अपसरा रे सुन राँझे २ मेंरी
सूरत तेरी तौ रे जिगर समाई।
जो चाहे सो मैं तोकू' दऊ' रे सुनि राँझै २ मेंरी
मुख अपने से तो रे दे सुनाई।
उजर न तुझै से मैं कछू २ सुन राँझै लाला
सत्य बचन तौ रे मैं रही बताई।
इतनी सुनकर राँझो कहि रहौ री सुनि मइया मेंरी
जो मांगू रे सो वो मिल जाई।
तीन वार अपने मुख से कहौ री सुनि मईया २ मेंरी
गंगा धरम तो रे तू लेरी उठाई।
ईतनी सुनकर बोली अपसरा रे सन लाला २ मेंरी
गंगा धरम तो रे मैं रहीं उठाई।
खुश है गयौ राँझौ दिल भारी जा वंशी है दे देमहतारी
मैं समझाऊँ तोय, जिम वंशी मेरे मनवसी जाको प्रेम
से गहायदे मइया मोय। तोनों वचन राँझे के सुनि लिये
फेर जवाब रम्भा ने दीयौ। लाला करी ठानी ठान।
मेरी वन्शी जो तै ने माँगी मेरे बारे में बसत प्रान
कुमर वचन तैने ले लीयौ ऐसे। मुख से कहिं अब नाट
कैसे गंगा धरम लीयौ उठाय जा मुख से नाहीं करू'
रे मेरौ अङ्ग नरग में जाय। मेरी मानों कुमर कही। है
गई कुमर दयाल के वन्शी मैंने तोय दई॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जा वन्शी के गुण तोय बतलाऊँ ।

सखी २ लाला समझाऊ, जाकू रखियेअपनो पास वन्शा रहेसुततेरे तोय भूख लगेगी न पयास । लाला तोय ठीक बतलाऊं । वन्शा है सुत सुरधाम सिधाऊं । लाला तोते ठीक ठीक कही । जो चाहे सो माँगले सुरधाम को जाय रही । रोय गयौ राँझौ सुज्ञानी दोऊं नैनन से जाके ढरकौ पानी । मइया मोकू जान अधीर । तूती जाय रही इन्द्रपुरी को मेरो कैसे बचेगो शरीर।। सो खाइ जाय मार मौय बन चोते जा विकट बनी के वीच में ।।

लहर–काहे कूं तू रोवे क्यों नैनन रह्यौ नीर बहाई रे ।
भीर पड़े पै जा वन्शी को देना कमर बजाई रे ।।
सत्तर वार भेज दूंगी वों तेरी करे सहाई रे ।
मानस जन की क्या गिनती दाने से देय बचाई रे ।
दुशमन कै दल में तेरा लाला होयगी फते लड़ाई रे ।।
तोपे पड़ि जाय भीर कुमर तब बीरन लाजो मनाई रे ।
वीरन के परताप जाय तेरी जग में कीरत छाई रे ।।
कोई नहिं तेरो मरवइया सांची रहो बताई रे ।
बीरन की बिद्या अपनी मैंने तोय लाला दई गहाई रे ।
पशु रोग होय दूर कुमर जो वन्शी दई बजाई रे ।
यहाँ की बाते यहाँ रही मित्रो आगे सुनौ चितलाई रे ।
गई अपसरा स्वर्ग लोक में इकलौ राँझौ रहि गयौ भाईरे ।
विकट बनी में ठाड़ो राँझौ मन सोचे और पछिताई रे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

असली हीर रांझा

रांझे का वीर विद्या सीखना

दोहा—जै जग रानी अम्बिका, सारौ जन के काज।
आज गजाधरसिंह की, रख दङ्गल में लाज॥
भेट—तू सिंह सजाय के आजा मइया घोरागढ़ वारी।
तू अपनौं सिंह सजइयौ। मइया मतना देर लगइयौ॥
जन अपने कौ मात जितइयौ, आकर कीजौ रखवारी।१
तू नगर कोट गाजे है। घटा चौरासी बाजे है।
जिसदम तेरी दल साजे हूं, पीट्टत जिन्द चले तारी २
तैने भक्त न के पन धारे। कारज नल राजा के रारे।
दाने महकासुर से मारे, धड़ से नारि करी न्यारी। ३
तैं ने द्रोपति को तन धारो, कौरव दल को हनि डारौ।
गजाधर कहै फतेपुर वारौ, शरण लई तेरी महतारी।४।
रङ्गत—आगे बरणन अब रांझों करू न सरदारौर सुनिये
हाथ जोर मैं रह्यौ सुनाइ
पढ़न जाय रांझो चटसार में रे सरदारो सरदारौ सुनिये
सब बच्चों को रे साथ लिवाई।
हित चित से तौ पढ़ें चटसार में रे सरदारो सुनिये
अल्प काल में रे विद्या आई।
पहलो जग में ये सदाव्रज था रे सरदारौ सरदारौ सुनिये

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

द रङ्ग थी रे के हीरे वाई।
दूजे जन्म में हीरे हिरनी भई रे सरदारो, सरदारौ सुनिये
हिरना भयौ है रे ये राँझौ आई।
तीजे जन्म में राँझौ तोता भयौरे सरदारो;सरदारोसुनिए
तोती भई है रे हीरे बाई।
चौथे जन्म में राँझौ बन्दर भयौ रे सरदारो सुनिए
भई बन्दरिया रे छोछक जाई।
पाँचवे जन्म में हीरे शीरी भईरे सरदारो,सरदारौ सुनिए
भयौ फरियाद रे राँझौ भाई।
छटवें जन्म राँझौ मजनू भयौ रे सरदारौ सरदारौ सुनिए
लैला भइ हैं रे हीरे बाई।
सातये जन्म में अब राँझौ भयौ सरदारौ २ सुनिए
हीरे भई रे छोछक जाई।
कंडा धूनी के संयोग से रे सरदारो सरदारो सुनिये
प्रीति चली तौ रे इनकी आई।
विद्या पढ़कर राँझौ चटसार से रे सरदारौ २ सुनिये
जङ्गल की लई रे सुरत लगाई।
खान पान तौ दीयौ बिसराय के रे सरदारौ २ सुनिये
अपनी दीनी रे नींद बिसराई।
शेर दहाड़े वन के बीच में रे सरदारौ २ सुनिये
दिल में दहशत रे माने है नाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

राम नाम से जाको हित लागी रे सरदारो २ सुनिए
और न जाकौ रे कछू सुहाई ।
बिक्रम बन में गयौ ए पहुँच के सरदारों २ सुनिए
बरगद वृक्ष तो रे गयौ जाय पाई ।
सुन्दर वनि रह्यौ बन में ताल है रे सरदारो २ सुनिए
जाकी पक्की पार तौ रे सुन्दर भाइ ।
चकवा चकवी करत किलोल हैं रे सरदारो २ सुनिए
जल में तो गोता रे जाय लगाई ।
तरह २ की लगो फुलवारिया रे सरदारो २ सुनिए
इनकी खुशबू रे दूर दूर तक जाई ।
विविध अप्सरा आवें स्नान को रे सरदारो २ सुनिए
इन्द्रपुरी की जो रम्भा रे भाई ।
राँझौ वैठौ बरगद के तले रे सरदारो, सरदारो सुनिए
रैनि अंधेरी रे रही है छाई ।
हाय बिधाता तेने कहा रची रे सरदारो, सरदारो सुनिए
राँझे वीर को रे नींद नहिं आई ।
बारह बजे बौ निशि आधी भई रे सरदारो, २ सुनिए
इन्द्र अप्फरा रे रही बतराई ।
न्हान चली हैं विक्रम ताल में सुनि बहना, बहना मेरी
जल्दी लेना रे विमान मंगवाई ।
हुकम कियौ है रम्भा अप्सराने सरदारो सरदारो सुनिए
गन्धर्व बाजे लिए रे उठाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बारहमासी--सुनि रम्भा का हुकम गन्धरवचलने कोसाजे
हैगए त्यार बिमान बैंठि गए ले ले के बाजें ॥
अफसरा बैठी देवन की। स्वर्ग लोक ते सुरति लगाय
लीनीविक्रम वन की। स्वर्ग ते जब विमान छूटे।
अर्टाटौ है रह्यौ कि छक्का गँझे के छूटे। देखि रह्यौ
राँझौ बलदाई। आए गए तुरत विमान ताले पै भीर
भई भई। अपसरा मल स्तान करें। खडी ताल की पार
कछु ऊपर ते कूदि परे। हैं रह्यौ जाल में अर्गटौ; देख
देख राँझे कौ सीनामा जावे फाटौ दे रहे देव बुहारी
है। करि कें बहाँ छिडकाव दिए फिर आसन डारी है।
कि कुरसी मूढ़ा रखि दीए। इत्र गुलाब केंवड़े के छिड़-
काव बहुत कोए देवता बैठे आसन पैं। रम्भा सबसे
ऊँचे आ बैठी सिंहासन पैं। शुरू जब नाँच वहाँ कीना।
तबला और मृदङ्ग बजाय रहे नारद जी बीना। अपस-
रा नाँचत दें ताली। सब बाजे बजि रहे बांसुरी पड़ी
एक खाली। देखकर राँझो बलदाई। देवन की मह-
फिल में गयौ है तुरत वीर आई। ये हू ओ देवन कौ
अन्शी। करिकें सन्मौ हाथ उठाय लई राँझें ने बन्शी
करी जाने बहुत सफाई है। रही अपसरा नाच कि बन्शी
अधर बजाई है। मिलाय दई बन्शी गाने में बैठि गयौ
घुट्टिनाय अखाड़े देव जनाने में अपसरा लें फिरकैया
है। वडी बन्शी की धुनि प्यारी। रम्भा रही निहारि

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जा इन्दुर कें घरवारी। देरि रही सूरत राँझे की।
पयारी धुनि अवि लगी कि जाय बन्शो कें बाजे की।
एकदम नांच बन्द कीयौ। बन्शी बारौ जावे अपने पास
बुलाय लियौ। कौन तू बन्शी बारौ है। छिप कें वैंठो।
आई देखि रहौ नांच हमारौ है। बताय दें सही सही
मोकूं। जो बोलेगौ झूठ आज मैं मरवाय दऊं तोकू॥
रागिनी-जो तुम पूछौ हाल जिगर काकहूं नहीं मैं झूठी।
लिखा भाग्य कौ होइ नहीं जग में टूटी को बूटी।
कली—मैं हूं बालक सिर्फ अकेला राह भूल कर आया।
रम्भा—कहा नाम कहाँ गाँव तेरा औ किसने तुझे पठाया
राम नाम के कारण मेरा यह तन मात बनाया।
मेरी महफिल में ए बच्चे किसनै तोइ पहुँचाया।
तोड—आकर बैठि गया महफिज में शर्म हमारी लूटी।
कली—तुझें बताऊँ हाल गाँव है मेरा तख्त हजारा।
अमीचन्द को सब जग जाने वो है पिता हमारा।
नाम अपनो तोइ बताऊ मैं रा बालक बारा।
राँझा सब मुझ से कहते हैं छोडो चाहे मारौ।
तोड—भटकत डोलूं मैं बन २ में किस्मत मेरी फूटी।
कली—मात पिता ने महल से दें दये देंश निकारे।
कोई न धीर दया बैया डोलत मारे मारे।
खान पान सब मैंने त्यागे कष्ट सहे अति भारे।
करदे मांफ कसूर हमारी पकडूं चरण तिहारे।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

तोड़–करौ महर की नजर मात अब ज उ न मौसे छूटी।

रङ्गत–इतनी सुनि कें रम्भा कहि रही सुनि लाला २ मेरी, अरज करूं तो रे सुने कि नाही।

बिकट वनों में इकलौ क्यों फिरे सुनि लाला २ मेरी शेर जानवर रे तोय ले खाई।

सूरत सपनों तेरा है जायगी रे सुनि लाला २ मेरी रोय रोय तेरी रे मरेगी माई।

किस कारण से घर तजि दयौ रे सुनि लाला २ मेरी कहा मुसीबत रे तो पर आई।

इतनी सुन कर रौंझो कहि रह्यौ रे सुनि माता २ मेरी हाल जिगर कौ रह्यौ सुनाई।

रोज पढ़ौ हो मैं चटसार में रे सुनि मइया २ मेरी पर विद्या तो रे जरा न आई।

तज कर आयौ मैं चटसार को री सुनि मइया २ मेरी आखिर दीनी रे छोड़ पढ़ाई।

राम नाम की आशा लो लग रही री सुनि मइया २ मेरी उनके नाम पे रे लियौ मूढ़ मुड़ाई।

मैं मति मूढ़ गमार हूं री सुनि मइया २ मेरी तेरे दरशन तेरे मिले भलाई।

दीन जानकर मोपै महर करो सुनि मइया २ मेरी मोकू सेवक मे लेउ बनाई।

शरण लई है तेरा आयकर री सुन मइया २ मेरी

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बेशक मौकूं री तू ने ठुकराई।
इतनी सुनकर कहि रही अपसरा रे सुन राँझे २ मेंरी सूरत तेरी तौ रे जिगर समाई।
जो चाहे सो मैं तोकूं दऊं रे सुनि राँझै २ मेंरी मुख अपने से तो रे दे सुनाई।
उजर न तुझै से मैं कछू २ सुन राँझै लाला सत्य वचन तौ रे मैं रहो बताई।
इतनी सुनकर राँझो कहि रहौ री सुनि मइया मेंरी जो मांगू रे सो वो मिल जाई।
तीन बार अपने मुख से कहौ री सुनि मईया २ मेंरी गंगा धरम तो रे तू लेरी उठाई।
ईतनी सुनकर बोली अपसरा रे सन लाला २ मेंरी गंगा धरम तो रे मैं रहीं उठाई।
खुश है गयौ राँझौ दिल भारी जा वंशी हैं दे देमहतारी मैं समझाऊँ तोय, जिय वंशी मेरे मनवसी जाको प्रेम से गहायदे मइया मोय। तीनों वचन राँझे के सुनि लिये फेर ज्वाब रम्भा ने दीयौ। लाला करी ठानी ठान। मेरी वन्शी जो तै ने माँगी मेरे वामें में बसत प्रान कुमर वचन तैने ले लीयौ ऐसे। मुख से कहि अब नाट कैसे गंगा धरम लीयौ उठाय जा मुख से नाहीं करूँ रे मेरो अङ्ग नरग में जाय। मेरी मानों कुमर कही। है गई कुमर दयाल के वन्शी मैंने तोय दई॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जा वन्शी के गुण तोय बतलाऊँ।
सही २ लाला समझाऊ, जाकूं रखिये अपनो पास वन्शी रहे सुत तेरे तोय भूख लगेगी न पयास। लाला तोय ठीक बतलाऊं। वन्शी दै सुत सुरधाम सिधाऊं। लाला तोते ठीक ठीक कही। जो चाहे सो माँगले सुरधाम को जाय रही। रोय गयौ राँझौ सुज्ञानी दोऊं नैनन से जाके ढरकौ पानी। मइया मोकू जान अधीर। तू तो जाय रही इन्द्रपुरी को मेरो कैसे बचेगौ शरीर॥ सो खाइ जाय मार मौय बन चोते जा विकट बनी के बीच में॥
लहर–कहे कूं तू रोवे क्यों नैनन रह्यौ नीर बहाई रे।
भीर पड़े पै जा वन्शी को देना कमर बजाई रे॥
सत्तर वीर भेज दूंगी वों तेरी करे सहाई रे।
मानस जन की क्या गिनती दाने से देय बचाई रे।
दुशमन कै दल में तेरा लाला होयगी फते लड़ाई रे॥
तोपे पड़ि जाय भीर कुमर तब बीरन लाजो मनाई रे।
वीरन के परताप जाय तेरी जग में कीरत छाई रे॥
कोई नहि तेरो मरवइया सांची रहो बताई रे।
बीरन की बिद्या अपनी मैंने तोयं लाला दई गहाई रे।
पशु रोग होय दूर कुमर जो वन्शी दई बजाई रे।
यहाँ की बाते यहाँ रही मित्रो आगे सुनौ चितलाई रे।
गई अपसरा स्वर्ग लोक में इकलौ राँझौ रहि गयौ भाईरे।
विकट बनी में ठाड़ो राँझौ मन सोचे और पछिताई रे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कहा करू कित जाउ विधाता हीनों से ना वसि यापार।
ठाडौ ठाडौ सोचे मन में राहौ वीर बलदाई रे ॥
भारी फूंक बजाय दई वन्शी कुमर रहौ अजमाई रे।
सतर वीर मनाये वन्शी में राँझे ने करी चतुराई रे।
आइ गए वीर सुन। ही वन्शी जहाँ राँझौ इकलौ भाई रे।
कहा मुसीबत पडि गई तोपै ठीक ठीक दे बतलाई रे।
काहे कारण कुमर बुलाए कौन बिपत सिर आई रे।
इतने बचन सुने राँझे ने कहन लगौ है हरषाई रे।
मैंने वीर परीक्षा लीनी भई दूर भ्रम भाई रे।
बंशी सुनत आय गये तुम ढिग यों रहौ मैं हरषाई रे।
अब बन बीच अकेलौ घूमूं मोय कछु चिन्ता नाई रे।
जहाँ से आये वहां तुम जाओ वीर सुनो चितलाई रे।
जब तुम्हें सुमिरू' तबतुमअइयौ मति जायो बिसराई रे।
रङ्गत-जा तन लागी वोही तन जानतारे सरदारौ २ सुनियो
और को जाने रे पीर पराई।
कठिन मुसीबत राँझौ सहि रहौ सरदारौ २ सुनिए
विधि गति काऊ पै नाय मिटाई।
कपडा रंग लए जाने गेरुआ सरदारौ २ सुनिए
अलफी लीनी रे एक सिलवाई।
हाथ कमन्डल ले चीमटा रे सरदारौ २ सुनिए
अपनों लीयौ रे मूड मुडाई।
ग्राम शहर में ना ये पग धरै रैं सरदारो २ सुनिए

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बन में रम ा रैं रहे ये आई।
बारह साल तो है गई विप्रति में रैं सरदारौ २ सुनिए
घर की दीनी रैं सुधि बिसराई।
दूध अङ्ग में है गयौ रैं सरदारौ २ सुनिए
सब अङ्ग में रैं रती तौ रमाई।
कठिन तपस्या जाने वनमें करी रैं सरदारौ २ सुनिए
ऊंची पदवी रे लई जाने पाई।
नाम अमर तौ जग में करि लयौ सरदारौ सुनिए
जग में कीरत रे रही है छाई।
घूमत २ रांझौ चलि दयौ रे सरदारौ २ सुनिए
शहर सिहाजे को सुरत लगाई।
धूनी लगाय लई राझे मरद ने रे सरदारौ सुनिए
अंग में लीनी रे भभूत रमा।

बारहमासी--दीनानाथ दयाल दीन के सुधि जल्दी लीजे, नन्द नन्दन घनश्याम दरश नटबर नागर दीजे। तुम्हारी ध्यान धरूं स्वामी। घट २ जाननहार सभी के तुम अन्तरयामी। भस्म तेरे नाम की तन धारी। सब कोई लेवे नाम जगत में रौ बनवारी। फकीरी मैंने धारी है। बन २ भटकन फिरौ नाम पड गयौ भिकारी है। भक्त तने तार दिए कबके। तेरे दरश से स्वामी दुख कट जाते हैं सगक। तुही है घट २ के स्वामी॥ तेरे दरशन हेत लगाई धनी चौरासी। न तेरौ कहीं

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पतौ पायौ । कोट कामरू काशी और अयोध्या नाय पायौ । दरश देउ मौकू सुखवासी । जो नहीं दरशन देउ नाथ मरि जाऊं देकर फाँसी ।

चाल—बैठो कुमर रमाकर धूनी सुमिर रहौ ये रघुराई
बिकट बनी में कोई नाहैं दीखन रैन अंधेरी रही छाई।
मूड़ मुड़ाय बनौ सन्यासी सब घरबार छोड़ भाई ।
भटकत डोलो बिकट बनी में तेरौ पतौ पायौ नाहीं ।
दरस दिखायजा नन्द दुलारे क्यों धरिलइ तेने निठुराई।
कामी अजामिल वैसे तारी तार दई मीरा बाई ॥
बिना बीज का बना भक्त कौ खेत दीयौ तेने उपजाई ।
देजा दरश आय कर जनकौ क्यों तैने सुधि बिसराई ।
रङ्गत-यहाँ की चरचा अब तो यहाँ रही रे सरदारौ २
सुनिये रांझे मरद का रे रहे हाल सुनाई ।
जा तन लगी वोही तन जानता रे सरदारौ २ सुनिये
को जग जाने पीर पराई ।
चारौ धाम में रे राँझौ फिर चुकौ रे सरदारौ २ सुनिये
भेष फकीरौ रे लीयौ बनाई ।
बन बन डोलौ राँझौ भटकतौ रे सरदारौ २ सुनिये
चैन से सोटा रे न एक दिन खाई ॥
बायदा करि गइ हीरे स्वप्न में रे सरदारौ २ सुनिये
जो बेटी रे छोड़कर जाई ।
कसी मजाल तो इसकी ना चले रे सरदारौ २ सुनिये

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सूरत गई है रे जिगर समाई।
भेष फकीरी रांझे ने धरि लई रे सरवारी २ सुनिये
कन्धा धरि लई रे लाल रजाई ॥
करे तलाशी हीरे हुरम की रे सरवारी २ सुनिये
पिछले जन्म की रे याद आई।
दरशन दिखाजा मौकूं आयके सुनि प्यारी हीरे
ऐसी क्यों धरी तैंने धरा निठुराई
किसके फन्दा में फस गई सुन हीरे द्रिवानी
या निद्रा ने रे लई दबाई।
खोजत डोलू मैं चारों दिशा सुनि हीरे दीवानी
तेरे नाम की रे भस्म रमाई।
तेरे पिछारी मैंने घर तजा सुनि हीरे प्यारी
माता पिता की रे सर धरी बुराई
प्रेमलता में मोकूं फांस कर सुन हीरे द्रिवानी
अब तू बैठो रे छोक में जाई।

धुनि–रांझौ मग्न बन बन भटकत डोले, अपना काऊ से न खोले, हीरे दिल बीच बसी, जाई के कारण रांझे ने मूड़ मुड़ायौ बाके नाम पै फेट कसी रांझे को भारी आरत रोज, अगले भाग में सुनो मित्रवर रांझे हीरे की मिलावेगौ खोज।

*. इति *

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

असली हीर रांझा
हीरे का स्वप्न
उर्फ
पक्कड की लड़ाई

दो०—बिघ्न हरण मंगल करन सकल संभारन काज ।
आज गजाधर सिंह की रखि दंगल में लाज ॥

(भेट)

राखि सभा में लाज कृष्णा बाँसुरी वाले ।
क०—दूसासन को मान घटायो, द्रोप सुता का चीर बढ़ायो ।
तो०—गज का फन्द छुडायो, कृष्णा बाँसुरी वाले । २ ।
भावई नाम लैं टेरी, गज घन्टा दीयो गेरी ।
तो०—कहाँ सोय गयौ मेरी वेरी. किशना बाँसुरी वाले ।२
तैंने तारौ सदन कसाई, मीराबाई पार लगाई ।
तो०—हुन्डी सिरसा पै बरसाई, किशना बाँसुरी वाले ।
तैंने भक्त अनेकन तारे, सुधि लै यशुदा के प्यारे ।
तो०—गजाधर कहै फतेहपुर बारे, किशना बाँसुरी वाले ।

वार्ता

प्यारे सज्जनों रात्रि के समय हीरे हुरम अपनी चित्र सारी पर पलिका बिछा कर सो रही थी । उस समय भगवान की इच्छा से स्वपन में राँझे मरद अपने पास

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

देखा था। राँझे वीर का ऐसा स्वरुप सुन्दर था। चन्द्रमा भी देखकर लज्जित हो जाता था। राँझे वीर को आप मामूली न समझे। राँझा वीर ७२ कला अवतार था। इतनें हीरे भी सती उतनें राँझा भी जती। इन दोनों सात जनम से पाक मुहब्बत चली आयी थी। हीरे हुरम ने स्वप्न में राँझे से गंगा धरम लीया। और राँझे ने साथ रहने का वायदा भी किया। अब हीरे के स्वप्न की कहानी आपके सामने पेश करता हूं। ध्यान पूर्वक सुनिए।

(रंगत)

सुमिरन करिके श्री जगदम्बा को सरदारी २ सुनिये।
गुरु चरनन में रे रहौ शीश नवाई॥
लिखूं लेखनी राँझे बीर की सरदारी २ सुनिए।
जाकी कीरत रे जगत में छाई॥
हीरे जागी अपने महल में सरदारी २ सुनिए।
देखन लागी रे नैन निघाई.॥
सूरत बसिगई राँझे की जिगर में सरदारी २ सुनिए।
धीर धरे कैसे छोलक जाई॥
बायदा करि गयौ मोते स्वपन में परदेशी २ प्यारे।
अब कहाँ सोयो रे पैर फैलाई॥
दरश दिखाय जा मोकूं आयके परदेशी २ प्यारे।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वायदा करि गयौ रे तू जाइ निभाई ॥
मंगा भरम तो हमसे खाय गयौ परदेशी २ प्यारे।
अब क्यों दोनों रे याद बिसराई ॥
रुदन मचाय रही हीरे महल में सरदारौ २ सुनिए।
कोई धीरज रे बधैया नाई।
जा तन लागी वो तन जानता सरदारौ २ सुनिए।
को अब जाने रे पीर पराई।
खान पान तो हीरे ने तजि दयो सरदारौ २ सुनिए।
राँझो चित में रे गयौ समाइ॥
हाल जिगर का अब किससे कहूं सरदारौ २ सुनिए।
मन में सोचे रे बहुत पछिताई ॥
धोको दै गयौ मोकूं स्वपन में सरदारौ २ सुनिए।
अब नहीं लौटे रे दुष्ट दुखदाई ॥
शहर सिहाले हीरे रोय रहीं सरदारौ २ सुनिए।
फक्कड़ चाचा के पास इग आई ॥
हाथ जोडकर हीरे कह रही सुनि चाचा २ मेरे।
तो विन कोई रे न करे सहाई ॥
शरम खोलकर तुमसे मैं कहूं सुनि चाचा २ मेरे।
तू विपता में रे करे सहाई ॥
मोय मिलादे राँजे मरद से सुनि चाचा २ मेरे।
खत पहुँचायदे रे हजारे माँही ॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

गुन नही भूलूं मैं अब आपका सुनि चाचा २ मेरे ।
मोय २ करि रही रे छोछक जाई ॥

(चाल)

बोलौ फक्कड अर्जगुजारे अर्ज गुजारूं बेटी तेरे माही ।
लिखदे चिट्ठी अपने हाथ से खत राँजे पे देइ पहुचाइ ।
इतने बचन सुने फक्कड के खुश है गयी हीरे बाई ।
दवात कलम कागज लैलियौ लिख रही छोछक जाइ ।
सिद्ध श्री नारायण लिखदये पटमल लिख दीयौ भाइ ॥
शहर सिहालो लिखौ हीरे ने छोछक पिता लिखो बाइ ।
गाँम लिख दयौ तखत हजारौ नाम लिखौ राँझौहरबाइ।
बायदा कीयो मोसे स्वपन में परदेशी क्यों विसराइ ।
गंगा धरम उठाय गयौ मोते त्रिवाचा भरि गयौ आइ ।
जिवत होय तो दरशदिखइयो मर को परेखोदुनियावाइ
जो संग झूंठ हमारे बोलौ तो किन में तू जाइ ॥
जिन्हों होय तो दरशन दीजो धरम तजदियो दुखदाइ ।
दसखत हीरे ने अपने करिदये मौहरसिहालेकी चिपटाइ
लिखकर खत फक्कड को दे दयौ हाथ जोडकर फरमाइ
जइयौ जाचा तू जल्दी से खबर देइ जल्दी लाइ ॥
जो तू देर करेगौ मारग में मरी मिलेगी छोछक जाइ ।

(तर्ज बारहमासी)

चलौ जा चाचा फक्कड है ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मति रस्ता में कहूं वैठि जाय करि के मक्कड है।
मोय मालूम तेरें दगा की।
जल्दी दीजौ खबर कसम तोय श्री गंगा की॥
चचा दल्दी २ जइयो।
ढहरन में मिल जाय संग अपने लेके अइयो॥
दिखइयौ जाकर तू चिठिया।
शहर सिहाले में तोबित मेरी मरि जायगी बिटिया।
धीर धरि रहि बेटी घर में।
राँझे को मैं संग लाऊंगो थोडे अवसर में।
काम करनौ है अब तेरो।
खानपान को इन्तजाम करि दे तू बेटी पूरो॥
काम नहीं करूँ मधूरा है।
असवारी को दै २ बेटी भैंसा भूरा है॥
करीना जरा अवारी है।
इन्तजाम करि दयौ दयो भैंसा असवारी है।
चलौ फक्कड हरषायौ है।
रात दिना को धावा करि दयौ करी सफायी है।
दौर कर तो जाय शहरन की।
तरात हजारें गयौ पहुंच सुरत जाने धरि ढहरनकी।
फक्कड बडौ जलया है।
पहुँचौ राँझे पास चाराय रहौ ढहरन गयया है।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

ग्वनारिया फक्कड को पाया।
राँझे पै लयो पूछ पतो फिर आगे को धायो।
छाती फक्कड की धक्की॥
भैंसा दयौ बढाय सूति लै लीनी बरगद की।
देखि कर फक्कड भयो राजी॥
राँझे मदद की बंशी उस दिन बरगद पै बाजी।
तले बरगद के आयौ है॥
तुरत जेब से काढि के खत राँझु को पकरायी है।

कबित्त

चिट्ठी को खोली राँझो पढ़न लगौ हरषाय।
तख्त हजारो जाय लिखौ खत में पायौ है॥३॥
शहर सिहालो लियौ हीरे लिखो छोछक जाई।
स्वप्न में वायदा करिके फेर क्यों न आयो है॥२॥
भूलि गयौ निरमोही तीन वार कसम खाई।
लौट २ गंगाधरम रात में उठायौ है॥ ३॥
गजाधर कहत याद सपने की आप करौ।
जो न आयौ आप समझू कसाई को गाय है॥४

धुनी

राझु ने फिर करी सफाई, गयो खिरकन में
पहूंच घोडी जाने लीली है सजायी। चनुआ भती जों
पडौ संग रहौ राँझो समझायी। मानत नाहें कही।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मुश्क बाँधकर जब चनुआ की बग्गद पै लटकाय दई ॥
तख्त हजारे से राँझो चलि दीयो । बिशाल कोट गयो आय कुमर ने बिलमुन कीयो । भैंसा फक्कड़ ने दयो है बढ़ाय । बिशाल कोट पिछारी छोड़ो आगे की लई सुरत लगाय ॥

[रंगत]

यहां की बातें यहाँ रही सरदारौ २ सुनिये ।
अग्र हाल तो रे रहौ सुनाई ॥
बिशाल कोट के जाय रहे ढहर में सरदारौ २ सुनिये ।
मरी मवेशी रे कुमर को पाई ।
रुधन मचावे सबरे ग्वाग्यिा सरदारौ २ सुनिये ।
राँझे मरद ने रे लये पास बुलाई ॥
कैसे मवेशी तुम्हारी मरि गई सरदारौ २ सुनिये ।
ठीक २ तो रे देउ बताई ॥
सुनि कर इतनी कहि रहे ग्वारिया बरदेशी २ भैया ।
हाल जिगर का रे कहा ना जाई ॥
सारी मवेशी मरि गई शहर की परदेशी २ भैया ।
काल बली तो रे गयो इने खाई ॥
कहा रोग तो पहले है गयौ सरदारौ २ सुनिए ।
सब हमको देना रे भेद बताई ॥
रोय स्वान जो नीचो मुख कीयो सरदारौ २ सुनिए ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बात इसी का रे अचरज भाई ॥
समझ बात लई रौंझे बीर ने सरदारौ २ सुनिए ।
लीने अपने रे बीर मनाई ॥
है गयौ ठाड़ो गुरु का धरि ध्यान सरदारौ २ सुनिए ।
सब बीमारी रे मवेशी में आई ॥
स्वान का रूप बीमारी ने धरौ सरदारौ २ सुनिए ।
रौंझौ मरद तो रे करत लखाई ॥
छोड़ बीर दीए रौंझे मरद ने सरदारौ २ सुनिए ।
फौरन लीनो रे स्वान दबाई ॥
बीमारी तो नसनस करि दई सरदारौ २ सुनिए ।
अपनी दीनी रे आन लगाई ॥
रौंझो फक्कड़ दोनों चलि दए सरदारौ २ सुनिए ।
धंधल नदिया पै गए हैं आई ॥
लड़की पाई पहले मिसुर की सरदारौ २ सुनिए ।
रौंझे मरद ने रे गिरा सुनाई ॥
रुधन मचाय रही ब्राह्मण की सुता सरदारौ २ सुनिए ।
कैसे रोवे रे बताय दै बाई ॥
बचन सुने हैं रौंझे मरद के सरदारौ २ सुनिए ।
रोय २ लड़की ने अरज सुनाई ॥
मरी मवेशी सारे नगर की परदेशी २ भैया ।
बीमारी रही है रे जोर लगाई ॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

ठीक मनोशी रांझे ने करी सदारौ सुनिए ।
ब्राह्मण की लई रे बहिन बनाई ॥
फक्कड राँझौ दोनों चाल दए सरदारौ २ सुनिए ।
नदिया पै पाई मलहा जाई ॥
नाव डारि देउ जल्दी आयके मल्हा की बेटी ।
पल्ली पार तो रे देउ पहुँचाई ॥

[लहर]

सुनिके बचन राँझो के बेटी कह रही मलहा जाई रे ।
नाम गांम परदेशी बतायदे पास हमारे आई रे ।
इतने वचन सुने रांझे ने कहन लगौ फरमाई रे ।
तखत हजारो गाँम नाम है राँझो मलहा जाई रे ।
शहर सिहाले को जाय रहे जहाँ हीरे हुरम बताई रे ।
सुनिकर बचन झुसकाय गई है बेटी मलहा जाई रे ।
तेरे कारण राँझे मैंने जौ गंगा में बै आई रे ।

धुनि—हीरे के मति पड़े पिछारी, जायगी तोकूँ खाय समझा ले नागिन कारी ॥ हीरे ही समझ ले मोय करिके ब्याह संग ले चलियो राम करे सोहोय वायदा करिके मलहा की बेटी से रांझो शहर सिहाले चलि दयो ॥ फक्कड को भैंसा चलत अगारी । ताके रांझौ चले पिछारी ॥ करी मुहीम । कौन बढावे जंजारच को दाबी है शहर सिहाले की सीम । सीम दबाई रांझे

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मरदने फक्कड शहर सिहाले को चल दयौ ॥

चाल-यहां की बातें अब यहां छोडी आगे की सुनोचित लाई । कर २ याद वा रांझे मरद की नदिया रोवे मन्हा जाइ । मंगा धरम मठाय मयौ मोते कब आवेगो दुखदाई ॥ इतमें बेटी रोय रही है मिसुर की रांझे के रहे गुणगाई । मरी मवेशी ठीक करि गयो बहिन बना कर बिसराई ॥ चनू भतीजो वरगद पै रोवे उलटो आयो वाय लटकाइ ॥ घोड़ी रोय रही है खिरकन में याद रही है राँझे की आई ॥ मात पिता रोवे तख्त हजारे छऊँ रोमें जाकौ भौजाई ॥ राँझो रोय रहौ है जंगल में याद रही घर की आई । परदेशन में कोई नाहें अपनो दरश दिखाय जा छोछक जाई ॥ शहर सिहालो रांझे को चमक रहौ किले पै झडी फैराई ॥ मारग चले सोच रहौ मन में नैन न में रहौ जलछाई । सुरत लगाय लयी राँझे मरद ने बाग के ढिंग पहुँचो जाई ॥ भारी याद करे हीरे की खान पान दयौ बिसराई । शाम भई दिन गयौ है प्रदिन पै अपनो कोई दीखत नाई ॥

रङ्गत-जातन लागी बोही बन जामता सरदारौ सुनिये ।
अब को जाने रे पीर पराइ ॥
प्रेम जाल में राँझो फसि गयौ सरदारौ२ सुनिये ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मनमैं सोचे रे बहुत पछताई ॥
रांझो रोय रहौ जंगल में खडो सरदारौ २ सुनिये ।
हीरे रोवे रे सिहाले माही ॥
सोच समझ कर राँझो चलि दयौ सरदारौ २ सुनिये ।
आगे बढि गयौ रे बाग़ के मांही ।
रन अन्धेरी घूकि रही सरदारौ २ सुनिये ।
हाथे हाथ रे रखे नहीं भाई ॥
मरदन कोई जंगल में रखे सरदारौ २ सुनिये ।
राँजो मन में रे रहौ घबडाई ॥
घतने हीरे से फक्कड कहि रहौ सरदारौ २ सुनिबे ।
रांझो आवेगो सिहाले माँही ॥
धीरज धारौ बेटी जिगर में सुनि दुहिता २ मेरी ।
गगा धरम तो रे गयौ मोते उठाई ॥

धुनि–राझो रोय रहौ जंगल में, इत हीरे रोवत महल न में । भारी रही रुधन मचाय । मो दुखिया को साहिवा कब दर्शन देगे आय ॥ तोडि पिछारी घोडी चलि दयी राँझे वारी । नदिया पै गयी आय जहां मलहा की दुलारी ॥ मलहा की कहत सिहाय । कौन की घोडी तू कहाँ ते आयी बिन असवार रही तू कहां को जाय ॥ पंच सुनो चिसलाय । रांझे हीरे घोडी को मिलायो अब अगिले भाग में मिलजाय ॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सचित्र रेडियो एण्ड ट्रांजिस्टर गाइड

इस नवीन पुस्तक में नये २ ट्रांजिस्टर बनाना, इसमें होने वाली प्रत्येक खराबियों को पहचानना, उनकी मरम्मत करने की विधि, यानी ट्रांजिस्टर के सर्किटों के नक्शे व प्रत्येक पुर्जों का ज्ञान अच्छी तरह से समझाया गया है। जरा-जरासी खराबी के लिए ट्रांजिस्टर मेकेनिक पर जाना पड़ता है। अब इस पुस्तक को मंगाने के बाद आपको कहीं भी जाने की आवश्यकता नहीं है। इस पुस्तक में मय चित्रों के सारी बातें समझाई गई हैं। जिससे एक साधारण मनुष्य भी रेडियो का काम सीख सके फिर भी की० ५) डा० ख० १/५० अलग।

सचित्र रेडियो संसार

रेडियो स्टेशन पर किस तरह से एक्टर बोल जाते हैं व मशीनें आवाज कैच करके किस तरह आपके पास तक पहुंचाती हैं, गाते हुए एक्टर व मशीनरियों के फोटो सहित पुस्तक का मूल्य ८) डा० ख० १/५०

पता—दीपचन्द बुकसेलर नयागंज हाथरस यू० पी०

कौतुक रत्न भण्डार

असली पुराने छापे का

सचित्र बड़ा इन्द्रजाल

सोचते क्या हो अगर आपको अपनी सभी कठिनाइयां दूर कर मनचाहा काम करना है तो असली हस्तलिखित पुराने छापे का बड़ा इन्द्रजाल, जिसमें यन्त्र मन्त्र तन्त्र द्वारा मनचाही स्त्री-मर्द को वश में करना, जमीन में गड़ा हुआ धन दिखाई देना, बांझ स्त्री के सन्तान पैदा होना, गुमशुदा चीज का पता लगाना, सर्प और बीछू का बिष उतारना, भूत प्रेत को वश में करना, मुकद्दमे में विजय पाना, सब के सामने अन्तरध्यान होना, बिना दीपक के उजाला होना, मनुष्य को भेड़ा बनाना, जल में पत्थर तैरना, कटे सर से बातचीत करना, बीसा यन्त्र, भैरों, महाकाली, दुर्गा के यन्त्र मन्त्र तथा टोटकों द्वारा बीमारियों का इलाज व बहुत से चित्र दिए हैं, फिर भी मू० ४) डा. ख. १.५०

पता—दीपचन्द बुकसेलर, नयागंज हाथरस, उ० प्र०।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

असली हीर रांझा

गुरु गोरख की झांकी

उर्फ

राँझे का विलाप

दोहा—विघ्न हरण मङ्गल करन; सकल संभारन काज ।
आज गजाधरसिंह को; रखि दङ्गल में लाज ॥

भेट—तुही घट २ जानन हार, तूही करता है बेड़ा पार ।
तूही पंडा तूही पुजारी; तूही मिरगा तूही शिकारी ।
तो.-तूही तीर तूही तलवार, तूही करता है बेडा पार ।
तूही बाज है तूही चिड़िया, तूही बकरो तूही भिडिया
तो.-तूही ऊजड तूही गुलजार, तूही करता है० ॥ २
तूही पृथ्वी तूही पाताल, तूही अमर तूही काल ।
तो.-तूही अन्न तूही आहार । तू ही करता है० ॥ ३
तूही अग्नि तूही जल है, तूही पवन तूही अचल है ।
तो.-तूही राजा तूही दरबार । तूही करता है० ॥ ४
तूही नाँचे तूही गावे, तूही सुनता तूही सुनावे ।
तो.-तूही रूप तूही सिंगार । तूहीं करता है० ॥ ५
तूही बोले तूही डोले, तूही खोले तूही तोले ।
तो.-तूही कङ्गाल तूही साहूकार तूही करता है० ॥ ६
तूही बिजेन्द्र तूही जजेन्द्र, तूही बाहर तूही अन्दर ।
तो.-तूही गजाधर तूही कबिसार । तूही करता है० । ७

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

वार्ता—प्यारे सज्जनो ! राँझा हीरे तख्तहजारे में अपने माता पिता से मिलकर दोनों वापिस चल दिए। नगर निवासियों ने और उसके माता पिता ने कुटुम्ब ने राँझे हीर को समझाया और राँझे हीर ने किसी की नहीं मानी। हटपूर्वक नगर को छोड़कर चल दिए। जङ्गल में भ्रमण करते हुए गुरु गोरखनाथ की झाँकी करने जा रहे हैं।

* चाल *

पहले सुमिरू जगदम्बा को गुरु चरनन रहौ शिरनाई।
लिखूं लेखनी अब राँझे की मित्रो सुनि लेउ चितलाई।
शुद्ध लेखनी चले हमारी महर करिगे रघुराई।
यहाँ की बातें अब यहाँ छोडी राँझे की कहूं कविताई।
जङ्गल की सुरत लगाइ लई राँझे ने तख्तहजारौ विसराई
मातपिता जाने रोवत छोड़े रोवत छोडीं छैऊ भौजाई।
नगर निवासी सबही रोमें रोय रहे जाके भाई।
चनुआ मतीजौ रुधन मचावे छोड चले चाचा दुखदाई।
बिन चाचा के सब जग सूनो खानपान दियौ बिसराई।
फटिजाय धरणि समाय जाऊं जामें याद चचाकी रहो आई
समझाये से मानत नाहैं समझाय रहों चाची ताई॥
रङ्गत—यहाँ की बातें अब तो यहाँ रहीं सरदारो सुनिए आगे हाल तो रे रहे सुनाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हीरे राँझे दोनों चलि दए सरदारो सुनिए
नगर की दई रे सुधि बिसराई।
रात दिना कौ धावा करि रहे सरदारो सुनिए
खान पान तो रे छोड दयौ भाई।
जा तन लागी वो तन जानता सरदारो सुनिए
को अब जाने रे पीर पराई।
हीरे कहि ग्ही राँझे मरद से सुनि साजन मेरे
बन २ डोले रे मुसीबत पाई।
तख्त हजारे लेकर सोइ गए सुनि साजन मेरे
तुमसे सेतो रे लडी भौजाई।
रहन न दिए हम तुम नगर में सुनि साजन मेरे
काऊ दिन रोटी रे न सुख से खाई।
रुधन मचावे हीरे बिपन में सरदारो सुनिए
राँझौ बीर तो रे रहौ समझाई।
जो लिख दीनी बिध ने भाग्य में सुनि प्यारो मेरी
मिटती नहीं है रे देखि मिटाई।

* रागिनी *

मति पजितावे रुधन मचावे दिल में धीरज धारौ।
जो लिख दिया भाग्य में विधि ने कोई न मेंटन हारौ।
क०—विपता परिगई हरिश्चन्द्र पे काशी बिके विचारे।
राजा रानी बिके साथ में रोहित प्रानन प्यारे।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

जाय चाकरी करी सुपच की सङ्कट टरे न टारे।
राजा बने भाग्य के बल से मरघट के रखवारे।
टो.–लियौ नागने खाय कुमर जब करको हाथ परारौ।
क०–परी मुसीवत रामचन्द्र पे बन में दिए पठाई।
परी आनकर सीताजी पे रावण आय चुराई।
लक्ष्मण जी पे परी आनकर शक्ती बनि दुखदाई।
हनूमान पे परी भरत ने दियौ वान चलाई॥
टो.–परी मुसीवत मोरध्वज पर सुतपे खींचौ आरौ।
क०-आन मुसीबत परी ध्रुवपे बनको दियौ पठाई।
परी कठिन प्रहलाद भक्त पें दीयौ खम्भ बँधवाई।
द्रोपती पे परिगई आन जब चीर गहौ खल आई
आइ परिगई पन्डन पे दियौ महाभारत रचवाई॥
टो.-कीचक पे जब आन परिगई भीम ने धरनि पछारौ
क –करौ तसल्ली धीरज धारौ लाज रखें हरि तेरी।
लीनो खबर आइ गिरधारी जब मंझारी टेरी।
गज की टेर सुनो जब आकर ग्राह करी अंधेरी।
गजाधर कहे लाज तेरी राखें आकर श्याम सबेरी।
टो.-बिजेन्द्र कहै अजेन्द्र गावे गाँव फतेहपुर वारौ। ४

* तर्ज बारहमासी *

धीर धरि प्यारा तू मनमें। लिखा भाग्य का मिटे न डोलनों लिख दयी बनर में। रहौ हीरे को समझाई,

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

क्यों करती है रुधन धीर धरि तू छोछक जाई। कहन अब मानों मेरो है। इसी जगह जाउ बैठि रैन अब झुकी अंधेरी है। लई वन्शी राँझे ने कर में। रघुबर कौ धरि ध्यान बजाय दूई बन्शो बेहड़ में॥ लेउ सुधि मेरी गिरधारी। कहाँ पर कीना देर सोय गए क्यों मेरो बारी॥ मो पर क्यों संकट डारौ। राँझे की सुनि टेर सिंहासन विश्नु कौ हालौ। कही मुख से आरत बानी। करी न पल की देर बुलाय लिये नारद सुज्ञानी। जल्द तुम मंझलोक जाओ। पड़ी भक्तपै भीर देखिके ह ाको बतलाओ॥

रङ्गत—इतनी सुनकर नारद चलि दिए सरदारो सुनिए मंझलोक की रे सुरत लगाई।

विप्र रूप तौ नारद धरि लयौ सरदारो सुनिए हाथ लकुटिया रे तुरत उठाई।

मंझलोक में नारद आइ गए सरदारौ सुनिए भ्रमण करि रहे रे चहुंदिश माई।

चारौ तरफ तो देख मुनि खड़े सरदारौ सुनिए राँझौ मरदू ता रे परौ लखाई।

आइ अगारी नारद जी गये सरदारौ सुनिए राँझे मरदु को रे रहे समझाई।

कहा मुशीबत तोपे परि गई सुनि राँझे बेटा क्यों तू भारो रे रुधन मचाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

कौन देश में तू बासा करे सुनि बच्चा मेरी
कैसे यहाँ पर रे गयौ है आई।
नाम गाम तौ बतलायदे सुनि बच्चा मेरी
क्यों तू रोवै रे रुधन मचाई।

* लहर *

इतने बचन सुने राँझे ने चरन गिरौ भहराई रे।
धन्य २ हैं भाग्य हमारे दरशन दिए तुम आई रे।
तख्त हजारौ गाम हमारौ स्वामी रहौ बतलाई रे।
अमीचन्द है पिता हमारौ सत्य कहूं समझाई रे।
इसका नाम बताऊं मैं हीरे बेटी छोड़क जाई रे।
मेरे सङ्ग में भारो स्वामी रही मुसीबत पाई रे।
गुरु गोरख क हमको स्वामी दरशन देउ कराई रे।
इस बनखड़ के बीच नाथ मोपे भारी परी तबाई रे।
कोई न जग में अपनों दीखे तुमही करौ सहाई रे।
रुधन मचाय रहौ राँझौ नैनन से रहौ जल बरसाई रे।
मति घबराय धीर धरि बेटा नारद रहे समझाई रे।
गुरु गोरख की झाँकी बेटा तोकूं देउं कराई रे।
धरि दयौ हाथ खुशी रहि बेटा तोइ देउं गैल बताई रे

धुनि—राँझौ खुश है गयौ दिल भारी। है गयौ अन्तरध्यान कुमर ब्रह्मा कौ औतारी। राँझे को रस्ता गयौ बताय। विश्नुलोक में नारद पहुँचे सब दोनौ है

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रे कथा सुनाय। राँझे हीरे बिकट बनी में स्वामी याद तुम्हारी करि रहे। सत्य रहौ मैं मुख से भाँकी। हीरे राँझे बिकट बनी में गोरख की करिवे आए झाँकी। सुनि लेउ ध्यान लगाय। बिकट बनी के बीच में उनको आयौ हूं रस्ता बताय। हीरे राँझे बिकट बनी में झाँकी गोरख की करिबे जाइ रहे॥

कहरवा—चलि दये हीरे राँझे अपने जिगर में हरसाय। पहुँच गये घाटगढ़ पै रैन अँधेरी रही छाय। रहे जङ्गल में चीते शेर बघरा गस्त लगाय। बीर राँझे ने अपनी बन्शी लई हाथ उठाय॥ बजाय दई बन्शी बनमें विश्नु को ध्यान लगाय। शेष की बाँमी वहाँ पर खबर नाग को परि जाय। सोइ गए हीरे राँझे निद्रा भारी गई है आय। शेष को बेटा तक्षक बाँमी से चलौहै रिस्याय। सोइरहे राँझे हीरे देखत नैननिघाय। हमारी आय घाटी पै डेरा जाने दीए हैं लगाय॥ क्रोध करि भारी मनमें हीरे हुस्म लई जाने खाय। डसि हीरे चलि दयौ दुशमन बामी में धसि जाय॥

* तर्ज बारहमासी *

शेश कुवर हीरे को डसि बामी में धायौ है। जहर गयौ तन फैल नशा हीरे को छायौ है। नशा में सोइ रही हीरे तन में फैलो जहर झाग जिय पटकि रही

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पीरे। उठौ रांझौ बलदाई है। हीरे को रहौ जगाय जगे नहीं छोछक जाई है। मधुर मुख से बानी बोले। धरे नांक पै हाथ फेरि जिय नैनन को खोले सोइ गई त सुकमारी है। क्यों नहीं मुख से बोलो मेरी प्रांनन प्यारी है। करी मैंने तेरी राखी। तेरे पीछे हीरे मैं बनि डोलौ बाबाजी। बजि दयौ रूत हजारी है। छोड़ि कुटुम्ब परिवार कियौ तेरौ लीयौ सहारौ है॥ रुधन करि धरणी सिह मारे। देखि २ हीरे को नैनन से आंसू डारे॥

धनि—कोई न अपनों पड़त लखाई। बिकट बनो मैं रहौ रुधन मचाई। लेउ खबर मेरी रघुराई। तुम बिन अब को करे सहाई॥ दरशन दे जाओ मोय। लाश धरी हीरे की अगारी रहौ बिकट बनी में रॉझौ रोय। गुरु गोरख कौ ध्यान लगायौ। वायक वानी भई वीर का बचन सुनायौ। क्यों रहौ रुधन मचाय। हीरे हुरम छोछक की जाई को गयौ शेश कुमर जी खाय॥ सत्य २ मुख से रहौ भांकी। धरिले धीर जिगर में लाला गुरू गोरख को होइ तोइ झाँकी॥ धोग्ज फेरि कुमर को आयौ। गुरू गोरख से ध्यान लगायौ। लीनी लाश उठाय। हीरे हुरम कन्धा पे धरि लई गयौ गोरख टीले पैं आय॥

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

* रागिनी *

हीरे हुरम की न्हास धरि दई गोरख टीले जाके।
गुरु गोरख के चरण पकड़ लये खेउ नाथ अपनाके॥
क.-छोड कुटुम्ब परिवार नाथ मैं दरशन करने आया।
हीरे हुरम छोछक जाई को साथ आपने लाया।
बिकट बनी में भटकत डोला भारी कष्ट उठाया।
तो.-कीजे नजर महर का स्वामी दास कहै समझाके।
क.-हँसकर कही गुरु गोरखने क्या दिल चिन्ता छाई।
केसे हुआ हिराश कुमर तू दे मोकूं बतलाई।
बन भटकत फिरे अकेला क्यों तकलीफ उठाई।
दिली हाल सब कहिदे मुझसे क्यों रहौ कुमर छिपाई
तो.-हाथ जोड़कर राँझा बोला चरनन शीश नवाके॥२
क.-हीरे हुरम नाग ने खाइ लई बेटी छोछक जाई।
करौ महर की नजर नाथ तुम इसको देउ बचाई।
चाटीगढ़ पे स्वामी इसको नाग गयौ है खाई।
हाथ फिरायौ गुरु गोरख ने हाल जहर हटजाई।
तो.-हारे बैठी भई एकदम मनमें बहुत सिहाके॥ ३
क.-धरि दयौ हाथ खुशी रहि बेटा मति दिलमें घबराओ
लेकर साथ आपने हीरे तख्त हजारे जाओ।
पिता मात की सेवा करना अपना जन्म बिताओ।
बिजेन्द्रसिंह अजेन्द्र से कहैं नई रागिना गाओ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दो.-चक्राधरसिंह फतेहउँर वारे सबको रहे सुनाके ॥ ४

रङ्गत-यहाँ की चरचा अब तो यहाँ रही सरदारो सुनिए
अब आगे की रे रहे सुनाई।

गुरु गोरख ने रांझे से कही सुनि चेला मेरे
अब तू जाना रे हजारे माही।

मारो २ अब तू क्यों फिरे सुनि चेला मेरे
बन २ डोले रे मुसीबत पाई।

क्या सुख पायो तेरे सङ्ग में सुनि चेला मेरे
सहे मसीबत रे हीरेबाई।

शेर बघर्रा डोलें विपन में सुनि चेला मेरे
जायगौ कोई रे दुष्ट तुम्हें खाई॥

मात पिता की सेवा तुम करौ सुनि चेला मेरे
इसी बात में रे होइ भलाई॥

इतनी सुनकर रांझो रोइ रहौ सुनि बाबा मेरे
चरण पकड़ के रे रहौ डकराई।

शरण लई हैं मैंने आपकी सुनि बाबा मेरे
चाहे तुम मारो रे चाहें लेउ बचाई।

तख्त हजारे को हम पग ना धरें सुनि बाबा मेरे
शरण आपकी रे गए हम आई।

पांय न हरगिज दिंगे नगर में सुनि बाबा मेरे
तेरे नाम पै रे भसम रमाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

शरण लई है मैंने आपकी सुनि बाबा मेरे
अपना लेना रे मोइ शिष्य बनाई।
चरण गहि लये गोरखनाथ के सरदारो सुनिए
राँझो वीर तौ रे रहो रुधन मचाई।
राँझो रोवे हीरे रोय रही सरदारो सुनिए
गुरू गोरख तौ रे गए घबडाई।
हाथ धरो हैं गोरखनाथ ने सुनि चेला मेरे
क्यों तू भारी रे रहो रुधन मचाई।
जो तू मांगे सो ही दे सकूं सुनि चेला मेरे
मुख से कहना रे बचन फरमाई।

* चाल *

हाथ जोडकर राँझो बोलो सुनों गुरूजी चितलाई।
तख्त हजारे हरगिज स्वामी पाँय धरन को मैं नहीं॥
इतने बचन सुने गोरख ने राँझे से कहैं समझाई।
जो मांगे सो ही दुङ्गो क्यों चेला रहो घबड़ाई॥
मांगलो वरदान कुमर जा गोरख जी रहे हरषाई।
गुरू गोरख के बचन सुने हैं राँझो बोल रहो फरमाई।
धरि देउ हाथ शीश पे स्वामी अमर अङ्ग मेरो हैजाई।
बचन सुने खुश हैगयो गोरख धन्य २ राँझे बलदाई।
धरिदयो हाथ अमर करि काया जगमें काल तोइ नहीं खाई
हीरे हुरम ने गुरू गोरख के चरण पकड़ लिए भैराई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

राँझौ मरद अमर करि दीयौ रोय २ कहै छोछक जाई।
जो मांगू सो स्वामी देना शरण आपकी मैं आई॥
फटिजाय धरणि समाइजाऊं जामें ये चिन्ता दिलपे छाई
बचन सुने हैं गुरु गोरख ने मन सोचे और पछिताई।
यह जोडी करतार बनाई कैंसे दऊं जाय बिसराई।
ऐसी ठानि जिगर में बेटी क्यों ठानी हीरेबाई।
हीरे हुरम को गुरु गोरख बार २ रहें समझाई।
दियौ बरदान गुरु गोरख ने धरण समाई छोछक जाई।

* धुनि *

दै वरदान गुरूजी रोयौ। हीरे रांझे की यहां भयौ है बिछोयौ॥ कवि गजाधर लिखते हाल। हीरे से रांझे कौ होय मिलायौ रांझौ जायगौ पाताल॥

* इति *

घुरेलाल गुप्त द्वारा श्रीकृष्ण प्रेस हाथरस में मुद्रित

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

पशुओं का रोग दूर करने के लिए

असली हीर रांझा

हीर रांझे का अमर होना उर्फ देवलोक बास

बारहवां भाग

दोहा-नगर कोट बैकुण्ठ से. अइयो दुर्गे मात ।
दीन जान मो दीन की, लाज तुम्हारे हात ॥
भेंट-तू नगर कोट से आयजा मैया सिंह सजाय के ।
नलऊ के कारज तैने लखियाबन में कीने जायके ।
कली-दानैन से कीनी जङ्ग गांड़े लाई कटवाय ।
पिंगुल में मात तीने घर घर दिए बटवाय ॥
तोड़—शिव बरदानी दानों दीयी दरब जे चिबनाय के ।१
कली दास तो मनावे तोय मतना लगावे देर ।
जल्दी आओ मात तुम सिंह ऊपर पाखर गेर ।
कहत गजाधर मात पीतम्बर रह टेर ॥
तोड़=फतेपुर शुभ धाम बिजेन्द्र रहौ मनाय के ॥ २
चाल छोड़ मजिरनी अब देवनको रांझेकी रहौ गुणगाई
जङ्ग जीत के अब वासिक गे रांझे मन में हरषाई
सङ्ग सता लीनो मलङ्गा की ओर लोनी छोक्रक जाई
भेंट दई है वासिक नृप ने रांझे कमर को हरषाई
लेकर भेंट चलि दयौ रांझो मंझलोक में गयो आई

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

गुरु गोरख के ढिंग आइके चरण गहिरहो शिर नाई
करो महर की नजर दास पर स्वामी सुनों चितलाई
रङ्ग १—इतनी सुनकर गोरख कहि रहे सुनि रांझे लाला
कहा मुशीबत रे तेंने पाई।
एक दम ठाड़ों गोरख है गयो सुनि बीरन मेरे
चेला लियो रे कन्ठ लगाई।
क्यों रोवे तू अपनों सिर धुने सुनि चेला मेरे
धीरज धरो रे जिगर के माहो।
डिब्बा खोलो तुरत भभूत को सरदारो सुनिये
रांझे के मस्तक रे दई लगाइ।
अमर अङ्ग तो तेरो है गयो सुनि चेला मेरे
अमर भई। रे ये छोछक जाई।
चन्द्रकला तो अमर न है सके सुनि रांझे चेला
सत्य हाल तो रे मैं रही बताई।
जो मांगे सो मैं तोकूं दऊं सुनि चेला मेरे
मेरे कारण रे मुशीबत पाइ।
इतनी सुनकर रांझो कहि रहो सुनि बाबा मेरे
हाल जिगर को रे कही ना जाई।
सुख नहीं पायो हमने जनम से सुनि गोरख बाबा
ठोकर हमने रे दर दर खाई।
जा हीर के मैंने कारणे सबि गोरख बाबा
अपनों लीयो रे मूड़ मुड़ाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

मात पिता तो अपने छोड़के सुनि गोरख बाबा सङ्ग हमारे है रही रे छोछक जाई।

इतनी सुनि कर गोरख कहि रही सुनि रांझे बेटा अब मैं जाता हूँ रे सुन चितलाई।

ईतनी कहि के गोरख चल दयो सरदारो सुनिये गोरख टीले की रे सुरति लगाई।

कहि रहो राँझी हीर हुरम से सुनि प्यारी मेरी चन्द्रकला को रे आउ पहुंचाई।

बन बन डोले सङ्ग में भटकती सुनि हीरे प्यारी कठिन मुसीबत रे रही पाई।

तुम भी जाओ सिहाले कोट को सुनि हीरे प्यारी क्यों तू रही है रे कष्ट उठाई।

इतनी सुनि कर हारे कहि रही सुनि साजन मेरे क्या मन भ्यासो रे देउ बतलाई।

बारहमासी रोह गई छोछक की जाई। हालत देख हीर की फिर गहो राँझो समझाइ। हीर तकदीर मेरी खोटी। जब से लीयो जनम पेट भर खाई ना रोटी। जान मेरी रही कलेशन में। मारो २ डोली हीरे देश विदेशन में। ये बेटी मलहा का जाई। मेरे साथ में हीर रही है कष्ट अति पाई। कही जब चन्द्रकला बाबी। मात पिता को छोड़ आपको दे दई जिन्दगानी। तजि दिए मात पिता अपने। सङ्ग तुम्हारे में रहा कि उनके

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

दर्शन भए सपने । नाथ नेंक दिल में तरस करौ मात पिता के दरश करन नक्कुर में चरण धरौ । मात अपनी से मिल आऊं । रहूँ चार छः दिना चैन से मैं रोटी खाऊं । समझ रांझे की में आई । ले दोउन को सङ्ग चलि दयो रांझो बलदाई ॥

रङ्गत—चन्द्रकला और हीरे साथ मैं सरदारो सुनिए रांझो चल दयो रे बीर बलदाई ।

हाथ कमन्डल बनिरहो चीमठा रे सरदारो सुनिए कन्धा धरि लई रे लाल रजाई ।

रात चले अर दिन में चलतुहै रे सरदारो सुनिए झैलमगढ़ को र सुरति लगाई ।

झीलमगढ़ मैं दाखिल है गए रे सरदारो सुनिये शोभा देखो रे शहर की माई ।

सब नगर को तीनों छोड़ के रे सरदारो सुनिए महला के रे पहुँच गए जाई ।

दाखिल है गए भीतर महल में रे सरदारो सुनिये मिली मात से रे चन्द्रकलाई ।

चन्द्रकला तो रोय २ कहि रही सुनि माता मेरी मैं दुखिया ता रे जनी दुखदाई ।

सुख नहं पायो रांझे के साथ मैं सुनि मैया मेरी भरके पेट तो रे न रोटी खाई ।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

रामनी–ऐसे घड़ो की तबै जनमी मइया ने दुखियारी।
रांकी लिखी भाग्य मेरें में जनना जन्म भिखारी।
कली–हम रांझ के साथ गये और डोले मारे मारे।
लेकर पहुंचौ हम दोनों को मैया तखत हजारे।
उसकी लड़ो छैक भौजाई बुरी तरह फटकारे।
फेर गये नवसाल पती की वहांपर किये गुजारे।
तोड़–गांव में हम भटकत डोले कष्टसहे अति भारी।१
कली–कुछ दिन मैया हम तीनोंने वहां दयो समय बिताई
शीतल कोट पहुंच कर मैया रोग से करो लड़ाई
पशू बचये रोग नशाये ये इसमें चतुराई
जो कोई नाम लेइ रांझे को रोग नष्ट है जाई
तोड़-इसके नाम से चौपाओं में ना आवे बीमारी।२
ये फक्कड़ बन फिरे बनी में सङ्ग बनी हम चेलो।
जाके साथ कछू सुख नाहैं कठिन मुसीबत झली।
आशिक के घर चोरी है गई हीरे वहन नवेली।
मैं तो इसके साथ मात कई दिन रही अकेली।
तोड़=कठिन युद्ध भयो शेष नागसे लड़ेसङ्ग विपुरारी।३
ये तो अमर है गए दोनों मोकूं आवत कलके।
जाके कारण मैया मैंने लोटा ढारे जल के॥
कभी नहीं ये मर सकते हैं सम्मुख दानव दल के।
कहै गजाधर गांव फतेपुर घाटे सकल अकल के॥
तोड़–विजेन्द्र और अजेन्द्रसिंहकी अभी उमर है बारी।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

चाल=इतने बचन सुने बेटी के र'यगई है जाकी माई।
जा कुछ लिखा भाग्यमैं बेटी वो हरगिज मिटनी वाई।
नाहों करी तैने वा माता हट कर शादा करवाई।
जा फक्कड़ के हाथ सथ में कठिन मुशोबत तैं पाई।
माता कहो न तैने बेटी गाम २ डालत आई।
आय दिखायौ मुख अब तेने मी नहीं तू दुखदाई।
मटकत डोली तू दर २ पे मांग २ रोटो खाई।
अब तू कुमरि हमारे घर पे कहिदे कसे है आई।

रङ्गत-चन्द्रकला अब सुनिके कह रही सुनि मैया मेरी
अब मोय काहे को रही शरमाई।

एक दिना को याहो कारण सुनि जननी मेरी
तुमसे मिलवे को चला मैं आई।

साथ व कडूं रांझे मरद की सुनि जननी मेरी
विधि ने दीयौ रे संयोग बनाई।

यहां की चरचा अबतो यहाँ रहीहै सरदारी सुनिये
अब आगे का रे कहैं सुनाई।

साथ छोड़दे रांझे मरद को सुनि बेटो मेरी
घर पर रहना रे सुनौं चितलाई।

सुत वाहैं कोई मेरी गोदी में सुनि बेटी मेरी
तोते जीवन रे मेरी कटि जाई।

रांझे हीरे दोनौं जान दे सुनि बेटी मेरी
घर पर रहना रे सुनौं चितलाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

नाम अमर तौ जग में है पयौ सुनि प्यरी मेरी
रांझौ ब्याही रे वो मलहा की जाई।

बचन सुने हैं जाने मात के रे सरदारौ सुनिऐ
फिर जननी को रे अरज सुनाई।

दोष लगेगी तेरी कोख को सुनि मइया मेरी
सब नर नारी रे मोय दें य बुराई।

मैं तौ बैठूं अपने धरम से सुनि जननी मेरी
अपनों दूंगी रे जनम बिताई।

शरम लगत है मोकूं कहत में सुनि जननी मेरी
रांझें मरद को रे तू दे समझाई।

बचन सुने हैं इतमें धीय कि रे सरदारौ सुनिए
रांझो महलन लींयौ रे बुलाई।

चन्द्रकला की माता कहि रही सुनि लाला मेरे
अरज गरीबी रे सुन के नाहीं।

चन्द्रकला को छोड़ो कुछ दिना सुनि रांझें लाला
बहुत दिना में रे मेरे घर आई।

बन बन डोली लाड़ो भट तो सुनि लाला मेरे
सुख से रोटी रे न काऊ दिन खाई।

थोड़े दिन के इसको बाद में सुनि लाला मेरे
तुम ले जाना रे साथ लिनाई।

इतनी सुन कर रांझौ कहि रह्यौ सुनि माता मेरी
आप कहौ सो रे करूं मैं माई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

बेशक राखो अपनी कुम्वरि को सुनि मैंरी
मेरे हरगिज रे उजर है नाहीं।

अब हमको तो आज्ञा दीजिए सुनि माता मेरी
बहुत दिना तो रे दिए बिताई।

चन्द्रकला तो छोड़ी महल में रे सरदारो सुनिए
हीरे लीना रे साथ लगाई।

रांझो हीरे दोनों साथ में रे सरदारो सुनिए
विकट बनी को रे रहे जाई।

रात चले और दिन को चले रे सरदारो सुनिए
सुख से सोए रे न पलभर भाई।

विकट बनी में दोनों आइ गए रे सरदारो सुनिए
अपनी लीनी रे बिछाय रजाई।

पास बैठ गई हीरे हुरम है रे सरदारो सुनिए
जा बैठी है रे छाछक जाई।

कन्हा बीने रांझे मरद ने रे सरदारो सुनिए
धूनी चौरासी लई रे लगाई।

धूनी देकर तपिबे बैठ गयो रे सरदारो सुनिए
अग्नि मन्त्र से रे आग लगाई।

सङ्ग तपि रही हीरे हुरम है रे सरदारो सुनिए
जो बेटी है रे छोछक जाई।

खान पान तो दोनों ने तजो रे सरदारो सुनिए

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सब सुख छोड़ो रे रहे कष्ट उठाई।

शेर बघर्रा डोले विपत में रे सरदारा सुनिए
लखिकर नीची रे जाय नारि नबाई।

सत्त की रॉकी सत्त की हुरम है रे सरदारो सुनिए
इसके सत्त से रे धरा दहलाई।

आसन हिलगयो एकदम विष्णुको रे सरदारो सुनिए
लहर २ तो रे रहो लहराई।

नारद बेटा ब्रह्मा को बड़ो है रे सरदारो सुनिए
वो विष्णु ने रे लियो बुलवाई।

आय गयो है नारद विष्णु ढिग रे सरदारो सुनिए
चरनन में शिर तो रें रहो है नाई।

याद करी है मेरी किस कारण सुनि स्वामी मोरे
हाल जिगर को रे देउ बतलाई।

इतनी सुनकर विश्नू कहि रहे रें सुनि नारद मोरी
आसन मोरो रे रह्यो लहराई।

मत्र्यलोक को जल्दी जाउ तुम सुनि नारद ज्ञानी
भक्त हमारे कूं रें को रह्यो सताई।

खबर लायदे जल्दी जायके सुनि नारद ज्ञानी
दिल मोरे को रे धीर बँध जाई।

इतनी सुनकर नारद चलि दयो रे सरदारो सुनिए
भेष ता बुड्ढो को जायँ लोयो बनाई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

सटका ले लियो अपने हाथ में रे सरदारो सुनिए फिर यह गुटका रे गयी लगाई।

देव लोक से नारद चलि दयो रे सरदारो सुनिए मन्युलोक में रे गयो है आई।

बारहमासी—आइ गयो ब्राह्मण की लाला। सटका बनि रहो हाथ गले में पड़ी एक माला। डोल रह्यो झाड़ी २ में। रुखे न आंधी मोह रेत जाकी भरि गयो डाढ़ी में। कोई भक्त दुखी पायो जङ्गल और पहाड़ डोल ये सभी जगह आयो। मिलो कोई नाहें भक्त दुखी। चारो दिश में डोल आयो सब पाये सन्त सखी। फेरि निर्जन बन आयो है। हीरें को ले साथ तपत जाय रांझो पायो है। देखकर आई है हांसी। दुनियां के कौतुक कर बैठो धूनी चौरासी। सुनों मेरी रांझ बात सही। ठीक बतायदे मोय रांझ काहे की कसरि रही। मोइ भगवान पठायो है। सिंहासन ठाकुर को रांझे तेने हिलायो है। तपस्या पूरण भई तेरी। जो चाहे सो मिले कहन अब सत्य मान मेरी॥ रहो न जङ्गल खादर है। श्री ठाकुर के यहाँ होइ अब तेरो आदर है॥ खुट रांझे के नैन गए। नारद जी के रांझे ने फिर जाय चरण लए॥ करूना चरियत है मोकूं। करूं राम के दरश शीश मैं चरणन में धोकूं। दरश

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

को सही परेशानी। बिना दरश के नहीं न्टूं जाग्रो चाहे जिन्दगानी बहुत नारद ने समझायो। एक न मानी कहन लौट सुत विरमा को आयो ॥

रङ्गत–वचन सुने हैं रांझे मरद के रे सरदारो सुनिए नारद लौटी रे न देर लगाई।

मत्र्यलोक से नारद चलि दयो रे सरदारो सुनिए विश्नु लोक में रे गयो है आई।

पास विश्नु के नारद आइ गयो रे सरदारो सुनिए रॉझे मरद की रे कथा सुनाई।

निर्जन बन में रांझो तपि रहो सुनि स्वामी मेरे पास मैं बैठो रे वो छोड़क जाई।

समझायो है मैने कुमर को रे सुनि स्वामी मेरे मानत नाहैं रे रह्यो हठ आई।

दरश करन को बैठो आइके रे सुनि स्वामी मेरे कठिन मुशीवत रे रहा वो पाई।

जल्दी जाकर अब तुम देखना रे सुनि स्वामी मेरे पूरे बनि गए र वो बाबा बाई।

नारदजी के सुनकर वचन को रे सरदारो सुनिए विश्नु ने रे लायो गरुड़ मङ्गाई।

बैठ गरुड पे स्वामी चलि दए रे सरदारो सुनिए निर्जन बन मैं रे पहुँच गए आई।

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

हीरें राँझे जहां पे तब रहे रे सरदारो सुनिए
वहां पर पहुँचे रे आप रघुराई।

दर्शन दिये रांझे हीर को रे सरदारो सुनिए
दोउन आकर रे चरण गहे आई।

पूर्ण तपस्या तेरी है गई रे सुनि रांझे प्यारे
अब तुम जाना रे समाधि लगाई।

देवलोक को अब तुम जाओ सुनि रांझे प्यारे
जग में कीरत रे अमर है जाई।

इतनी कहकर विष्नू चलि दए रे सरदारो सुनिए
देवलोक में रें पहुँच गए आई।

यहाँ को बातें अबतो यहाँ रही रे सरदारो सुनिये
राँझे हीर ने रे समाध लगाई।

दोनों पहुँचे हैं स्वर्ग लोक में रे सरदारो सुनिये
कलम गजाधर की रे यहां ही रुक जाई।

धुनि-दिन की दूर भई भै। विदा भई अब वाहर
वारी बोली अटलछत्र दुरगे की जै।

* इति *

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

Sunday 2 October 1977
रवि. २ अक्टू. ७७ क्वार व. ५ स.२०
गांधी जयंती

Tuesday 27 September 1977
मंगल.२७सित.७७ भादों.सु.१४ स.२०३४

Thursday 13 October 1977
रु.१३ अक्टू. ७७ क्वार सु. १ स.२०३४
नवरात्रि प्रा०

riday 16 September 1977
शुक्.१६ सित. ७७ भादों सु. ३ स.२०३४
ईद, संक्रां.

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/

Monday 26 September 1977
सोम.२६ सित.७७ भादों सु.१४ स.२०३४
अनंत १४

Monday 3 October 1977
सोम. ३ अक्टू. ७७ क्वार व. ६ स.२०३४

Saturday 17 September 1977
शनि.१७ सित.७७ भादों सु. ४/५ स.२०३४

Wednesday 12 October 1977
बुध.१२ अक्टू.७७ क्वार व.३० स.२०३४
पितृ अमा०

Download Hindi Books: https://www.hindibook.in/